राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 294

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, बुधवार, 1 अप्रैल 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 14

रोहित शर्मा ने दान किए 80 लाख रुपये

>> 12

कोरोना मीटर

(स्रोत : वर्ल्डोमीटर्स डॉट इंफो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय)

	विश्व	अमेरिका	इटली	भारत	(25 मार्च)	दिल्ली
कुल केस	8,03,752	1,64,798	1,01,739	1545	552	120
मौतें	39,070	3,178	11,591	39	10	2
स्वस्थ हुए	1,72,435	5,507	14,620	102	24	5

भारत के प्रमुख राज्य

राज्य	केस	मौतें
केरल	241	1
महाराष्ट्र	302	8
कर्नाटक	98	3
उत्तर प्रदेश	104	0
तेलंगाना	77	1
गुजरात	73	6
राजस्थान	93	0
मध्य प्रदेश	66	5
अन्य	371	15

शाम 11 : 45 बजे तक

अन्य प्रमुख देश

देश	स्पेन	चीन	जर्मनी
केस	94,417	81,518	67,051
मौतें	8,189	3,305	682

नोट : कोरोना से प्रभावित लोगों के संदर्भ में आंकड़े उल्लिखित दो स्रोतों के अतिरिक्त जागरण न्यूज नेटवर्क के रूप में अन्य माध्यमों से भी लिए गए हैं। अत : तालिका तथा दैनिक जागरण के इस अंक में प्रकाशित सामग्री में आंकड़ों का अंतर संभव है।

वापस भेजे जाएंगे जमात में शामिल विदेशी, वीजा पर पाबंदी

संक्रमण के संवाहक ▶ गृह मंत्रालय का निर्देश, तब्लीगी सदस्यों को क्वारंटाइन कराएं

आयोजकों पर एफआइआर, शामिल लोगों की तलाश तेज

जेएनएन, नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने निजामुद्दीन के तब्लीगी जमात में शामिल विदेशियों के वीजा पर पाबंदी लगाने का एलान किया है। इसके साथ ही जमात के आयोजन में शामिल हुए सभी विदेशियों की तत्काल पहचान करने और कोरोना टेस्ट के बाद निगेटिव पाए जाने वालों को तत्काल वापस भेजने का आदेश दिया है। यह फैसला इस तथ्य के सामने आने के बाद लिया गया, जब पता चला कि एक जनवरी से अब तक 2100 विदेशी कार्यकर्ता भारत आए और देश के विभिन्न हिस्सों में तब्लीगी गतिविधियों को अंजाम दिया। इस बीच मंगलवार को दिल्ली पुलिस ने तब्लीगी मरकज के प्रमुख मौलाना साद और प्रबंधन से जुड़े लोगों के खिलाफ महामारी रोग अधिनियम की विभिन्न धाराओं और आपराधिक साजिश रचने की धारा में मुकदमा दर्ज कर लिया है। आरोप है कि इन लोगों ने कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम, उपचार और सुरक्षा उपायों की पूरी तरह से अनदेखी की, जबकि दिल्ली में जनता कर्फ्यू से पहले ही पांच से अधिक लोगों के एक स्थान पर एकत्र होने की मनाही थी।

गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों और पुलिस प्रमुखों को लिखे पत्र में कहा है कि वो तब्लीगी जमात के विदेशी सदस्यों को तत्काल ढूंढकर उन्हें क्वारंटाइन कराएं। जिनकी कोरोना रिपोर्ट निगेटिव आती है उन्हें पहली फ्लाइट से वापस उनके देश भेजें। केंद्र के निर्देश के बाद राज्यों में तब्लीगी जमात के विदेशी सदस्यों की तलाश तेज हो गई है। गृह मंत्रालय ने तब्लीगी जमात में शामिल होने के लिए आने वाले विदेशियों को अब टूरिस्ट वीजा नहीं जारी करने का फैसला भी किया है। मरकज में शामिल होने आए विदेशियों, जिसमें ज्यादातर धर्म उपदेशक हैं, उनके खिलाफ वीजा नियमों का उल्लंघन का केस भी चल सकता है। ये सभी टूरिस्ट वीजा लेकर भारत आए थे। जबकि धर्म का प्रचार करना वीजा नियमों का उल्लंघन है। दिल्ली नगर निगम ने भी मरकज की जांच शुरू कर दी है। इसमें इमारत को अनधिकृत रूप से बनाए जाने की बात सामने आई है। इसके बाद इमारत को सील किया जा सकता है।

लॉकडाउन के बाद भी जुटे लोग : तब्लीगी मरकज में पूरे साल आते रहते हैं। 12 से 15 मार्च के बीच यहां हुए कार्यक्रम में शामिल होने के बाद सैकड़ों लोग देश के विभिन्न राज्यों में गए। इसके बाद भी आने वालों का क्रम जारी रहा। इसी बीच 22 मार्च को हुए लॉकडाउन के बाद भी यहां सैकड़ों लोग जुटे हुए थे। इनमें सैकड़ों विदेशी भी थे। रविवार व सोमवार को यहां रुके 24 लोग कोरोना पॉजिटिव पाए गए। जमात में शामिल तेलंगाना निवासी 6 लोगों की सोमवार को कोरोना से मौत भी हो गई थी।

प्रबंधन ने कहा, लॉकडाउन से फंस गई थी जमात पेज>>4

- 1888 मरकज से निकाले गए लोग
- 441 में कोरोना के लक्षण मिले
- 1447 को क्वारंटाइन सेंटर भेजा गया
- 24 के संक्रमित होने की हुई पुष्टि
- 2100 विदेशी तब्लीगी कार्यकर्ता आए

साद ने मस्जिद में जमा होने के लिए लोगों को उकसाया

मोहम्मद साद। फाइल

जासं, नई दिल्ली : तब्लीगी मरकज दिल्ली के प्रमुख मौलाना मुहम्मद साद का आपत्तिजनक वीडियो व ऑडियो संदेश वायरल होने का मामला सामने आया है। मरकज के आधिकारिक यूट्यूब चैनल पर साद ने इन संदेशों में लोगों को कोरोना संक्रमण के दौरान सरकार की गाइडलाइन के खिलाफ मस्जिद में जमा होने के लिए उकसाया था।

किस राज्य से कितने शामिल

राज्य	शामिल हुए लोग
अंडमान	21
असम	216
बिहार	86
हरियाणा	192
हिमाचल	17
हैदराबाद	55
कर्नाटक	45
केरल	15
महाराष्ट्र	109
मेघालय	05
मध्य प्रदेश	107
ओडिशा	15
पंजाब	09
राजस्थान	19
झारखंड	46
तमिलनाडु	501
उत्तराखंड	34
उत्तर प्रदेश	156

यह है तब्लीगी जमात

तब्लीगी जमात सुन्नी मुसलमानों का एक ऐसा संगठन है जो चाहता है कि दुनिया भर के मुसलमान वैसे ही रहें जैसे कि वे पैगंबर साहेब के समय में रहते थे। यानी उनका खानपान, वेशभूषा और रीति-रिवाज सब कुछ उसी समय का हो। माना जाता है कि इस जमात के दुनिया भर में 20 करोड़ सदस्य हैं।

1927 में स्थापित इस संगठन का मजबूत गढ़ दक्षिण एशिया है, लेकिन करीब सौ से ज्यादा देशों में इसकी पहुंच बताई जाती है। इसकी स्थापना भारत के मेवात में मुहम्मद इल्यास अल कंधालवी ने की थी। तब्लीगी जमात के छह सिद्धांत हैं। कलमा, सलाह, इल्म ओ जिक्र, इकराम ओ मुस्लिम, इखलास ए नीयत और दावत ओ तब्लीगी। इसका मुख्यालय निजामुद्दीन क्षेत्र में है। इससे देश-विदेश के लोग जुड़े हैं। जमात के मुताबिक वह किसी सियासी विचारधारा का समर्थन नहीं करती क्योंकि उसका उद्देश्य धार्मिक है। यानी कुरान व हदीस की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार।

निश्चिंत रहें, पूरी तरह सुरक्षित है आपका अखबार

आप सब इससे अवगत ही होंगे कि प्रख्यात डॉक्टर, वैज्ञानिक, स्वास्थ्य विशेषज्ञ आदि बार-बार यह कह रहे हैं कि अखबारों से कोरोना वायरस के संक्रमण फैलने का कोई खतरा नहीं है। आप पूरी तरह निश्चिंत होने के लिए इस क्यूआर कोड को स्कैन करके खुद देख सकते हैं कि आपका प्रिय दैनिक जागरण समाचार पत्र कितने सुरक्षित तरीके से छपकर आपके हाथों में पहुंचता है। सतर्कता और सजगता की यह प्रक्रिया हम हर दिन-हर क्षण अपनाते हैं, क्योंकि आपकी तरह हम भी कोरोना को परास्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस प्रतिबद्धता को और प्रबल करने के लिए यह आवश्यक है कि आप समाचारों के सबसे विश्वसनीय स्रोत से जुड़े रहें। आपकी तरह हमें भी यह भरोसा है कि हम यह जंग जीतेंगे।

हेल्पलाइन नंबर

कोरोना से जुड़ी सही जानकारी देने के लिए भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वाट्सएप हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इन नंबरों को मोबाइल में सुरक्षित करके कोई भी प्रामाणिक सूचना पाई जा सकती है। कृपया नंबर दर्ज करके वाट्सएप पर सिर्फ नमस्कार का संदेश भेजें। तुरंत एक मेन्यू आएगा, जिसके अनुसार वांछित जानकारी ली जा सकती है।

who:+41 798931892

mygov : +9190131515515

बंगाल में एक और मौत, राज्य अब तक तीन लोगों की गई जान ● पेज 5

सरकार ने घर पर मास्क बनाने का तरीका बताया ● पेज 6

गिलोय का रस और काढ़ा पी रहे राज्यपाल लालजी टंडन ● पेज 7

सरोकार

दो रोटी जवानों के लिए और दो जरूरतमंदो के लिए

बुरहानपुर : मप्र के बुरहानपुर में आम लोगों ने प्रेरक पहल शुरू की है। सभी घरों में अतिरिक्त भोजन बनाया जा रहा है, जिसे जनसेवा में तैनात कर्मचारियों-अधिकारियों और जरूरतमंदों तक स्वयं पहुंचा रहे हैं। (पेज-13)

जागरण विशेष

कोरोना से लड़ने को बना रहे नए हथियार

नई दिल्ली : एक ओर जहां पूरा तंत्र कोरोना वायरस से लड़ने में दिन-रात एक किए हुए है, वहीं कुछ युवा नवोन्मेषी भी ऐसे कारगर उपकरण बनाने में जुटे हुए हैं जो संकट की इस घड़ी में काम आ सकें। (पेज-13)

सरकार ने कहा-डरें नहीं, काबू में रहेंगे हालात

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

तब्लीगी जमात की आपराधिक लापहरवाही के कारण कोरोना के मरीजों में अचानक बढ़ोतरी के बावजूद सरकार को भरोसा है कि वह कोरोना वायरस के कहर को थाम लेगी। सरकार ने कहा है कि नए मामलों को देखकर किसी तरह का अनुमान लगाना गलत होगा और उम्मीद है कि देश में विदेश जैसे हालात नहीं होंगे। कोरोना से निपटने के लिए नए अस्पतालों और स्वास्थ्य सुविधाओं के निर्माण से भी डरने की जरूरत नहीं है, ये भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए हैं।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के डॉक्टर रमन गंगाखेड़कर ने मंगलवार को कहा कि देश में कोरोना संक्रमण के भी जो भी मामले सामने आ रहे हैं, वे सभी लॉकडाउन से पहले के हैं। इसलिए इन मामलों के आधार पर किसी तरह का अनुमान लगाना ठीक नहीं होगा। कोरोना फैलने के लिए कई तरह के अनर्गल अनुमानों की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, 'इस समय सभी लोग गणनाकार बन गए हैं और यह बताने में जुटे हैं कि कोरोना का ट्रेंड किधर जाने वाला है, लेकिन ये लोग भूल रहे हैं कि कोरोना के लक्षण सामने आने में 14 दिन लग जाते हैं और अभी जो मामले सामने आ रहे हैं, वे लॉकडाउन के पहले के हैं। इसीलिए अभी ट्रेंड की बात करना सही नहीं है।' जब लॉकडाउन के पहले कोरोना वायरस से ग्रसित होने वालों के केस दिखने बंद हो जाएंगे, तभी पता चलेगा कि भारत में कोरोना का ट्रेंड क्या है। यह तय है कि यह दुनिया के उन देशों जैसे नहीं होंगे, जिन्होंने समय रहते कदम नहीं उठाए।

भविष्य की चुनौतियों के लिए नए अस्पताल : डॉक्टर गंगाखेड़कर की आशावादी सोच देश के लिए राहत की बात है। उन्होंने कहा कि लोगों को बड़े पैमाने पर कोरोना के लिए विशेष अस्पतालों के बनने और अन्य तैयारियों को देखकर डरने की जरूरत नहीं है। यह किसी भी स्थिति से निपटने के लिए है, लेकिन वैसी स्थिति देश में आने की आशंका बहुत ही कम है। उन्होंने यह भी कहा कि कोरोना के कारण ही सही देश में स्वास्थ्य संबंधी आधारभूत संरचना का निर्माण अच्छी बात है।

कुछ लोगों के असहयोग से समस्या बढ़ी : स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने भी आइसीएमआर के डॉक्टर रमन गंगाखेड़कर की बात का समर्थन किया। लव अग्रवाल ने कहा कि कुछ लोगों द्वारा कोरोना प्रभावित होने की जानकारी छिपाने से समस्या बढ़ी जरूर है, लेकिन उसे रोकने को सरकार पूरी तरह तैयार है। अभी चुनौती कोरोना के मरीजों का अंदाजा लगाने की नहीं, बल्कि इसे रोकने के लिए जारी दिशा-निर्देशों के पालन की है। भारत अकेला देश है जिसने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) से भी पहले इसके खतरे को भांप कर कदम उठाना शुरू कर दिया था। डब्ल्यूएचओ ने कोरोना को 31 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी घोषित किया था, लेकिन भारत ने उससे 13 दिन पहले ही इसे रोकने के कदम उठाने शुरू कर दिए थे।

स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने कोरोना की सैंपलिंग और टेस्टिंग रणनीति की समीक्षा की पेज>>3

जहां मामला मिला, वहीं हॉटस्पॉट पेज>>4

राहत की बात

- आइसीएमआर ने दिलाया भरोसा, बड़े पैमाने पर संक्रमण की आशंका नहीं
- कहा, नए मामले लॉकडाउन के पहले के, पांच-छह दिन में साफ होगी स्थिति
- अंतरराष्ट्रीय पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी घोषित किए जाने से पहले उठाए थे कदम

फेक न्यूज वालों पर होगी कार्रवाई, बनेगा पोर्टल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

लॉकडाउन के बाद शहर छोड़कर गांव की ओर भाग रहे प्रवासी मजदूरों और अन्य लोगों को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को आगाह किया है कि कोरोना वायरस के कारण लोगों का पलायन रोकें। इस संबंध में ताजा सूचनाओं के लिए एक पोर्टल बनाएं। हालांकि पलायन ने केंद्र सरकार को क्यों इतना सतर्क कर दिया इसका अंदाजा मंगलवार को सुप्रीमकोर्ट में उसके दिए गए जवाब से लगाया जा सकता है।

केंद्र सरकार की ओर से सुप्रीम कोर्ट में पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने एक तरफ जहां फेक न्यूज को बड़ी बाधा बताया वहीं यह भी कहा कि अगर पलायन करने वाले 10 में 3 लोग भी कोरोना के वाहक हुए तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्या होगा। इसीलिए आदेश दिया गया है कि जो जहां हैं वहीं क्वारंटाइन कर दिए जाएं। इस पर कोर्ट ने कहा है कि वायरस से ज्यादा लोगों की जान भय से चली जाएगी। इसलिए केंद्र सरकार से कहा है कि देश भर में शेल्टर होम में इन प्रवासियों को रखा जाए। जहां प्रवासी मजदूर और अन्य लोग रोके गए हैं वहां प्रशिक्षित काउंसलर या धार्मिक नेता भेजे जाएं जो प्रवासियों से बातचीत करके उनका भय कम करें। मेहता ने कहा, सरकार इस समय अभूतपूर्व स्थिति का सामना कर रही है और इसमें अभूतपूर्व आदेशों की ही जरूरत होती है। इस पर पीठ ने कहा, आइपीसी की धारा 188 है जिसमें सरकार के आदेश की अवहेलना पर दंड का प्रावधान है। सरकार उसे लागू कर सकती है। सोमवार को कोर्ट ने प्रवासी मजदूरों की समस्या उठाने वाली दो जनहित याचिकाओं पर केंद्र से स्थिति रिपोर्ट मांगी थी। मंगलवार को मुख्य न्यायाधीश एसए बोबडे और एल नागेश्वर राव की पीठ ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये मामले की अर्जेंट सुनवाई के बाद जहां प्रवासी मजदूरों और अन्य लोगों के खाने-पीने, रहने के इंतजाम आदि के निर्देश दिए। कोर्ट ने कहा, उनकी काउंसलिंग कराई जाए और वहां पुलिस के बजाए वालेंटियर तैनात किए जाएं, किसी पर बल का प्रयोग या धमकी न दी जाए। कोर्ट इस मामले में अगले मंगलवार फिर सुनवाई करेगा। वहीं फेक न्यूज से निपटने के लिए एक पोर्टल स्थापित करने की बात कही ताकि लोगों को कोरोना से संबंधित सूचना और जानकारियां उपलब्ध कराई जाएं।

तुषार मेहता ने कोर्ट में रिपोर्ट पेश करते हुए कहा, लॉकडाउन के दौरान किसी को भी बाहर रहने की इजाजत नहीं दी जा सकती। अभी तक गांवों में संक्रमण नहीं फैला है। इसीलिए जो जहां है उसे वहीं निकट के आश्रय स्थलों में रखा गया है और क्वारंटाइन किया जा रहा है। 6 लाख 63 हजार लोगों को आश्रय दिया गया है। लॉकडाउन के दौरान सरकार सभी की जरूरतों का ख्याल रख रही है। 22 लाख 88 हजार लोगों को भोजन, पानी व अन्य चीजें उपलब्ध कराई जा रही हैं।

28 लाख लोगों की एयरपोर्ट और सीपोर्ट पर हो चुकी स्क्रीनिंग पेज>>3

- सुप्रीम कोर्ट का केंद्र को निर्देश, प्रवासियों का पलायन रोकें
- कोर्ट ने कहा-काउंसलर भेजकर प्रवासियों का भय कम करें, सरकार आइपीसी की धारा 188 लागू करे
- सरकार ने 6 लाख 63 हजार लोगों को आश्रय दिया, 22 लाख 88 हजार को भोजन व जरूरी सुविधाएं दी जा रहीं

छोटी बचत योजनाओं को लगी बड़ी चोट

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : छोटी बचत योजनाओं में निवेशकों को बड़ा मायूसी हाथ लगी है। केंद्र सरकार ने इन योजनाओं पर देय ब्याज दरों मे भारी कटौती का एलान किया है। कुछ योजनाओं पर ब्याज दरों में 1.4 फीसद तक की कटौती की गई है जो हाल के वर्षों की सबसे बड़ी कटौती है। हालांकि बचत योजनाओं पर देय चार फीसद ब्याज दर में कोई बदलाव नहीं किया गया है। बैंकों की तरफ से इसमें कटौती की मांग की जा रही थी।

ब्याज की नई दर अप्रैल-जून, 2020 के लिए तय की गई है। एक से चार वर्ष की सावधि जमा योजना पर ब्याज दर को 6.9 फीसद से घटाकर 5.5 फीसद कर दिया गया है। पांच वर्षों की परिपक्वता अवधि वाली योजनाओं पर ब्याज दरों को 7.7 से घटाकर 6.7 फीसद कर दिया गया है।

भारत में 93 वर्षीय बुजुर्ग ने कोरोना को मात देकर जीती जिंदगी की जंग

पत्तनमथित्ता (केरल), प्रेट्र : आमतौर पर कोरोना वायरस को बुजुर्गों के लिए सबसे घातक माना जाता है। लेकिन केरल के एक वृद्ध ने इस धारणा को चुनौती दे दी है। 93 वर्षीय बुजुर्ग थामस अब्राहम कोरोना संक्रमण से ठीक होकर इस वैश्विक महामारी को मात देने वाले भारत के सबसे बूढ़े व्यक्ति बन गए हैं। यहां तक कि चिकित्सा क्षेत्र के लिए लोग इसे चमत्कार मान रहे हैं। अब्राहम का खानपान भी सीधा-सादा है। उन्हें साबूदाने के चिप्स, चावल का दलिया और कद्दू के स्नैक्स पसंद हैं।

थॉमस और उनकी पत्नी मरियम्मा (88) दोनों ही इस जानलेवा महामारी से जीवन-मृत्यु की लड़ाई लड़ने के बाद पूरी तरह से ठीक हो चुके हैं। यह संक्रमण इस बुजुर्ग दंपती को पिछले महीने इटली से लौटे अपने बेटे, बहू और पोते से हुआ था। यह तीनों भी अब इस बीमारी से उबर चुके हैं और अपने बुजुर्ग मौं-बाप की घरवापसी का इंतजार कर रहे हैं।

डॉक्टरों का कहना है कि इस दंपती को बुधवार को कोट्टयम मेडिकल कालेज से डिस्चार्ज किया जाएगा। यहां यह दंपती कई दिनों तक आइसीयू में रहे। उनके पोते रिजो मोंसी ने मजाकिया अंदाज में बताया कि पत्तनमथित्ता के रन्नी सब डिविजन के किसान बहुत ही सेहतमंद हैं। वह धूमपान नहीं करते और सादा जीवन जीते हैं। उन्होंने कहा कि इटली के मुकाबले केरल में उनके सुरक्षित रहने के ज्यादा चांस हैं।

मई के अंतिम हफ्ते में जेईई-मेन के आयोजन की तैयारी

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना संकट के चलते टाली गई इंजीनियरिंग कालेजों की संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) का आयोजन मई के अंतिम सप्ताह में कराया जा सकता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय की नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने मंगलवार को यह जानकारी दी। इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश के लिए यह परीक्षा होती है।

मंत्रालय ने कहा है कि परीक्षा की तारीख का एलान अगले कुछ सप्ताह में स्थिति का आकलन करने के बाद होगा। विभिन्न आइआइटी और एनआइटी में प्रवेश के लिए जेईई-मेन को प्राथमिक परीक्षा माना जाता है। पहले इसका आयोजन पांच से 11 अप्रैल के बीच होना था। मंत्रालय ने कहा कि परीक्षा के लिए एडमिट कार्ड 15 अप्रैल के बाद जारी किए जाने की उम्मीद है।

बड़ी राहत

आइजीआइबी ने तैयार की प्रेगनेंसी किट जैसी यूज एंड थ्रो पेपर किट, आइसीएमआर से मंजूरी के लिए भेजा, आम पैथोलॉजी में भी हो सकेगी जांच, 500 रुपये से भी कम लागत में तत्काल नतीजा जानना हो सकेगा संभव

घंटे भर में हो जाएगी कोरोना की जांच

अरविंद पांडेय, नई दिल्ली

भारतीय वैज्ञानिकों के लिए कोरोना अब अबूझ पहेली नहीं रहा। हर दिन उनकी ओर से कोरोना को हराने की दिशा में कुछ न कुछ नई खबर आ रही है। अब वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) से अच्छी खबर आई है। इसके दिल्ली स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी (आइजीआइबी) ने कोरोना की जांच के लिए एक ऐसी पेपर किट विकसित की है, जिसकी लागत पांच सौ रुपये से भी कम है। इससे एक घंटे से भी कम समय में जांच हो जाती है। यह किट प्रेगनेंसी की जांच में इस्तेमाल होने वाली यूज एंड थ्रो किट जैसी ही है।

आइजीआइबी के डायरेक्टर डॉक्टर अनुराग अग्रवाल के मुताबिक, उनकी टीम ने अपनी लैब में यह किट तैयार की है। इसे टेस्टिंग व औद्योगिक उत्पादन की मंजूरी के लिए आइसीएमआर को भेजा गया है। इस किट के

जरिये आम पैथोलॉजी में भी कोरोना की जांच हो सकेगी। मौजूदा समय में जांच के लिए रीयल टाइम पीसीआर मशीनों की जरूरत होती है, जिनकी कीमत 10 लाख रुपये से ज्यादा है। ऐसी मशीनें सिर्फ बड़ी लैब में ही मौजूद हैं। इसमें काफी समय भी लगता है। सरकार ने कुछ निजी लैब को ही जांच की अनुमति दी है।

आइजीआइबी के मुताबिक लैब में तैयार की गई कोरोना जांच की इस पेपर किट के जरिये एक घंटे के भीतर ही रिपोर्ट ली जा सकेगी। इसके तहत जांच के दौरान सैंपल में कुछ केमिकल का इस्तेमाल होता है, जिसे पैथोलॉजी में मौजूद रहने वाली ब्लॉक में करीब 30 से 40 मिनट तक रखा जाता है। इसके बाद पेपर किट को उसके संपर्क में लाया जाता है। यदि सैंपल कोरोना पॉजिटिव है, तो पेपर किट पर कुछ ही मिनट में लाइनें उभर आती हैं। जाहिर है कि इस किट के जरिये छोटे लैब में भी जांच हो सकेगी। डॉ. अग्रवाल के मुताबिक इसकी लागत 500 रुपये से भी कम है। इसे आसानी से नष्ट भी किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि इस पूरी योजना में सबसे अहम ऐसी किट विकसित करना था, जिसे आसानी से नष्ट भी किया जा सके, ताकि उसके संपर्क में आकर किसी के संक्रमित होने का खतरा नहीं रहे। यह पेपर किट है। पानी में कुछ देर रखने पर यह खुद ही नष्ट हो जाएगी।

आज से शुरू हो जाएगी बच्चों की पढ़ाई

अरविंद पांडेय, नई दिल्ली

- मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने जारी किया प्लान

देशव्यापी लॉकडाउन के चलते अभी भले ही स्कूल बंद रहेंगे, लेकिन बच्चों की पढ़ाई पहली अप्रैल से शुरू हो जाएगी। अभिभावकों की चिंताओं को समझते हुए सरकार बच्चों को अब घर बैठे पढ़ाई कराएगी। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इसका प्लान जारी कर दिया है। इसके तहत बच्चों को जहां कोर्स से जुड़ी सारी अध्ययन सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध कराई जाएगी, वहीं यू-ट्यूब, लाइव क्लासेज, वीडियो-ऑडियो व टेलीविजन के जरिये हर दिन क्लास भी लगाई जाएगी।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने योजना के सुचारु संचालन की जिम्मेदारी सीबीएसई, एनसीईआरटी, एनआइओएस को सौंपी है। इसके साथ ही लाइव क्लास भी होगी जिसमें बच्चे सीधे सवाल पूछ सकेंगे। इसका जिम्मा केंद्रीय विद्यालय को सौंपा गया है। शिक्षक स्टूडियो में मौजूद रहेंगे और इस पूरी योजना के क्रियान्वयन पर मंत्रालय के सचिव खुद भी नजर रखेंगे। मंत्रालय ने अप्रैल के पहले हफ्ते का पूरा प्लान जारी किया है। इसमें यह बताया है कि किस समय, किस कक्षा का और कौन सा विषय पढ़ाया जाएगा। लाइव कक्षाएं अभी सिर्फ सेकेंडरी और सीनियर सेकेंडरी के लिए ही लगाई जाएंगी। एनआइओएस के चेयरमैन सीबी शर्मा ने बताया कि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण व उपयोगी अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने को लेकर पूरा जोर है।

इन माध्यमों से पढ़ सकेंगे बच्चे : सीबीएसई द्वारा तैयार 'दीक्षा पोर्टल' में सभी कक्षाओं के छात्रों व शिक्षकों के लिए अध्ययन सामग्री मौजूद रहेगी। अलग-अलग राज्यों के बोर्ड के हिसाब से भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई गई है। इसके अलावा 'स्वयं पोर्टल' पर भी पसंद और भाषा के आधार पर सभी विषयों के वीडियो और ऑडियो पाठ उपलब्ध रहेंगे। बच्चों को ऑनलाइन टेस्ट का भी विकल्प दिया गया है। साथ ही 'स्वयं प्रभा' टीवी के जरिये चैनल-27, 28, 30 व 32 पर भी हर दिन सुबह, दोपहर और शाम को अलग-अलग विषयों की कक्षाएं आयोजित की जाएंगी।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से दखल की मांग : राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से आग्रह किया है कि वह स्वयं प्रभा के सभी चैनलों को सभी केबल ऑपरेटरों से अनिवार्य रूप से दिखाने के निर्देश दे।

कॉलेजों में प्रवेश का नहीं छूटेगा मौका : मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने उन अभिभावकों की चिंता भी दूर की है, जिनके बच्चों की अभी भी बोर्ड की परीक्षाएं बची हुई हैं, या जो रिजल्ट में देरी के चलते कॉलेजों में प्रवेश न मिलने को लेकर चिंतित है। मंत्रालय ने कहा है कि लोगों को चिंता नहीं करनी चाहिए। देश या विदेश कहीं भी कॉलेजों में प्रवेश का बच्चों का कोई मौका नहीं छूटेगा।

अष्टम्

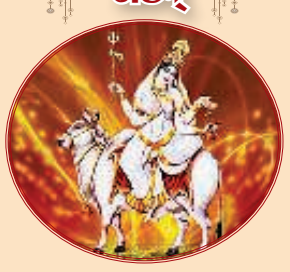

महागौरी

वासंतिक नवरात्र के आठवें दिन शक्ति की अधिष्ठात्री देवी जगदंबा के अष्टम स्वरूप में भगवती महागौरी की मान्यता है। इन्हें भगवती अन्नपूर्णा के रूप में भी पूजा जाता है। इनका पूजन दुर्गाष्टमी के दिन किया जाता है। देवी वृषभ की पीठ पर विराजमान हैं। 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाय विच्चै' मंत्र से देवी की पूजा-आराधना करने का विधान है। शास्त्रीय मान्यता है कि महागौरी न्यायप्रिय हैं। इनका दर्शन-पूजन और मंत्र-जप करते हुए ध्यान करने से संकटों से मुक्ति मिलती है।

गौरी दर्शन यात्रा : नवरात्र के आठवें दिन गौरी के अष्टम स्वरूप मंगला गौरी का दर्शन किया जाता है।

आज का संदेश : मां महागौरी का स्वरूप यह संदेश देता है कि भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं। अत: धैर्य धारण करें।

-पं. ऋषि द्विवेदी

न्यूज गैलरी

मनीषा सक्सेना बनीं दिल्ली की परिवहन आयुक्त

नई दिल्ली : उपराज्यपाल अनिल बैजल ने मंगलवार को 1996 बैच की आइएएस अधिकारी मनीषा सक्सेना को परिवहन आयुक्त का प्रभार सौंप दिया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने रविवार को अतिरिक्त मुख्य सचिव (परिवहन) रेणू शर्मा को निलंबित कर दिया था। मनीषा सक्सेना शिक्षा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग व तकनीकी शिक्षा विभाग की सचिव हैं। मंगलवार से उन्हें परिवहन आयुक्त का भी प्रभार दिया गया है। वहीं सतर्कता व सेवा विभाग की सचिव गीतांजलि गुप्ता को राजस्व सचिव व मंडलायुक्त का अतिरिक्त प्रभार सौंप दिया गया है। मंडलायुक्त राजीव वर्मा को भी रविवार को केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा निलंबित कर दिया गया था। नए आदेश के बाद अब गीतांजलि गुप्ता राजस्व सचिव व मंडलायुक्त का प्रभार भी संभालेंगी। (जासं)

बिना परीक्षा दिए अगली कक्षा में जाएंगे छात्र

नई दिल्ली : दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधीन चलने वाले गुरु हरकिशन पब्लिक स्कूल में पढ़ने वाले आठवीं तक के सभी छात्र बगैर परीक्षा दिए अगली कक्षा में पहुंच जाएंगे। यह जानकारी कमेटी के उपाध्यक्ष कुलवंत सिंह बाठ ने दी। उन्होंने कहा कि कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण की वजह से स्कूल पिछले कई दिनों से बंद हैं। छात्रों की पढ़ाई बुरी तरह से प्रभावित हुई है। इसे ध्यान में रखकर कमेटी के कार्यकारिणी की बैठक में छात्रों को अगली कक्षा में भेजने का प्रस्ताव लाया गया था। दिल्ली सरकार ने भी आठवीं तक के सभी बच्चों को पास करने का निर्णय लिया है। इसी तरह से गुरु हरकिशन पब्लिक स्कूल ने भी इसे मंजूर कर लिया गया। बैठक में कमेटी के अध्यक्ष मनजिंदर सिंह सिरसा, महासचिव हरमीत सिंह कालका, वरिष्ठ उपाध्यक्ष रणजीत कौर एवं संयुक्त सचिव हरविंदर सिंह सहित अन्य लोग मौजूद थे। (जासं)

बीएस-4 वाहनों का 30 अप्रैल तक होगा रजिस्ट्रेशन

नई दिल्ली : दिल्ली सरकार ने राजधानी वालों को बीएस-4 कैटगरी वाहनों के मामले में बड़ी राहत दी है। राजधानी में लॉकडाउन की घोषणा से पहले बिक चुके बीएस-4 कैटेगरी के वाहनों का अब आगामी 30 अप्रैल तक रजिस्ट्रेशन हो सकेगा। पहले यह 31 मार्च तक के लिए ही था। दिल्ली सरकार की ये घोषणा सुप्रीम कोर्ट के एक आदेश की अनुपालना है। दिल्ली के परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने स्वयं मंगलवार को एक ट्वीट कर इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 21 दिन के लॉकडाउन के कारण यह निर्णय लिया गाया है। (जासं)

होम क्वारंटाइन का उल्लंघन करने पर कार्रवाई के निर्देश

सख्त रुख ▶ उपराज्यपाल ने की कोरोना संक्रमण पर समीक्षा बैठक

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण को लेकर मंगलवार को राजनिवास में वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये बैठक करते उपराज्यपाल अनिल बैजल। इस दौरान कई अधिकारी भी मौजूद रहे। सौजन्य : राजनिवास

उपराज्यपाल अनिल बैजल ने संबंधित अधिकारियों को सभी होम क्वारंटाइन के मामलों की कड़ाई से निगरानी करने को कहा है। प्रभावी निगरानी सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने आधुनिक तकनीक का सहारा लेने का भी निर्देश दिया है। इस समय दिल्ली सरकार ने 20,000 से अधिक लोगों को होम क्वारंटाइन किया हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि कोरोना के मरीजों को, जिन्हें अस्पतालों, आइसोलेशन केंद्रों से डिस्चार्ज किया गया है तथा जिनकी क्वारंटाइन अवधि पूरी हो गई है, उन सभी की ट्रैकिंग के लिए स्टैंडर्ड ऑपरेशन प्रोसिजर (एसओपी) बनाई जाए।

उपराज्यपाल ने जिला प्रशासन और पुलिस को शारीरिक दूरी एवं होम क्वारंटाइन पर कड़ी निगरानी रखने एवं उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए हैं। होम क्वारंटाइन के प्रभावी निगरानी के लिए चिकित्सा कर्मचारी समय-समय पर इन स्थानों का दौरा करेंगे। उन्होंने निर्देश दिया कि उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। उन्होंने इस तरह के कार्यों को व्यापक रूप से प्रचारित करने का भी निर्देश दिया, ताकि दूसरे भी इससे सबक ले सकें। मंगलवार सुबह उपराज्यपाल ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन, स्वास्थ्य सचिव, निदेशक (आइएलबीएस)/अध्यक्ष एसटीएफ कोविड-19 के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए कोरोना संक्रमण की ताजा स्थिति पर समीक्षा बैठक की। इस दौरान दिल्ली के मुख्य सचिव, पुलिस आयुक्त और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

उपराज्यपाल ने कहा कि मौजूदा हालात में शारीरिक दूरी सुनिश्चित करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। हाल ही में कुछ खाद्य वितरण केंद्रों पर शारीरिक दूरी के मानदंडों के उल्लंघन के बारे में रिपोर्ट मिली है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए खाद्य वितरण केंद्रों की संख्या, जो वर्तमान में 500 तक है, को बढ़ाकर 2500 किया जाएगा, ताकि शारीरिक दूरी का प्रभावी कार्यान्वयन हो सके।

उपराज्यपाल ने कोरोना के प्रसार के मद्देनजर स्वास्थ्य विभाग को अस्पतालों में बेड एवं आइसीयू बेड बढ़ाने तथा परीक्षण किट, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई), वेंटीलेटर, नेबुलाइजर, दवाइयां इत्यादि के इंतजाम यथाशीघ्र करने के निर्देश दिए ताकि बढ़ते मामलों की तैयारी समयपूर्व की जा सके।

गुरुद्वारा मजनूं का टीला में कई लोग बीमार

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (डीएसजीपीसी) ने पंजाब और दिल्ली सरकार से गुरुद्वारा मजनूं का टीला में रुके हुए लोगों को यहां से निकालने की मांग की है।

डीएसजीपीसी अध्यक्ष मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि अलग-अलग स्थानों से पैदल चलकर लगभग तीन सौ लोग इस गुरुद्वारा में रुके हुए हैं। इनमें से कई लोग बीमार हैं। इन लोगों की जांच कराने और घर पहुंचाने की व्यवस्था की जाए। उन्होंने कहा कि डीएसजीपीसी की ओर से इन सभी लोगों को भोजन उपलब्ध कराने के साथ ही अन्य सुविधाओं का भी खयाल रखा जा रहा है। सरकार को चाहिए कि इन्हें यहां से निकालकर जांच कराए। यदि समय रहते उचित कदम नहीं उठाया गया तो और लोगों को संक्रमण हो सकता है। उन्होंने कहा कि इसे लेकर ट्विटर पर पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह से कई बार अपील कर चुके हैं, लेकिन पंजाब सरकार कोई कदम नहीं उठा रही है। यह बेहद संवेदनशील मामला है और तुरंत कदम उठाने की जरूरत है।

दिल्ली सरकार के पांच अस्पतालों में होगा सिर्फ कोरोना का इलाज

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना के बढ़ते संक्रमण के मद्देनजर दिल्ली सरकार के पांच अस्पतालों को तैयार किया गया है। इनमें सिर्फ कारोना का इलाज होगा। इस बाबत मंगलवार को स्वास्थ्य विभाग ने आदेश जारी कर दिया। केंद्र सरकार के निर्देश पर यह पहल की गई है। इन पांच अस्पतालों में लोकनायक, डीडीयू, जीटीबी, अंबेडकर और राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल शामिल हैं। यहां फिलहाल अन्य बीमारियों से पीड़ित मरीजों का इलाज नहीं होगा। इनमें कोरोना के इलाज के लिए वेंटिलेटर भी बढ़ाए जाएंगे।

पांचों अस्पतालों की बेड क्षमता	
लोकनायक अस्पताल	2000
गुरु तेग बहादुर अस्पताल	1700
राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी	400
दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल	650
आंबेडकर अस्पताल	600

मौजपुर के एक निजी क्लीनिक के डॉक्टर भी हुए संक्रमित

जागरण संवाददाता, पूर्वी दिल्ली : मौजपुर के एक निजी क्लीनिक के डॉक्टर भी कोरोना संक्रमित हैं। उनका इलाज जीटीबी अस्पताल में चल रहा है। अभी पता नहीं चल पाया है कि डॉक्टर किससे संक्रमित हुए। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के मुताबिक, तीन-चार दिन पहले लक्षण सामने आने पर उनकी जांच करवाई गई थी। इसके बाद सोमवार को उन्हें जीटीबी अस्पताल में भर्ती कराया गया। मंगलवार को आई रिपोर्ट में कोरोना की पुष्टि हुई है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी यह पता लगाने में जुटे हैं कि उन्होंने निजी क्लीनिक में पिछले कुछ दिनों में किन-किन लोगों को देखा था।

उधर, डॉक्टर के संक्रमित होने के कारण मौजपुर में लोग डरे हुए हैं। डॉक्टर का क्लीनिक बाबूराम शर्मा चौक पर है। आसपास के लोग उनके पास ही अपना इलाज कराते हैं।

लॉकडाउन के उल्लंघन पर 239 लोगों पर एफआइआर

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : लॉकडाउन के बावजूद बिना किसी कारण के घर से निकले 3763 लोगों को पुलिस ने मंगलवार को हिरासत में लिया है। सड़कों पर घूमते ये लोग पुलिस को घर से बाहर निकलने का कोई वाजिब कारण नहीं बता सके। मंगलवार को लॉकडाउन का उल्लंघन करने पर 239 एफआइआर दर्ज की गई। दिल्ली पुलिस के अतिरिक्त जनसंपर्क अधिकारी एसीपी अनिल मित्तल के मुताबिक लॉकडाउन के बावजूद घरों से बाहर निकलने पर 3763 लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। इनमें बिना किसी जरूरी काम के घर से निकले 546 लोगों के वाहनों को जब्त कर लिया गया। सोमवार देर रात से लेकर मंगलवार शाम पांच बजे तक दिल्ली पुलिस ने सड़कों पर घूमते लोगों पर कार्रवाई की। लोगों को उनके घरों में रहने की सलाह भी दी जा रही है, लेकिन लोग मानने को तैयार नहीं हो रहे हैं।

एक हजार से अधिक लोगों को दिए गए ऑनलाइन पास : दिल्ली पुलिस ने मंगलवार को आवश्यक सेवा से जुड़े 1254 जरूरतमंद लोगों को मूवमेंट पास जारी किए। पास बनवाने वालों की भीड़ को देखते हुए अब ऑनलाइन पास भी जारी किए जा रहे हैं। सोमवार को दिल्ली पुलिस की तरफ से 2143 लोगों को मूवमेंट पास जारी किए गए थे।

अब दिल्ली विकास प्राधिकरण ने दी आवंटियों को राहत

संजीव गुप्ता, नई दिल्ली

- अब आवंटी 30 जून तक कर सकेंगे अंतिम भुगतान
- डीडीए के निर्माण स्थलों पर मौजूद सभी मजदूरों को रोजाना खाना खिलाया जाएगा

कोरोना की आफत के बीच दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने वर्ष 2019 की आवासीय योजना और पुराने बचे हुए फ्लैटों की ऑनलाइन स्कीम के आवंटियों को अंतिम भुगतान के लिए राहत देने का निर्णय लिया है। यह छूट लॉकडाउन को ध्यान में रखते हुए दी गई है। यह राहत तीन महीने के लिए होगी। दोनों योजनाओं के तहत फ्लैट पाने वाले आवंटियों को पहले 31 मार्च और 15 अप्रैल तक अंतिम भुगतान करना था। लेकिन अब डीडीए ने इस तिथि को बढ़ाकर 30 जून तक कर दिया है।

डीडीए की आवासीय योजना 2019 में आठ हजार से अधिक लोगों को फ्लैटों के आवंटन किए गए थे। ऑनलाइन स्कीम में भी शहीदों की विधवाओं, अनुसूचित जाति-जनजाति के आवेदकों व वसंत विहार सहित कई अन्य कॉलोनियों में भी ड्रॉ के जरिये कई हजार फ्लैटों का आवंटन किया था। अधिकारियों ने बताया कि दिल्ली में जहां भी डीडीए के निर्माण स्थल मौजूद हैं, वहां डीडीए की ओर से सभी मजदूरों को रोजाना खाना खिलाया जाएगा। इसके लिए सभी जोनल स्तर के अधिकारियों को निर्देश दे दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि डीडीए की ओर से सभी निर्माण स्थलों पर कच्चा राशन और पका हुआ भोजन दोनों मुहैया कराया जाएगा।

वहीं डीडीए की कर्मचारी यूनियन की ओर से प्रधानमंत्री राहत कोष में एक लाख रुपये की सहायता राशि भी दी गई है।

> कोरोना वायरस का संक्रमण ऐसा विश्वव्यापी संकट है, जिससे कोई भी देश बचा नहीं है। ऐसे में डीडीए भी मानवीय आधार पर विभिन्न स्तरों पर अपना योगदान दे रहा है। फ्लैटों की कीमत के भुगतान, मजदूरों के लिए भोजन, कठपुतली कॉलोनी के निवासियों के लिए राशन और पीएम राहत कोष में अंशदान इन्हीं में से एक है।
>
> -तरुण कपूर, उपाध्यक्ष, डीडीए।

अभी भी घर लौटने की आस लेकर निकल रहे लोग हो रहे निराश

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- कोरोना वायरस के डर के कारण दिल्ली छोड़ना चाह रहे लोगों को बैरिकेड से लौटना पड़ रहा वापस
- दिल्ली की सीमाओं पर परिवार के साथ घरों की ओर जाते दिख रहे लोग, पुलिस भेज रही वापस

दिल्ली से अपने गांव जाने की आस लेकर अब भी कई परिवार अपने घरों से निकल रहे हैं, लेकिन घर से कुछ दूर पर ही पुलिस का नाका देखकर उन्हें लौटना पड़ रहा है। ऐसे बहुत से परिवार दिल्ली की अलग-अलग सड़कों पर नजर आ रहे हैं। हालांकि अब बॉर्डर इलाकों में दिल्ली पुलिस की सख्ती के चलते वह दिल्ली से बाहर तो जा नहीं पा रहे हैं, लेकिन उनके मन में गांव लौटने का मलाल साफ देखने को मिल रहा है। देश में इन दिनों कोरोना वायरस के प्रकोप से बचने के लिए तीन सप्ताह का लॉकडाउन लगा हुआ है। लॉकडाउन की खबर मिलने के बाद दिल्ली से लाखों लोग अपने घर लौट गए हैं। वहीं आज भी दिल्ली में बहुत से ऐसे परिवार रहते हैं, जोकि उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, राजस्थान और हरियाणा के रहने वाले हैं। धौला कुआं में रहने वाले दिनेश कुमार का कहना है कि वह यूपी के आजमगढ़ के रहने वाले हैं। दिल्ली में मजदूरी कर अपने परिवार का पालन पोषण कर रहे थे, लेकिन अब काम बंद होने के कारण खाने पीने का संकट पड़ रहा है।

साथ ही कोरोना वायरस से होने वाली बीमारी का डर भी उन्हें सता रहा है, जिससे बचने के लिए वह अपने गांव जाना चाहते हैं, लेकिन पुलिस उन्हें जाने नहीं दे रही है। उनका कहना है कि दिल्ली सरकार खाने का इंतजाम तो कर रही है, लेकिन इसके बावजूद गांव में परिवार के पास जाना चाहते हैं। इसके लिए वह मंगलवार सुबह धौला कुआं से आनंद विहार तक परिवार के साथ पैदल जा रहे थे।

आ.. अब लौट चलें... : कोरोना से बचाव को लेकर देश भर में लॉकडाउन लगा हुआ है। वहीं, अभी भी कुछ लोग अपने घर जाने की जिद में हैं और उम्मीद लगाए हैं कि कहीं कोई सवारी मिल जाए। इसी आस में एक परिवार अल सुबह राजधानी के धौला कुआं इलाके से पैदल ही आनंद विहार के लिए चल पड़ा, मगर पुलिस की मुस्तैदी के बाद उन्हें यमुना पुल से ही वापस अपने घर लौटना पड़ा। संजय

पुलिस बोली- अब दिल्ली से बाहर नहीं जा सकते

वहीं, बिहार के पटना के रहने वाले संदीप का कहना है कि वह दिल्ली की एक फैक्टरी में काम करते हैं, लेकिन फैक्टरी बंद होने के कारण काम नहीं हो रहा है। वहीं, कोरोना वायरस के तेजी से दिल्ली में फैलने का डर भी उन्हें सता रहा है। मंगलवार को वह मायापुरी से आनंद विहार जा रहे थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें वापस भेज दिया और कहा कि वह अब दिल्ली से बाहर नहीं जा सकते हैं। उन्होंने पुलिस अधिकारियों से अपील की कि उन्हें बिहार जाने दिया जाए, लेकिन पुलिस ने उनकी नहीं मानी।

दिल्ली पुलिस मुस्तैद : पिछले दिनों बॉर्डर इलाके में लोगों की भीड़ के बाद पुलिस कमिश्नर ने सख्त आदेश जारी किए हैं कि कोई भी व्यक्ति दिल्ली से बाहर न जाए। उन्हें दिल्ली में रहने की अपील की जाए। सरकार मजदूरों व जरूरतमंदों की हर मदद करने को तैयार है। इसके बाद से दिल्ली पुलिस लगातार मुस्तैद होकर अपनी ड्यूटी कर रही है।

शारीरिक दूरी का रखा ध्यान...

नई दिल्ली में मंगलवार को रामकृष्ण मिशन द्वारा वितरित किए जा रहे भोजन के समय लोगों ने इस तरह शारीरिक दूरी बनाई। जरूरतमंद लोगों ने बनाए गए गोल घेरे में अपने थैले और बैग रख दिए। प्रेट्र

दिल्ली में पारा 34 डिग्री सेल्सियस के पास, रोज खिल रही तेज धूप

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

धीरे-धीरे बढ़ती गर्मी के बीच दिल्ली में अधिकतम पारा 34 डिग्री सेल्सियस छूने को है। मंगलवार को पालम सबसे गर्म रहा। आयानगर और लोधी रोड पर भी खासा गर्मी रही। रोजाना ही तेज धूप भी खिल रही है। हालांकि बुधवार एवं गुरुवार को एक पश्चिमी विक्षोभ का असर रहेगा, लेकिन इससे केवल बादल ही छाए रहने का अनुमान है, बारिश का नहीं।

मंगलवार को दिल्ली का अधिकतम पारा सामान्य से एक डिग्री कम 32.6 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया जबकि न्यूनतम पारा सामान्य से दो डिग्री कम 16.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। हवा में नमी का स्तर 29 से 82 फीसद रहा। पालम का अधिकतम पारा सर्वाधिक 33.3 डिग्री सेल्सियस, आयानगर का 33.2 जबकि लोधी रोड पारा 33.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

मौसम विभाग के मुताबिक अब गर्मी और पारा चढ़ने का दौर ऐसे ही जारी रहेगा। जल्द ही दिल्ली का अधिकतम पारा 35 डिग्री सेल्सियस पार कर जाएगा। दूसरी तरफ स्काईमेट वेदर के मुख्य मौसम विज्ञानी महेश पलावत का कहना है कि पश्चिमी विक्षोभ के असर से बुधवार और गुरुवार को आंशिक रूप से बादल तो छाए रहेंगे, हवा भी चलने के आसार हैं। लेकिन बारिश होने और गर्मी या तापमान में बदलाव की संभावना नहीं है।

बेहतर चल रहा दिल्ली-एनसीआर का प्रदूषण स्तर : दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण का स्तर मंगलवार को भी बेहतर ही रहा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा जारी एयर बुलेटिन के अनुसार मंगलवार को दिल्ली का एयर इंडेक्स महज 76 दर्ज किया गया। एनसीआर के शहरों में फरीदाबाद का 110, गाजियाबाद का 72, ग्रेटर नोएडा का 90, गुरुग्राम का 77 और नोएडा का 67 दर्ज किया गया।

महाधिवक्ता नियुक्त करने की मांग को लेकर जनहित याचिका दायर

जासं, नई दिल्ली : दिल्ली सरकार को कानूनी सलाह देने और उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए महाधिवक्ता की नियुक्ति की मांग को लेकर दायर जनहित याचिका पर दिल्ली हाई कोर्ट ने दिल्ली सरकार से जवाब मांगा है। याचिकाकर्ता अभिजीत मिश्रा की याचिका पर मुख्य न्यायमूर्ति डीएन पटेल व न्यायमूर्ति सी हरिशंकर की पीठ ने दिल्ली सरकार को नोटिस जारी कर 22 मई तक जवाब मांगा है।

याचिकाकर्ता अभिजीत मिश्रा ने कहा है कि अनुच्छेद 239एए के तहत दिल्ली को एक विशेष राज्य का दर्जा दिया गया है। इसके पास अपनी विधानसभा भी है। याचिकाकर्ता का दावा है कि प्रशासन और शासन के मामलों पर दिल्ली सरकार को कानूनी सलाह देने के लिए महाधिवक्ता की जरूरत है। याचिकाकर्ता ने महाधिवक्ता की नियुक्ति के लिए नियम व शर्तें तैयार करने और चयन प्रक्रिया को पूरा करने के लिए एक समिति गठित करने की भी मांग की है।

राहत

दिल्ली के 15 जिलों में 250 स्थानों पर की गई है खाने की व्यवस्था, हेल्पलाइन नंबर 23469526 पर अब तक 7230 कॉल मिली हैं

पौने दो लाख लोगों के लिए पुलिस ने की खाने की व्यवस्था

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के प्रकोप के चलते लॉकडाउन की स्थिति में पुलिस लोगों की मदद के लिए लगातार कार्य कर रही है। मंगलवार को दिल्ली पुलिस ने एनजीओ के सहयोग से करीब पौने दो लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की, जबकि सोमवार को करीब डेढ़ लाख लोगों को भोजन उपलब्ध कराया गया था। दिल्ली पुलिस ने सभी 15 जिलों में 250 स्थानों पर दोपहर और रात के भोजन की व्यवस्था की है। इसके लिए 400 एनजीओ की मदद ली जा रही है। पुलिस ने मंगलवार को 1810 लोगों को राशन भी उपलब्ध कराया। वहीं नए पुलिस मुख्यालय से शुरू की गई हेल्पलाइन के जरिये अब तक सात हजार से अधिक लोगों की मदद की जा चुकी है।

दिल्ली पुलिस ने सड़क किनारे, झुग्गियों में बेघर लोगों के साथ रिक्शा, ई-रिक्शा चालक, कबाड़ बीनने वाले और जरूरतमंद लोगों के लिए एनजीओ की मदद से खाने की व्यवस्था की है। दिल्ली पुलिस के हेल्पलाइन नंबर 23469526 पर अब तक 7230 कॉल मिली हैं। सोमवार की दोपहर दो बजे से लेकर मंगलवार दोपहर दो बजे तक हेल्पलाइन नंबर पर 1142 कॉल आईं। कंट्रोल रूम को 205 कॉल दिल्ली के बाहर से मिली। इन सभी कॉल को संबंधित राज्यों की हेल्पलाइन नंबरों पर भेजा गया है।

61 कॉल ऐसी थी, जिसमें लोगों ने समस्या बताई कि उनके पास न तो खाना है और न ही खाने के लिए पैसे हैं। पुलिसकर्मियों ने उनके पते पर राहत पहुंचाने के लिए एनजीओ की मदद ली। 17 कॉल स्वास्थ्य को लेकर भी मिली। मूवमेंट पास से लिए 648 कॉल आईं। उन लोगों को संबंधित क्षेत्र के डीसीपी और एडिशनल डीसीपी कार्यालय से संपर्क करने की सलाह दी गई।

रेलवे स्टेशनों पर वितरित किया जा रहा है भोजन

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : आवश्यक सामान की आपूर्ति बनाए रखने के लिए रेल कर्मचारी दिन रात काम कर रहे हैं। इसके साथ ही लॉकडाउन की वजह से परेशान लोगों की मदद भी कर रहे हैं। कई ऐसे लोग हैं जिनके सामने भूखे रहने की नौबत आ गई है।

रेल प्रशासन इन लोगों को सुरक्षित तरीके से भोजन उपलब्ध करा रहा है। दिल्ली मंडल के कई स्टेशनों पर भोजन वितरण किया जा रहा है। भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आइआरसीटीसी) के बेस किचन में भोजन तैयार किया जा रहा है। इसके साथ ही रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) और समाज सेवी संस्था की ओर से भी भोजन के पैकेट दिए जा रहे हैं। आरपीएफ के जवानों के माध्यम से जरूरतमंदों तक भोजन पहुंचाया जा रहा है। इसके लिए नई दिल्ली, हजरत निजामुद्दीन, दिल्ली सफदरजंग, मंडावली, शकूरबस्ती और गाजियाबाद रेलवे स्टेशनों के बाहर दोपहर में भोजन वितरित किया जा रहा है। अधिकारियों का कहना है कि सोमवार को लगभग ढाई हजार लोगों को निशुल्क भोजन वितरित किया गया।

दिल्ली के मंडल रेल प्रबंधक एससी जैन ने कहा कि भोजन बनाने से लेकर वितरण करने में सफाई व शारीरिक दूरी का पूरा ख्याल रखा जा रहा है।

गुरुग्राम में डॉक्टर से मारपीट करने वाला एसपीओ बर्खास्त

जागरण संवाददाता, गुरुग्राम

कोरोना वायरस से लड़ने के लिए डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी जहां जान की परवाह न कर एक कड़ी के रूप में काम कर रहे हैं, वहीं एक एसपीओ (विशेष पुलिस अफसर) ने वर्दी के घमंड में एक डॉक्टर को ही पीट दिया।

पटौदी अस्पताल में नियुक्त डॉ. सतीश यादव ड्यूटी खत्म कर अपने घर जा रहे थे। जमालपुर नाके पर खड़े एसपीओ राजेश ने उन्हें जांच के लिए रोका तो डॉक्टर ने आइकार्ड के साथ पास भी दिखाया मगर एसपीओ ने एक न सुनी और डॉक्टर के साथ मारपीट कर दी, जिसमें डॉक्टर चोटिल हो गए। बाद में एसपीओ राजेश व अन्य पुलिसकर्मियों ने उन्हें मामला दर्ज नहीं कराने के लिए भी धमकाया। मगर बात पुलिस आयुक्त मोहम्मद अकील तक पहुंची तो उन्होंने जांच के बाद एसपीओ को बर्खास्त करने के आदेश दे दिए। बता दें कि हरियाणा सरकार सैनिक या अर्धसैनिक बल से सेवानिवृत हुए जवान को एसपीओ के तौर पर नियुक्त करती है।

26 मार्च को हुई घटना की जानकारी पुलिस आयुक्त को सिविल सर्जन डॉ. जसवंत सिंह पूनिया ने दी थी। दरअसल कुछ पुलिस अधिकारी मामले को ठंडा करने में लगे थे। शिकायत देने के बाद भी पीड़ित डॉक्टर की नहीं सुनी जा रही थी। उल्टे उन्हे झूठे मामले में फंसाने की धमकी दी गई थी। परेशान डॉ. सतीश ने एक दिन पहले सिविल सर्जन को आपबीती बताई जिसके बाद उन्होंने पुलिस आयुक्त को मामले से अवगत कराया। घटना का वीडियो भी कई सोशल साइट पर वायरल हो रहा है।

1948 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक प्रस्ताव पारित कर ज्वाइंट पेंशन फंड की स्थापना की गई थी। इसमें निवेश के लिए यूएन के महासचिव के प्रतिनिधि के पद पर कार्यरत वरिष्ठ भारतीय अधिकारी सुधीर राजकुमार ने बीते दिनों इस्तीफा दे दिया था। यूएन महासचिव ने अब गाजो को अंतरिम प्रतिनिधि नियुक्त किया है।

हर्षवर्धन ने कोरोना की सैंपलिंग व टेस्टिंग रणनीति की समीक्षा की

- कहा, टेस्टिंग किट्स हासिल करने पर पूरा जोर होना चाहिए
- राज्यों को जांच के लिए जरूरी उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के निर्देश

स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन की अध्यक्षता में मंगलवार को कोरोना वायरस के रोकथाम को लेकर मंत्रिसमूह की उच्चस्तीय बैठक हुई। प्रेट्र

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने मंगलवार कोरोना वायरस के सैंपल लेने और उसकी जांच करने के लिए अपनाई जा रही रणनीति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि लैब के लिए तत्काल टेस्टिंग किट्स हासिल करने के लिए पूरा प्रयास किया जाना चाहिए। हर्षवर्धन ने अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि राज्यों को टेस्टिंग किट्स, रीजेंट या अन्य उपकरणों की कमी न होने पाए। पूर्वोत्तर के राज्यों और लद्दाख समेत उन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को विशेष सहायता देने को कहा है, जहां लैब और जांच की सुविधा नहीं है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने यह भी स्पष्ट किया है कि सरकार या निजी लैब द्वारा हासिल किए जाने वाले टेस्टिंग किट्स की गुणवत्ता से किसी तरह का समझौता नहीं होना चाहिए। टेस्टिंग किट्स की गुणवत्ता की जांच नियमित रूप से होते रहना चाहिए।

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा है कि भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) द्वारा तत्काल प्रभाव से गुणवत्ता नियंत्रण तंत्र और प्रोटोकाल तैयार किया जाना चाहिए। समीक्षा बैठक में आइसीएमआर, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, जैव-प्रौद्योगिकी विभाग और वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

बैठक में रीजेंट की खरीद, वेबसाइट इंटीग्रेशन, डाटा प्रबंधन व विश्लेषण, डैशबोर्ड, नियोजित व पूर्ण शोध अध्ययन जैसे मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के महानिदेशक द्वारा बताया गया कि नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फॉर टेस्टिंग एंड कैलिब्रेशन लेबोरेटरीज (एनएबीएल) से मान्यता प्राप्त 49 निजी लैब के साथ ही 129 सरकारी लैब काम कर रही हैं, जिनकी प्रतिदिन 13 हजार सैंपल जांच करने की क्षमता है।

आयुष मंत्रालय थेरेपी पर वैज्ञानिक प्रस्ताव मांगेगा

आयुष मंत्रालय ने भारतीय औषधि पद्धति के इस्तेमाल से कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने को लेकर वैज्ञानिक प्रस्ताव मंगाने का फैसला किया है। मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि उसने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सलाह पर पहल शुरू कर दी है। प्रधानमंत्री ने कहा था कि कोरोना वायरस के लिए वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित आयुर्वेदिक इलाज ढूंढ़ा जाना चाहिए। मंत्रालय ने कहा है कि आयुर्वेद चिकित्सकों से सुझाव और प्रस्ताव लेने और वैज्ञानिकों द्वारा उसकी व्यवहार्यता की जांच के लिए एक चैनल बनाने का फैसला किया गया है। इसकी तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। एक बार चैनल बनने के बाद ही इस बारे में कोई निष्कर्ष निकाला जाएगा।

लॉकडाउन अवधि में निलंबन आदेश सहित अन्य कार्यों की समीक्षा नहीं करेगा केंद्र

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार लॉकडाउन के दौरान निर्धारित अवधि से पहले निलंबन आदेश और स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के नोटिस स्वीकार करने जैसे विविध कार्यों की समीक्षा नहीं करेगी। कार्मिक मंत्रालय ने एक आदेश में यह बात कही है। कार्मिक मंत्रालय ने कहा है कि कोविड-19 के फैलने के मद्देनजर देशव्यापी लॉकडाउन से उत्पन्न स्थिति पर विचार करते हुए केंद्रीय लोक सेवा (वर्गीकरण अपील एवं नियंत्रण) नियम 1965 और केंद्रीय लोक सेवा (पेंशन) नियम 1972 में निर्दिष्ट समयसीमा का पालन करना संभव नहीं है।

मंत्रालय ने कहा कि उदाहरण के लिए यदि लॉकडाउन शुरू होने पर किसी प्रक्रिया या कार्य को पूरा करने की निर्धारित तारीख 20 दिनों के बाद आती है, तो नियत तारीख लॉकडाउन के दौरान स्थगित रहेगी और लॉकडाउन हटाए जाने के बाद 20 दिन काम पूरा करने के लिए उपलब्ध रहेंगे। हालांकि लॉकडाउन हटाए जाने के बाद अगर काम पूरा करने में 15 दिन से कम समय लगने वाला हो तब प्रक्रिया को 15 दिन के भीतर पूरा करने की अनुमति दी जा सकती है। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना वायरस के फैलाव को रोकने के लिए पिछले सप्ताह देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की थी। कोरोना वायरस के कारण देश में अब तक 32 लोगों की मौत हो चुकी है और 1200 से अधिक लोग इससे संक्रमित हुए हैं।

आरोपित के बचाव की समयसीमा तय : मंत्रालय ने कहा कि किसी आरोपित अधिकारी के आरोपपत्र पर बचाव में लिखित बयान प्रस्तुत करने और अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू करने के लिए अनुशासनात्मक प्राधिकरण की ओर से निर्णय लेने के बाद चार्जशीट जारी करने की अवधि समाप्त होने से पहले निलंबन आदेश की समीक्षा के लिए समयसीमा निर्धारित की गई है। जांच प्राधिकार के जांच पूरी करने, रिपोर्ट पेश करने और स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के नोटिस की स्वीकृति एवं अन्य कार्यों के लिए समयसीमा तय है। इसमें कहा गया है कि इसके अलावा, सीधी भर्ती, प्रतिनियुक्ति आदि के लिए आवेदन प्राप्त करने के लिए समयसीमा निर्धारित की गई है।

अंतिम तिथि को लॉकडाउन की तारीख के हिसाब से बढ़ाया जाएगा : मंत्रालय ने सभी सरकारी विभागों को जारी आदेश में कहा कि जहां सीधी भर्ती, प्रतिनियुक्ति आदि के लिए आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि लॉकडाउन की अवधि के दौरान आती है। ऐसी स्थिति में अंतिम तिथि को लॉकडाउन के दिनों की संख्या के आधार पर बढ़ाया जाएगा। इसमें कहा गया है कि इसी प्रकार सीसीएस आचार नियम 1964 में निर्धारित सीमा को विभिन्न प्रयोजनों के लिए लॉकडाउन के दिनों की संख्या के आधार पर बढ़ाया जाएगा।

केंद्रीय कर्मियों को सेवानिवृत्ति में कोई विस्तार नहीं

नई दिल्ली : केंद्रीय कार्मिक मंत्रालय के अनुसार 31 मार्च 2020 को सेवानिवृत्ति हो रहे लोग इसी दिन रिटायर हो रहे हैं। इनकी सेवानिवृत्ति को कोविड-19 के कारण लागू किए गए लॉकडाउन के चलते टाला नहीं जाएगा। रिटायरमेंट तय समय पर ही होगा फिर चाहे वह लोग वर्क फ्राम होम कर रहे हों या फिर दफ्तर से काम कर रहे हों।

जांच सुविधाएं बढ़ाने को दो सौ से अधिक वैज्ञानिकों ने सरकार से किया आग्रह

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना के कहर के मद्देनजर देश के 200 से अधिक वैज्ञानिकों और अकादमिक बिरादरी के सदस्यों ने सरकार से पूरे देश में कोविड-19 की जांच की सुविधाएं बढ़ाने का आग्रह किया है। वैज्ञानिकों ने यहां जारी एक बयान में बीमारी को फैलने से रोकने के लिए सरकार द्वारा 21 दिन के लाकडाउन के निर्णय का स्वागत किया है। विभिन्न अकादमिक व शोध संस्थाओं से संबद्ध इन वैज्ञानिकों ने आग्रह किया कि इस बीमारी से निपटने के लिए सरकार व व्यक्ति विशेष का कोई भी निर्णय या कार्रवाई वैज्ञानिक तार्किकता, कारण, प्रोटोकाल और नियमों के आधार पर ही होना चाहिये।

क्रेंद्र सरकार को संबोधित इस बयान पर हस्ताक्षर करने वालों में पुणे के इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस, एजूकेशन एंड रिसर्च के अर्नब घोष, अशोका यूनिवर्सिटी के एल.एस शशिधरा, आइआइटी कानपुर के के. मुरलीधर, दिल्ली विवि से सोनाली सेनगुप्ता और आइआएसईआर कोलकाता के आयन बनर्जी शामिल हैं।

न्यूज गैलरी

देश में फंसे विदेशी सैलानियों के लिए पोर्टल शुरू

नई दिल्ली : देश में फंसे विदेशी सैलानियों की मदद के लिए पर्यटन मंत्रालय ने एक पोर्टल शुरू किया है। इस पर यह जानकारी दी गई है कि वो किन-किन सेवाओं का इस्तेमाल कर सकते हैं। पर्यटन मंत्रालय ने एक बयान में कहा है कि 'स्ट्रैंडेड इन इंडिया' नाम से शुरू पोर्टल का मकसद देश के विभिन्न भागों में फंसे विदेशी सैलानियों की मदद करना है। बयान में कहा गया है कि कोरोना वायरस के चलते पूरी दुनिया आज मुश्किल समय से गुजर रही है। ऐसे समय में सैलानियों खासकर विदेश से आए लोगों की कुशलता सुनिश्चित करने की लगातार कोशिश की जा रही है। इस पोर्टल पर कोरोना वायरस से जुड़ी हेल्पलाइन या काल सेंटर के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है, जहां विदेशी सैलानी संपर्क कर सकते हैं। विदेश मंत्रालय के कंट्रोल सेंटर, संपर्क नंबर के साथ ही राज्य और क्षेत्रीय पर्यटन केंद्रों की जानकारी भी दी गई है। (प्रेट्र)

20 हजार कोचों में होंगे 3.2 लाख आइसोलेशन बेड्स : रेलवे

नई दिल्ली : रेलवे ने मंगलवार को बताया कि कोरोना वायरस मरीजों के लिए आइसोलेशन वार्डों में तब्दील किए जा रहे 20 हजार कोचों में 3.2 लाख बेड्स होंगे। रेलवे ने इसके लिए अपने 16 जोनों को लक्ष्य दिए हैं। दक्षिण मध्य रेलवे के तेलंगाना स्थित सिकंदराबाद मुख्यालय को सबसे अधिक 486 कोचों का लक्ष्य दिया गया है। इसके बाद मध्य रेलवे के मुंबई स्थित मुख्यालय को 482 कोचों का लक्ष्य दिया गया है। रेलवे की ओर से जारी एक बयान के मुताबिक, पांच हजार कोचों को आइसोलेशन वार्डों में तब्दील करने का काम शुरू हो गया है। एक कोच में आइसोलेशन के लिए 16 बेड्स होने की संभावना है लिहाजा इन पांच हजार कोचों में 80 हजार बेड्स होंगे। बता दें कि आइसोलेशन वार्डों में तब्दील करने के लिए सिर्फ गैर-वातानुकूलित शयनयान कोचों का चुनाव किया गया है। (प्रेट्र)

सैन्य कर्मियों को सोशल मीडिया पर पहचान नहीं देने की चेतावनी

नई दिल्ली : सेना ने मंगलवार को अपने कर्मियों को आगाह किया कि वे सोशल मीडिया पर अपनी पहचान उजागर नहीं करें और इस सिलसिले में मौजूदा दिशा-निर्देशों का पालन करें। भारतीय सेना के सलाहकार ने कहा कि यह देखा गया है कि सेना के जवान सोशल मीडिया पर अपनी पहचान देते हुए वर्दी में भी वीडियो बना रहे हैं। सभी सैन्य कर्मियों को सलाह दी जाती है कि वे मौजूदा दिशा-निर्देशों का पालन करें और ऐसी गतिविधियों से परहेज करें। पिछले सितंबर में सरकार और सुरक्षा एजेंसियों ने सेवारत और रिटायर सैन्य कर्मियों के नाम पर चलने वाले फर्जी अकाउंटों के खिलाफ कार्रवाई की थी। इसके बाद सेना ने अपने कर्मियों को दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करने को कहा था। (एएनआइ)

ग्रामीण बेरोजगारों को राहत देगी मनरेगा की संशोधित मजदूरी

दूर होगी परेशानी ▶ मजदूरी में 13 से 32 रुपये की वृद्धि, आज से लागू

लॉकडाउन से प्रभावित परिवारों को भुगतान के लिए धनराशि भी जारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रतीकात्मक।

कोरोना वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए लागू देशव्यापी लॉकडाउन में परेशान हो रहे ग्रामीण मजदूरों को मनरेगा की संशोधित मजदूरी से राहत मिलेगी। मजदूरी की नई की दरें एक अप्रैल यानी बुधवार से लागू हो जाएंगी। कोविड-19 की वजह से चौतरफा बंदी से प्रभावित मनरेगा से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार होने की संभावना है। सरकार इस योजना को कारगर तरीके से लागू करने के लिए पूरा प्रोत्साहन देगी।

मनरेगा की संशोधित मजदूरी सबसे अधिक 32 रुपये महाराष्ट्र में बढ़ी है जहां के मजदूरों को अब 206 रुपये से बढ़कर 238 रुपये मिलेंगे, जबकि सिक्किम, त्रिपुरा, नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश के मनरेगा मजदूरों की मजदूरी 192 रुपये प्रतिदिन से बढ़ाकर 205 रुपये कर दी गई है। यानी केवल 13 रुपये की वृद्धि हुई है। उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, ओडिशा और मणिपुर में 19 रुपये की वृद्धि का प्रस्ताव है जो बुधवार से लागू हो जाएगी। हिमाचल प्रदेश में 15 रुपये, जम्मू-कश्मीर में 17 रुपये, पंजाब में 22 रुपये, बिहार व झारखंड में 23 रुपये, हरियाणा व गुजरात में 25 रुपये और मध्य प्रदेश में 14 रुपये की वृद्धि की गई है।

लॉकडाउन से प्रभावित ऐसे परिवारों की बकाया मजदूरी का भुगतान हर हाल में करने के लिए केंद्र ने राज्यों को निर्देश के साथ धनराशि भी जारी कर दी है। ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, लघु व सीमांत किसानों के साथ गरीब परिवार के लोगों को केंद्र में रखकर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम को लागू किया गया है। आगामी वित्त वर्ष 2020-21 में मनरेगा की मजदूरी में की गई वृद्धि को लेकर पिछले दिनों केंद्र सरकार के आर्थिक पैकेज में कुछ घोषणाएं की गई हैं जिससे असमंजस पैदा हुआ। उसमें जो अनुमान लगाया गया है, उसके मुताबिक अगर सौ दिनों तक सभी राज्यों में मनरेगा के मजदूरों ने काम किया है तो उन्हें होने वाली अतिरिक्त आमदनी का हिसाब लगाया गया है।

वर्ष 2019-20 में केंद्र ने मनरेगा के लिए आम बजट में 60 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया था, जिसके मुकाबले इस मद में व्यय 71 हजार करोड़ रुपये से अधिक हुआ। इसके मद्देनजर आगामी वित्त वर्ष 2020-21 के लिए 61,500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जिसमें वृद्धि होना तय है। तथ्य यह है कि लॉकडाउन से उपजने वाली आर्थिक मंदी को देखते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था में और अधिक धनराशि मनरेगा में आवंटित करनी होगी। इसके लिए सरकार को अलग से तैयारी करनी होगी।

ग्रामीण मांग से वित्तीय व्यवस्था में सुधार होने की संभावना है। खेतिहर मजदूरों की मजदूरी में भी वृद्धि होनी तय है। उत्तर प्रदेश ने अपने यहां 27.5 लाख मनरेगा मजदूरों के बैंक खाते में उनकी मजदूरी जमा कराई है जो तकरीबन 600 करोड़ रुपये है।

पीएम ने योगासन का वीडियो साझा कर कहा- तनाव घटाने में मिलती है मदद

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना वायरस का संक्रमण फैलने से रोकने के उद्देश्य से किए गए लॉकडाउन के दौरान लोगों को फिट रहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को योगासन का एक वीडियो साझा किया और कहा कि यह शरीर को स्वस्थ और मन को प्रसन्न रखता है।

मोदी ने वीडियो साझा करते हुए ट्वीट किया, 'जब भी समय मिलता है, मैं हफ्ते में एक-दो बार योग निद्रा का अभ्यास अवश्य करता हूं। इससे शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्न रहता है, साथ ही यह तनाव और चिंता को भी कम करता है।' उन्होंने अंग्रेजी और हिंदी दोनों में एक-एक वीडियो साझा किया। विभिन्न वेबसाइटों पर उपलब्ध विवरण के मुताबिक योग निद्रा तनाव कम करने में मदद करता है।

ज्ञात हो कि रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम के दौरान एक श्रोता ने प्रधानमंत्री मोदी से पूछा था कि देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान वह अपनी फिटनेस का कैसे खयाल रखते हैं? इस पर प्रधानमंत्री ने कहा था कि वह जल्द ही एक वीडियो पोस्ट करेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने योग का जिक्र करते हुए कहा था कि वह न तो फिटनेस विशेषज्ञ हैं और न ही योग प्रशिक्षक, लेकिन योग का अभ्यास कई वर्षों से उनके जीवन का एक अभिन्न अंग रहा है। उन्होंने कहा था, 'कुछ योग आसनों से मुझे बहुत फायदा हुआ है। संभव है कि लॉकडाउन के दौरान इनसे आपको भी कुछ मदद मिल जाए।' इसलिए इसे अपनाएं।

तेलंगाना के सरकारी कर्मियों के वेतन में 75 फीसद तक कटौती

हैदराबाद, एएनआइ : कोरोना वायरस प्रसार के मद्देनजर एक उच्चस्तरीय बैठक में तेलंगाना की वित्तीय स्थिति की समीक्षा की गई। इसमें सरकारी कर्मचारियों के वेतन में 10 से 75 फीसद तक कटौती करने का फैसला किया गया।

- मुख्यमंत्री से लेकर निचले स्तर तक के कर्मचारी होंगे प्रभावित

प्रगति भवन में आयोजित इस बैठक में फैसला किया गया कि मुख्यमंत्री, कैबिनेट के मंत्रियों, विधानसभा एवं विधान परिषद सदस्यों, राज्य निगमों के चेयरपर्सनों और स्थानीय निकायों के प्रतिनिधियों के वेतन में 75 फीसद की कटौती की जाएगी। जबकि आइएएस, आइपीएस, आइएफएस और केंद्रीय सेवा के अन्य अधिकारियों के वेतन में 60 फीसद की कटौती होगी। अन्य सभी श्रेणियों के कर्मचारियों के वेतन में 50 फीसद की कटौती की जाएगी। लेकिन चतुर्थ श्रेणी, आउटसोर्स और अनुबंधित कर्मचारियों के वेतन में सिर्फ 10 फीसद की कटौती की जाएगी। सभी श्रेणी के पेंशनभोगियों की पेंशन में 50 फीसद की कटौती की जाएगी।

महाराष्ट्र में दो किस्तों में दिया जाएगा मार्च का वेतन

मुंबई, प्रेट्र : लॉकडाउन के कारण पड़ रहे आर्थिक प्रभाव के मद्देनजर महाराष्ट्र सरकार ने सरकारी कर्मचारियों का मार्च का वेतन दो किस्तों में देने की घोषणा की है। इस फैसले की वजह केंद्र सरकार से बकाया मिलने में विलंब को बताया गया है। हालांकि पहले राज्य के वित्त मंत्री अजीत पवार ने घोषणा की थी कि मुख्यमंत्री, मंत्रियों और विधायकों समेत सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों के मार्च के वेतन में 60 फीसद की कटौती की जाएगी। 'ए' और 'बी' ग्रेड के सरकारी कर्मचारियों के वेतन में 50 फीसद जबकि 'सी' ग्रेड के कर्मचारियों के वेतन में 25 फीसद की कटौती की जाएगी। वहीं, वरिष्ठ भाजपा नेता आशीष शेलार ने राज्य सरकार से अनुरोध किया है कि कोरोना वायरस के प्रसार से पैदा हुए हालात से दिन-रात मुकाबला कर रहे पुलिस और स्वास्थ्य कर्मियों के वेतन में कोई कटौती नहीं की जाए।

सरकार ने कहा- 28 लाख लोगों की एयरपोर्ट और सीपोर्ट पर हो चुकी स्क्रीनिंग

प्रथम पृष्ठ से आगे

कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण को रोकने के लिए केंद्र सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों की जानकारी देते हुए मेहता ने कहा कि अभी तक 28 लाख लोगों की एयरपोर्ट और सीपोर्ट पर स्क्रीनिंग हो चुकी है और 3.5 लाख लोगों की निगरानी की जा रही है। सबसे बड़ी परेशानी फर्जी खबरों से होती है। कोर्ट ने स्थिति रिपोर्ट देख कर कहा कि केंद्र सरकार ने पहचान और इलाज के अलावा बाहर से आना-जाना रोका है। यह भी बताया है कि सरकार एक कमेटी बनाने वाली है जो फर्जी खबरों से निबटेगी। पीठ ने कहा कि फर्जी खबरें फैलाने पर कानून के मुताबिक कार्रवाई होनी चाहिए क्योंकि इनसे डर फैलता है और भय वायरस से भी ज्यादा खतरनाक है। कोर्ट ने सरकार से कहा कि वह 24 घंटे में एक पोर्टल गठित करे जिसमें विशेषज्ञ भी शामिल हों जो कि कोरोना के बारे में लोगों को जानकारी दें।

कोरोना की सही तस्वीर के लिए टेस्ट की संख्या बढ़ाना जरूरी : कांग्रेस

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कमी दूर करने के लिए निजी कंपनियों को जांच किट बनाने की इजाजत दे सरकार
- राज्यों के पास केवल आपात स्थितियों से निपटने के लिए ही टेस्ट किट उपलब्ध हैं

मनीष तिवारी। फाइल

कोरोना पॉजिटिव मरीजों की बढ़ती संख्या पर चिंता जाहिर करते हुए कांग्रेस ने केंद्र सरकार से देश में और अधिक कोरोना टेस्ट किट निर्माण की कंपनियों को इजाजत देने की मांग की है। पार्टी ने कहा है कि कोरोना संदिग्ध लोगों की बढ़ती संख्या को देखते हुए भारत को अब रोजाना अधिक संख्या में टेस्ट करने की जरूरत है। टेस्ट से ही संदिग्धों की अधिक संख्या में पहचान होगी और भारत कोरोना के स्टेज तीन में जाने की ओर है या हालत नियंत्रण में है इसकी सही तस्वीर इसी से सामने आएगी।

कांग्रेस प्रवक्ता मनीष तिवारी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये प्रेस कांफ्रेंस करते हुए कहा कि कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि भारत कोरोना के स्टेज तीन में पहुंच गया है मगर इसकी सही तस्वीर तो टेस्ट से ही सामने आएगी। भारत बाकी देशों के मुकाबले बेहद कम टेस्ट कर रहा है। लेकिन टेस्टों की संख्या बढ़ाने में दिक्कत यह है कि राज्यों के पास केवल आपात स्थितियों से निपटने के लिए ही कोरोना टेस्ट किट हैं। इसीलिए राज्य इसे जांच प्रक्रिया में इस्तेमाल नहीं करना चाहते। मनीष तिवारी ने कहा कि अभी केवल चार कंपनियों को किट बनाने की अनुमति है। जबकि 17 कंपनियों ने इसके लिए अप्लाई किया था।

वहीं बरेली में ब्लीचिंग पाउडर के घोल से गरीब मजदूरों को नहलाए जाने की घटना पर क्षोभ जाहिर करते हुए मनीष तिवारी ने कहा कि इस घटना ने भारत और इंडिया में दुर्भाग्यपूर्ण फर्क को दोहराया है। इस लॉकडाउन में एक वर्ग नेटफ्लिक्स देखता है तो दूसरा सैकड़ों मील पैदल चलकर अपने घरों को पहुंचने के लिए संघर्ष कर रहा है। यह स्थिति कहीं से सही नहीं कही जा सकती। सरकार को इस बारे में पहले से ही तैयारी कर लेनी चाहिए थी ताकि किसी को कोई परेशानी नहीं हो।

वहीं रिजर्व बैंक के सर्कुलर के बाद भी बैंकों की ओर से तीन महीने तक इएमआई स्थगित करने की अधिसूचना जारी नहीं होने पर चिंता जताते हुए कहा कि वित्तमंत्री को इसके लिए बैंकों को निर्देश जारी करना चाहिए। उन्होंने सरकार से इस तीन महीने का ब्याज भी माफ करने का आग्रह किया। मनीष तिवारी ने मजदूरों के पलायन से रबी फसल की कटाई और भंडारण की अगले 15 दिनों में आने वाली बड़ी चुनौती पर भी केंद्र सरकार से राज्यों के साथ आपात चर्चा का आग्रह किया।

राहत

कोरोना का प्रसार रोकने के लिए घरेलू उड़ानों के जरिये सामान पहुंचा रही सरकार, चीन से सामान लाने के लिए नई दिल्ली में कार्गो एयरब्रिज स्थापित

शुक्रवार से चीन से आएगा मेडिकल सामान

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के बढ़ते के प्रसार को रोकने के लिए जहां सरकार देश में उपलब्ध मेडिकल सामग्री को डोमेस्टिक उड़ानों के जरिये विभिन्न भागों में पहुंचा रही है। वहीं अब उसने इस मुहिम में चीन की मदद लेने का भी निश्चय किया है। शुक्रवार से एयर इंडिया के कार्गो विमान कोरोना से जुड़े मेडिकल उपकरण, सूट, दस्ताने, मास्क और सैनिटाइजर लाने के लिए बीजिंग की उड़ानें भरने लगेंगे। एयर इंडिया ने चीन से कोरोना रोधी सामान लाने के लिए नई दिल्ली में एक कार्गो एयरब्रिज स्थापित किया है।

समूह का गठन : कोरोना से जुड़ी सामग्री जुटाने तथा उसे देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए विमानन मंत्रालय ने अधिकारियों एवं संबंधित पक्षकारों के एक समूह का गठन किया है। समूह की देखरेख में एयर इंडिया, एलायंस एयर, वायुसेना के अलावा प्राइवेट एयरलाइनों की ओर से हब एंड स्पोक लाइफलाइन कार्गो सेवाओं का संचालन किया जा रहा है। इसके लिए दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, बेंगलुरु और कोलकाता में हब जबकि गुवाहाटी, डिब्रूगढ़, अगरतला, आइजोल, इंफाल, कोयंबटूर तथा तिरुअनंतपुरम में स्पोक बनाए गए हैं। हब एंड स्पोक पद्धति में कुछ बड़े शहरों को पहिये की धुरी के केंद्र, जबकि छोटे शहरों को तीलियों के छोर की भांति क्षेत्रीय खपत स्थलों के तौर पर चिह्नित करके सामान की आवाजाही सुनिश्चित की जाती है।

अब तक 62 कार्गो उड़ानें : विमानन मंत्रालय के अनुसार पिछले पांच दिनों में कार्गो विमान सेवाओं के जरिये देश के तमाम इलाकों में दवाएं, मेडिकल उपकरण, सूट, मास्क और सैनिटाइजर आदि पहुंचाने के लिए एयर इंडिया, एलायंस एयर, भारतीय वायुसेना, इंडिगो और स्पाइसजेट के विमानों ने कुल 62 उड़ानें भरी हैं।

रेलवे ने शुरू की पार्सल सेवाएं : रेलवे भी पार्सल सेवाओं के मार्फत रोजमर्रा का जरूरी सामान पहुंचाने में अपनी भूमिका निभाने में जुटा गया है। इसके लिए अनेक लंबी दूरी की पार्सल कार्गो एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया गया है। ये ट्रेनें टाइम टेबल के हिसाब से पैसेंजर ट्रेनों की भांति चलेंगी। इनके अलावा मालगाड़ियों के जरिये अनाज, दालें, खाद्य तेल, फल-सब्जी, नमक, खाद के अलावा पेट्रोलियम उत्पाद, स्टील, सीमेंट और कोयले को पहले पहुंचाया जा रहा है।

सड़क मंत्रालय ने दी छूट : सड़क के रास्ते सामान ढुलाई की रफ्तार तेज करने के लिए हाईवे पर टोल बंदी तथा थर्ड पार्टी बीमा प्रीमियम अदायगी में ढील देने के बाद अब सरकार ने 30 जून तक वाहनों के कागजात रिन्यू कराने की जरूरत से छूट देने का एलान कर दिया है। हालांकि ट्रांसपोर्टरों का कहना है कि क्रूड की घटती कीमतों को देखते हुए सरकार को कोरोना राहत पैकेज के तौर पर पेट्रोल, डीजल के अलावा टायरों के दाम घटाने का एलान भी करना चाहिए। परिवहन लागत घटने से ट्रांसपोर्ट क्षेत्र का कमजोर मनोबल बढ़ेगा।

लॉकडाउन के दौरान बढ़े घरेलू हिंसा के मामले

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारत में कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए लगाया गया लॉकडाउन महिलाओं के लिए बंदी में बदल गया है। इस दौरान पति द्वारा अपना गुस्सा पत्नी पर उतारने के चलते घरेलू हिंसा के मामले बढ़ गए हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग को 23 मार्च से 30 मार्च तक घरेलू हिंसा की 58 शिकायतें मिलीं। आयोग की अध्यक्ष रेखा शर्मा ने कहा कि इनमें से अतिकतर शिकायतें उत्तर भारत खासकर पंजाब से आई हैं।

शर्मा ने कहा कि शिकायतों में बढ़ोतरी हुई है। पुरुष घर बैठे निराश हो रहे हैं और महिलाओं पर कुंठा निकाल रहे हैं। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से पंजाब में देखी जा रही है, जहां से हमें ऐसी कई शिकायतें मिली हैं। उन्होंने कहा कि राज्य से सटीक आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। ई-मेल पर हमें 58 शिकायतें मिली हैं। असली आंकड़ा बढ़ने की संभावना है, क्योंकि समाज के निचले तबके की महिलाएं हमें डाक द्वारा अपनी शिकायतें भेजती हैं।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

तब्लीगी जमात के सम्मेलनों से कई देशों में फैला कोरोना

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली

- पाकिस्तान के लाहौर में जमात के सम्मेलन से कई देशों में फैली महामारी
- मलेशिया में जमात के सम्मेलन से छह देशों में हुआ वायरस का प्रसार

तब्लीगी जमात के दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में हुए सम्मेलन ने जिस तरह से देश के कई हिस्से में कोरोना वायरस के जानलेवा संक्रमण को फैलाने का काम किया है, उसी तरह से दूसरे कई देशों में इस जमात के दूसरे सम्मेलनों ने इस महामारी को फैलाया है। पड़ोसी देश पाकिस्तान के लाहौर में दो हफ्ते पहले इस जमात के समारोह में ढाई लाख लोग शामिल हुए थे और अभी तक जो सूचना मिली है उसके मुताबिक इसमें शामिल लोगों ने ना सिर्फ पाकिस्तान बल्कि कुवैत, फिलीपींस, ट्यूनिशिया तक में कोविड-19 महामारी को फैलाया है। पाकिस्तान की मीडिया ने इस सम्मेलन की स्वीकृति देने के लिए पीएम इमरान खान की सरकार को भी आड़े हाथों लिया है। जबकि मलेशिया में इस गैर राजनीतिक संगठन के एक समारोह से दक्षिणी पूर्वी एशिया के कम से कम छह देशों में इस महामारी को फैलने की आशंका है।

दिल्ली में तब्लीगी जमात का सम्मेलन 13 से 15 मार्च, 2020 के बीच हुआ था। सरकारी सूत्रों के मुताबिक इसमें 2000 लोग शामिल हुए थे जिसमें 700-800 विदेशी थे। यह भी जांच की जा रही है कि विदेशी नागरिक किस तरह का वीजा ले कर इसमें शामिल हुए थे। अभी तक गृह मंत्रालय ने कभी इसकी छानबीन नहीं की लेकिन माना जा रहा है कि ये सभी टूरिस्ट वीजा पर आते रहे हैं जबकि असलियत में इन्हें कांफ्रेंस वीजा लेना चाहिए।

अभी गृह मंत्रालय इसकी जांच कर रहा है और जो भी वीजा नियमों का उल्लंघन करते हुए पाया जाएगा, उनको हमेशा के लिए ब्लैक लिस्ट करने का विकल्प भी सरकार आजमाने से नहीं हिचकेगी। जमात की इस तरह की बैठक अक्सर एक-दो महीने पर होती है जिसमें बड़ी संख्या में विदेशी आते रहे हैं।

पाकिस्तान के समाचार पत्रों में प्रकाशित खबरों के मुताबिक लाहौर में 11 मार्च से 15 मार्च तक तब्लीगी जमात का बहुत ही बड़ा जलसा हुआ था। इसमें तकरीबन 2.5 लाख लोगों ने हिस्सा लिया था। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत ने जमात को सम्मेलन नहीं करने की सलाह इस आधार पर नहीं दी थी कि इससे महामारी का प्रसार होगा बल्कि खराब मौसम का कारण बताया गया था। इसके बावजूद यह सम्मेलन हुआ था। अब पाकिस्तान में कोरोना संक्रमण के मरीजों की संख्या 1400 से ज्यादा हो गई है तब अधिकारियों ने लाहौर सम्मेलन से लौटे लोगों की जांच पड़ताल शुरू की है। इसमें से हिस्सा ले कर लौटे दो फलस्तीनियों में कोरोना वायरस का संक्रमण पाया गया है। ट्यूनिशिया, कुवैत जैसे देश में पिछले कुछ दिनों में कोरोना वायरस के संक्रमण के कुछ मामलों के तार जमात के लाहौर सम्मेलन से ही जुड़े हुए हैं।

पाकिस्तान की तरह ही मलेशिया में ही इस जमात का एक सम्मेलन हुआ था। इसमें 16 हजार लोगों ने हिस्सा लिया था। बाद में मलेशिया में 620 कोरोना के मरीज ऐसे मिले जिन्होंने इस सम्मेलन में हिस्सा लिया था। इस सम्मेलन में हिस्सा लेने वालों ने ब्रुनेई, थाइलैंड, इंडोनेशिया समेत छह दक्षिणी पूर्वी देशों में कोरोना वायरस का प्रसार किया है। यही वजह है कि तब्लीगी जमात को अभी समूचे एशिया में कोरोना को फैलाने वाला सबसे बड़ा वजह बताया जाने लगा है।

मरकज से निकला 'वायरस' बढ़ा रहा धड़कनें

राकेश कुमार सिंह, नई दिल्ली

- जनता कर्फ्यू के बाद 1130 लोगों को विभिन्न राज्यों में भेजा गया
- 23 मार्च की शाम 1500 नए लोग आ गए थे, जो अब तक ठहरे हुए थे

हजरत निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज में आए सैकड़ों लोग दिल्ली के अलावा 19 राज्यों में फैले हुए हैं। ऐसे लोग न सिर्फ केंद्र व राज्य सरकारों की धड़कनें बढ़ा रहे हैं, बल्कि आम जनता भी संक्रमण के खतरे से सकते में है। ऐसे लोग खुद से सामने नहीं आ रहे हैं, जबकि राज्यों के लिए उन्होंने तलाशना किसी पहेली को सुलझाने से कम नहीं है।

दिल्ली पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव के मुताबिक 21 मार्च को मरकज में 1130 भारतीय और कई विदेशी ठहरे हुए थे। ये भारतीय अंडमान, आसाम, बिहार, हरियाणा, हिमाचल, हैदराबाद, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, मेघालय, मध्य प्रदेश, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, झारखंड, तमिलनाडु, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल के रहने वाले थे। विदेशियों में ये मलेशिया, अफगानिस्तान, म्यामार, अलगेरिया, डिजिबोटी, किर्गिस्तान, इंडोनेशिया, थाइलैंड, श्रीलंका, बांग्लादेश, इंगलैंड, सिंगापुर, फिजी, फ्रांस व कुवैत के हैं। जबकि 21 मार्च से पहले मरकज में कई विदेशी व भारतीय आए और चले भी गए। 10-19 मार्च के बीच मरकज में विदेशियों की संख्या 310 व भारतीयों की संख्या 1500 थी। 12 से 15 मार्च के बीच जब देश में कोरोना के संक्रमण ने पैर पसारने शुरू किए। उस समय भी मरकज में करीब 1500 भारतीय व विदेशी रुके हुए थे। लेकिन इस पर न तो पुलिस और न ही जिलाधिकारी, एसडीएम व संबंधित एजेंसियों की नजर पड़ी। पुलिस आयुक्त के मुताबिक 21 मार्च को थाना पुलिस व एसडीएम ने मरकज में ठहरे लोगों को घर चले जाने को कहा लेकिन किसी ने बात नहीं मानी। यह हालत तब थी जब 20 मार्च को प्रधानमंत्री ने जनता कर्फ्यू की घोषणा की थी। 23 मार्च को दोबारा पुलिस व एसडीएम ने उन्हें बताया कि वे यहां से चले जाएं। इस पर इन लोगों ने लॉकडाउन की वजह से बाहर जाने में असमर्थता जताई, तो पुलिस व प्रशासन ने फ्लाइट व अन्य साधनों से मरकज में मौजूद 1130 लोगों को उनके राज्यों में भेज दिया। लेकिन विदेशी अंतरराष्ट्रीय फ्लाइट बंद होने के कारण नहीं जा सके। 23 की सुबह मरकज में फंसे भारतीयों को उनके राज्यों में भेजने के चंद घंटे बाद ही 1500 नए लोग विभिन्न राज्यों से मरकज में आ गए। इस बात की जानकारी मिलने पर एसडीएम ने पुलिस की मदद से मेडिकल टीम बुला सभी के स्वास्थ्य की जांच कराई। 25 मार्च तक कोई भी बीमार नहीं पाया गया। 27 मार्च को जब दोबारा जांच की गई तब छह बीमार पाए गए। पुलिस आयुक्त का कहना है कि 23 मार्च से अब तक मरकज में ठहरने वाले किसी भी व्यक्ति को बाहर नहीं निकलने दिया गया। पुलिस के इस दावे को मान भी लिया जाए तो भी 23 मार्च व इससे पहले जो लोग देशभर में फैल चुके हैं। वह राज्यों के लिए चिंता का सबब बन सकते हैं।

गृह मंत्रालय ने 21 मार्च को ही राज्यों को कर दिया था आगाह

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : तब्लीगी जमात ने अब जबकि पूरे देश में संक्रमण का खतरा बढ़ा दिया है, केंद्रीय गृह मंत्रालय का कहना है कि लॉकडाउन से पहले ही 21 मार्च को सभी राज्यों के मुख्य सचिवों और पुलिस महानिदेशकों को पत्र लिखकर आगाह किया गया था। इसमें दिल्ली पुलिस आयुक्त भी शामिल थे।

तेलंगाना में जमात के कुछ लोगों के संक्रमित होने की पुष्टि होते ही गृह मंत्रालय ने इसका उल्लेख करते हुए सभी राज्यों से इसमें शामिल सभी देशी-विदेशी लोगों की पहचान करने और उसके बाद उनकी कोरोना जांच सुनिश्चित करने को कहा था।

गृह मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, खुफिया ब्यूरो (आइबी) ने भी 28 और 29 मार्च को सभी राज्यों के डीजीपी को पत्र लिखकर जमात से जुड़े लोगों से कोरोना फैलने के खतरे के प्रति आगाह किया था। खुफिया ब्यूरो ने बताया था कि निजामुद्दीन के मरकज में भाग लेकर लौटने वाले तब्लीगी कोरोना वायरस से संक्रमित हो सकते हैं इसलिए राज्यों को उनके संपर्क में आने वाले सभी लोगों की पहचान कर उन्हें आइसोलेशन में रखने का प्रबंध करना चाहिए। आइबी ने राज्यों को इस दिशा में तत्काल कदम उठाने कहा था।

तब्लीगी जमात के चलते देश में संक्रमण का विस्फोट

बढ़ा संकट ▶ तमिलनाडु में 57 और आंध्र प्रदेश में 17 नए मामलों में ज्यादातर जमात से जुड़े

महाराष्ट्र में 72 नए केस सामने आए, राज्य में संक्रमितों का आंकड़ा 300 के पार

नई दिल्ली, एजेंसियां : दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में तब्लीगी जमात के एक कार्यक्रम के चलते देश में कोरोना वायरस के संक्रमण की विस्फोटक स्थिति पैदा हो गई है। देशभर में 224 नए मामले सामने आए हैं, जो एक दिन में नए मामलों का सबसे बड़ा आंकड़ा है। इसके साथ ही संक्रमितों की संख्या 15 सौ को पार कर गई है। सबसे ज्यादा दक्षिण भारत के कुछ राज्यों में संक्रमितों के मामले हैं और इनमें से ज्यादातर वही हैं जो इस कार्यक्रम में शामिल हुए थे। महाराष्ट्र में भी अचानक संक्रमण के 72 नए मामले सामने आए हैं, जो एक दिन में अब तक सबसे बड़ी संख्या है। पंजाब में मंगलवार को एक व्यक्ति की मौत हो गई। राज्य में कोरोना से यह चौथी मौत है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्यों के स्वास्थ्य विभागों के मुताबिक देश में अभी तक संक्रमितों की संख्या 1,545 हो गई है। इनमें 49 विदेशी, संक्रमण से जान गंवाने वाले 39 लोग और पूरी तरह ठीक हो चुके 126 व्यक्ति भी शामिल हैं। महाराष्ट्र में संक्रमितों की संख्या बढ़कर 302 हो गई है। जो 72 नए मामले आए हैं उनमें अकेले मुंबई में ही 59 मामले हैं। इसके अलावा अहमदनगर में तीन जबकि पुणे, ठाणे, वसई, विरार और कल्याण-डोंबिवली में दो-दो मामले शामिल हैं।

नई दिल्ली के निजामुद्दीन में रह रहे तब्लीग-ए-जमात के लोगों को मंगलवार को बस के जरिये कोरोना संक्रमण की जांच के लिए अस्पताल ले जाया गया। प्रेट्र

तब्लीगी जमात के चलते तमिलनाडु में सबसे ज्यादा नए केस बढ़े हैं। राज्य में 57 नए मामले सामने आए हैं और इनमें ज्यादातर संख्या उन्हीं लोगों की है जो दिल्ली के कार्यक्रम में शामिल हुए थे। राज्य में संक्रमितों की संख्या 124 हो गई है। तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में राज्य के लगभग डेढ़ हजार लोग शामिल हुए थे, जिनमें से ग्यारह सौ से ज्यादा लौट आए हैं। इनमें से आठ सौ लोगों का पता लगा दिया गया है और क्वारंटाइन में रखा है। राज्य के मुख्य सचिव ने कहा कि इन लोगों को अलग किए जाने के बाद ही कोरोना के प्रसार को रोका जा सकता है।

आंध्र प्रदेश में भी इस कार्यक्रम का व्यापक असर पड़ा है। राज्य में 17 नए केस मिले हैं, जिनमें से 14 वो हैं जो दिल्ली के कार्यक्रम में शामिल हुए थे। राज्यों में संक्रमितों की संख्या 40 हो गई है। अकेले प्रकाशम जिले में ही आठ मामले मिले हैं।

कर्नाटक में सात नए मामले मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 98 हो गई है। केरल में भी सात नए मामले सामने आए हैं। पिछले दिनों की तुलना में यह संख्या कम है। संक्रमितों की संख्या 241 हो गई है। राज्य में 1.63 लाख लोगों को निगरानी में रखा गया है। तेलंगाना में सात नए केस सामने आए हैं और 77 संक्रमित हो गए हैं। गुजरात में तीन नए केस सामने आए हैं। यहां संक्रमितों का आंकड़ा 73 पर पहुंच गया है।

मध्य प्रदेश-राजस्थान में मामले बढ़े

मध्य प्रदेश में 19 नए केस मिले हैं और संख्या 66 हो गई है। राजस्थान में 14 नए मामले सामने आए हैं और 93 संक्रमित हो गए हैं। बिहार में छह नए मामले मिले हैं और संख्या 21 हो गई है। बंगाल में भी पांच नए केस सामने आए हैं और संक्रमितों की संख्या 27 हो गई है।

झारखंड में पहला मामला सामने आए

कोरोना के वायरस से झारखंड अभी तक बचा हुआ था, लेकिन वहां भी अब एक मामला सामने आया है। रांची में एक व्यक्ति की जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। छह नए केस के साथ जम्मू-कश्मीर में 55 संक्रमित हो गए हैं। उत्तर प्रदेश में सात नए मामले सामने आए हैं और कुल संक्रमित 104 हो गए हैं। हरियाणा में चार नए मामले मिले हैं और 29 संक्रमित हो गए हैं। छत्तीसगढ़ में एक नया मामला मिला है और संक्रमितों की संख्या नौ हो गई है।

कोरोना का प्रसार	
महाराष्ट्र	302
केरल	241
तमिलनाडु	124
उत्तर प्रदेश	104
कर्नाटक	98
दिल्ली	97
राजस्थान	93
तेलंगाना	77
गुजरात	73
मध्य प्रदेश	66
जम्मू-कश्मीर	55
पंजाब	41
आंध्र प्रदेश	40
बंगाल	27
हरियाणा	29
बिहार	21
लद्दाख	13
अंडमान-निकोबार	10
चंडीगढ़	13
छत्तीसगढ़	9
उत्तराखंड	7
गोवा	5
हिमाचल प्रदेश	3
ओडिशा	3
पुडुचेरी	1
मणिपुर	1
मिजोरम	1
झारखंड	1

रांची की कई मस्जिदों में अब भी छिपे हैं विदेशी

जागरण संवाददाता, रांची

- तब्लीगी जमात से जुड़े लोगों ने शहरी-ग्रामीण इलाकों में ले रखी है शरण
- हिंदपीढ़ी से 17 और तमाड़ से 11 विदेशियों को किया गया है क्वारंटाइन

रांची के हिंदपीढ़ी और तमाड़ से 28 विदेशी नागरिकों को हिरासत में लेकर क्वारंटाइन कर देने से भी शहर सुरक्षित नहीं हो पाया है। रांची के शहरी और ग्रामीण इलाकों की मस्जिदों में अब भी बड़ी संख्या में तब्लीगी जमात के लोग ठहरे हुए हैं। कई दिनों से इनकी गतिविधियां जारी थीं। इधर, प्रशासन की चहलकदमी से लोग दुबके जरूर हैं लेकिन उन्हें न क्वारंटाइन किया गया है और न ही कोरोना संबंधित टेस्ट कराए गए हैं। हालांकि, गली मोहल्लों से दबी जुबान से चर्चा तेज होने लगी है। बताया जा रहा है कि अब भी नेपाल से आए जमात के करीब 50 लोग रांची के अलग-अलग मस्जिदों में छिपे हैं। हिंदपीढ़ी की छोटी मस्जिद, राइन मस्जिद, मक्का मस्जिद सहित अन्य मस्जिदों में भी जमात के ठहरने की जानकारी मिली है। इसके अलावा पिठोरिया और चान्हो इलाके की मस्जिदों में नेपाल से आए जमात के ठहरने की जानकारी मिली है।

गौरतलब है कि सोमवार को 17 विदेशी सहित 24 को हिंदपीढ़ी बड़ी मस्जिद से पुलिस ने हिरासत में लेकर क्वारंटाइन किया था। इससे पहले 24 मार्च को कोरोना वायरस से प्रभावित देश चीन, कजाकिस्तान और किर्गिस्तान के 11 नागरिकों के रांची के तमाड़ के रड़गांव स्थित एक मस्जिद में छिपकर रहने की सूचना पर सभी को क्वारंटाइन के लिए मुसाबनी स्थिति कांस्टेबल ट्रेनिंग स्कूल भेजा गया था। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों ने रांची के अलग-अलग इलाकों की मस्जिदों या घरों में होने का पता लगाने का निर्देश दिया है। पुलिस अपने-अपने इलाकों की मस्जिदों और घरों में विदेशी नागरिकों के रहने की जानकारी जुटा रही है। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में खुफिया एजेंसियों को भी लगाया गया है।

जहां एक भी मामला मिला, वही हॉटस्पॉट

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

कोरोना को फैलने से रोकने के लिए सरकार की जीरो टालरेंस की नीति बताते हुए लव अग्रवाल ने देश में इसके हॉटस्पॉट बताने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि जहां एक भी कोरोना का मामला आता है, सरकार के लिए वह स्थान हॉटस्पॉट बन जाता है। कोरोना के अधिक मामले की स्थिति में उसी अनुपात में सरकार का रिस्पांस भी बढ़ जाता है।

लव अग्रवाल ने कहा कि फिलहाल देश में आम लोगों को कोरोना से बचने के लिए मास्क पहनने की जरूरत नहीं है। मास्क वहीं पहनने की जरूरत होती है, जहां कोरोना का एक्पोजर बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। भारत में फिलहाल ऐसी स्थिति नहीं है।

डॉक्टर गंगाखेड़कर ने कहा कि प्रधानमंत्री के आह्वान पर सीएसआइआर, जैव-प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) जैसे कई वैज्ञानिक संगठन कोरोना को लेकर संयुक्त अनुसंधान में जुटे हैं। इनमें कोरोना के लिए वैक्सीन और दवाई बनाने से लेकर तत्काल जांच करने वाले किट भी शामिल हैं।

आतंकी संगठनों से जुड़ाव का पुराना इतिहास

- जमात के सदस्यों ने ही की थी आतंकी संगठन हरकत उल मुजाहिदीन की स्थापना

नई दिल्ली, आइएएनएस : इस्लामी मिशनरियों के वैश्विक संगठन तब्लीगी जमात का पाकिस्तान स्थित प्रतिबंधित आतंकी संगठन हरकत उल मुजाहिदीन (एचयूएम) से जुड़ाव का लंबा इतिहास रहा है। भारतीय जांचकर्ताओं और पाकिस्तानी विश्लेषकों के मुताबिक हरकत उल मुजाहिदीन के मूल संस्थापक तब्लीगी जमात के सदस्य थे।

हरकत उल जिहाद अल इस्लामी (हूजी) से टूटकर 1985 में बने हरकत उल मुजाहिदीन ने अफगानिस्तान से तत्कालीन सोवियत संघ गठबंधन की सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए पाकिस्तान समर्थक जिहाद में भी हिस्सा लिया था। खुफिया अनुमानों के मुताबिक, छह हजार से ज्यादा तब्लीगियों को पाकिस्तान स्थित आतंकी शिविरों में प्रशिक्षित किया गया था। अफगानिस्तान में सोवियत संघ की हार के बाद हरकत उल मुजाहिदीन और हूजी कश्मीर में सक्रिय हो गए थे और उन्होंने सैकड़ों बेगुनाह नागरिकों की हत्या की। हरकत उल मुजाहिदीन के सदस्य बाद में मसूद अजहर के नेतृत्व में बने आतंकी संगठन जैश ए मुहम्मद में शामिल हो गए। गोधरा में कारसेवकों को जिंदा जलाने में तब्लीगी जमात पर संदेह जताया गया था।

अमेरिकी जांच के दायरे में आई थी तब्लीगी जमात

जेएनएन,नई दिल्ली : तब्लीगी जमात कभी अमेरिकी जांच के दायरे में भी आई थी। अमेरिका में आतंकी हमले के बाद संघीय जांचकर्ताओं ने जमात में रुचि दिखाई थी। इस पर अलकायदा में भर्ती के लिए जमीन तैयार करने का संदेह था। न्यूयॉर्क टाइम्स में 14 जुलाई, 2003 को प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, एफबीआइ की अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद टीम के उपप्रमुख माइकल जे. हेइम्बच का कहा, 'हमने अमेरिका में तब्लीगी जमात की उल्लेखनीय मौजूदगी पाई है और हमने यह भी पाया है कि अलकायदा भर्ती के लिए इनका इस्तेमाल करता है।' हालांकि न तो तब्लीगी जमात और न ही इसका कोई सदस्य किसी अपराध या आतंकवाद का समर्थन करने के मामले में आरोपित किया गया है। इसके बावजूद अमेरिकी अधिकारी ने इस संगठन को लेकर सचेत रहने को कहा। जबकि जमात ने अमेरिकी सरकार के उस तर्क को पूरी तरह अनुचित करार दिया कि यह संगठन आतंकियों की भर्ती के लिए जमीन तैयार करता है।

प्रबंधन ने कहा, लॉकडाउन से फंस गई थी जमात

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

तब्लीगी मरकज के प्रबंधन ने दावा किया कि लॉकडाउन की वजह से ये लोग मरकज में फंस गए थे, जिन्हें निकाले जाने को लेकर पुलिस-प्रशासन से मदद मांगी गई थी, लेकिन कोई मदद नहीं मिली।

उप्र में 95 फीसद लोग चिन्हित : तब्लीगी जमात में शामिल 95 फीसद लोग चिन्हित कर लिए गए हैं। अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश कुमार अवस्थी ने बताया कि दिल्ली की तब्लीगी जमात में शामिल लोगों में सिर्फ 10-12 लोग बचे हैं, जिनकी तलाश के लिए सभी जिलाधिकारी और सीएमओ को निर्देश जारी कर दिए गए हैं।

बिहार आए इंडोनेशियाई की हुई थी मौत : तब्लीगी मरकज में शामिल होने के बाद बिहार आए एक इंडोनेशियाई नागरिक की बिहार के अररिया में 26 मार्च को मौत हो गई थी। वह अपने जत्थे के साथ अररिया लौटा था। यद्यपि, अररिया के डीएम इसे स्वाभाविक मौत बता रहे हैं। अभी तक 146 लोगों की सूची तैयार की गई है जो तब्लीगी मरकज में शामिल हुए थे।

हिमाचल-पंजाब के लोग क्वारंटाइन : तब्लीगी मरकज में शामिल पंजाब के सभी नौ लोगों की पहचान कर उन्हें दिल्ली में ही क्वारंटाइन कर दिया गया है। वहीं हिमाचल के 17 लोगों को भी दिल्ली में ही क्वारंटाइन सेंटर में रखा गया है। वहीं मरकज में राजस्थान के 22 लोग शामिल थे। ये लोग 18 मार्च को दिल्ली से आ गए थे। स्क्रीनिंग में किसी में कोरोना के लक्षण नहीं मिले।

विज ने कहा, चलते-फिरते एटम बम

मरकज में करीब 130 लोग हरियाणा के अलग-अलग जिलों में पहुंचे हैं। हरियाणा सरकार ने इन सभी को ढूंढने तथा उन्हें हिरासत में लेकर उनके कोरोना टेस्ट कराने के निर्देश दिए हैं। गृह मंत्री अनिल विज ने इन लोगों को चलते-फिरते एटम बम की संज्ञा दी है।

बिगाड़े हालात

जम्मू-कश्मीर में संक्रमित 55 में से 40 तब्लीगी जमात के दिवंगत नेता से किसी न किसी रूप से जुड़े, श्रीनगर में एक 10 साल का बच्चा भी तब्लीगी जमात के सदस्य के गले लगने से हुआ संक्रमित

जमात से जुड़े एक शख्स ने जम्मू-कश्मीर में दी कोरोना को हवा

नवीन नवाज, श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर में कोरोना वायरस से संक्रमित तीन बच्चों सहित 55 मरीजों में से अधिकतर कश्मीर में कोरोना वायरस के सुपर स्प्रेडर (संक्रमण फैलाने वाला) बनते जा रहे तब्लीगी जमात के दिवंगत 65 वर्षीय स्थानीय आमीर से शुरू हुए संक्रमण की श्रृंखला का हिस्सा हैं। हांलाकि इसकी अधिकारिक पुष्टि तो नहीं हुई है, लेकिन बताया जा रहा है कि 26 लोग प्रत्यक्ष रूप से तब्लीगी जमात से जुड़े लोगों के संपर्क में आने से ही संक्रमित हुए हैं। कश्मीर में मंगलवार को एक 10 साल के बच्चे सहित जो छह नए मामले सामने आए हैं, उनमें भी चार लोग तब्लीगी जमात की कड़ी थे।

कश्मीर के यह आमीर वही हैं, जिनकी 25 मार्च को कोरोना वायरस के संक्रमण से कश्मीर में पहली मौत हुई थी। दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में भाग लेकर वह हवाई जहाज, ट्रेन से होकर 16 मार्च को अपने करीब छह साथियों सहित कश्मीर लौटे थे। प्रदेश प्रशासन ने तब्लीगी जमात के संक्रमित सदस्यों के परिजनों और उनके साथ संपर्क में आए लोगों की संख्या का पता लगाने के लिए सात मार्च से लॉकडाउन शुरू होने तक निजामुद्दीन दिल्ली में और उसके साथ सटे होटलों में रुके जम्मू कश्मीर के विभिन्न लोगों की एक सूची तैयार की है। 50 पेजों पर आधारित इस सूची में शामिल लोगों को चिह्नित कर उनके बारे में पता किया जा रहा है। इसके लिए पुलिस, तब्लीगी जमात के सदस्यों, खुफिया तंत्र, समागमों से जुड़ी तस्वीरों और वीडियो फुटेज का भी सहारा लिया जा रहा है। मामले की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि तब्लीगी जमात से जुड़े संक्रमित और संदिग्ध मरीज अब प्रदेश के हर हिस्से में नजर आ रहे हैं। इनमें से अधिकांश को होम क्वारटांइन किया गया है। जिनमें जरा भी लक्षण दिखा, उन्हें डॉक्टरों की निगरानी में क्वारंटाइन किया जा रहा है। जम्मू कश्मीर प्रदेश प्रशासन के प्रवक्ता रोहित कंसल ने हालांकि किसी का नाम नहीं लिया है, लेकिन उन्होंने कहा कि हम सभी संदिग्ध और संभावित कोरोना वायरस संक्रमितों का पता लगाने के लिए पूरा प्रयास कर रहे हैं।

अंडमान निकोबार, देवबंद, दिल्ली और जम्मू होते हुए पहुंचा कश्मीर

प्रदेश प्रशासन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कोरोना वायरस से मारा गया तब्लीगी जमात का प्रमुख नेता मूलत: उत्तरी कश्मीर के सोपोर के रहने वाला था, जो कई वर्षों से श्रीनगर के हैदरपोरा में रह रहा था। वह दिसंबर 2019 को अपनी पत्नी संग दिल्ली गया था। वह वहां करीब एक माह रुका और वहां से अंडमान निकोबार चला गया। बीते माह वह श्रीनगर लौटा था और इसी माह सात मार्च को दिल्ली पहुंचा था। निजामद्दीन मरकज में कुछ दिन रहने के बाद वह अपने छह कश्मीरी साथियों संग 10 मार्च को चेयर कार ट्रेन में बैठ देवबंद पहुंचा। वहां वह बीमार हो गया और उसने वहां एक कश्मीरी डॉक्टर से दवा ली। इसके बाद वे सभी लोग शालीमार ट्रेन से 13 मार्च को जम्मू पहुंचे। जम्मू में ये लोग बड़ी ब्राह्मणा में स्थित एक मस्जिद में रुके। इसके बाद 16 मार्च को वह इंडिगो की उड़ान 6ई -554 में बैठकर जम्मू से श्रीनगर पहुंचा था, जबकि उसके साथी सड़क के रास्ते श्रीनगर में दाखिल हुए थे। उसके बाद वह अगले सात-आठ दिनों तक श्रीनगर, सोपोर, बारामुला, बांडीपोर और कथित तौर पर दक्षिण कश्मीर में भी गया था। इस दौरान वह अपने कई दोस्तों और परिचितों से मिला। उसने कई धार्मिक समागमों में हिस्सा लिया था।

कश्मीर में दो गुटों में बंटी है तब्लीगी जमात

राज्य ब्यूरो, जम्मू : कश्मीर घाटी में तब्लीगी जमात के सदस्यों की संख्या हजारों में है। यह देवबंदी विचारधारा का संगठन है। जम्मू-कश्मीर विशेषकर कश्मीर घाटी में यह संगठन वर्ष 2019 में दो गुटों में बंट गया था। एक गुट का नेतृत्व बारामुला के रहने वाले आमिर अहमद खान उर्फ परवेज कर रहे हैं। उनका मुख्यालय डाउन-टाउन में स्थित रंगर मस्जिद में है। दूसरे गुट का नेतृत्व कोरोना वायरस के संक्रमण से मारे गए सोपोर निवासी जो बीते कुछ सालों से यहां श्रीनगर में रह रहे था, करते था। जमात से जुड़ी मस्जिदें बनीं प्रशासकीय क्वारंटाइन केंद्र : कश्मीर में तब्लीगी जमात के सदस्यों के कोरोना वायरस से संक्रमित होने के मामलों में बढ़ोतरी को देखते हुए प्रशासन ने ऐसी सभी मस्जिदों को प्रशासकीय क्वारंटाइन केंद्र घोषित कर दिया है, जहां जमात के सदस्य रुके थे।

कोरोना प्रकोप का निर्णायक सप्ताह

भारत में कोरोना के पहले पीड़ित के दो महीने बाद संक्रमित लोगों की संख्या एक हजार पार कर चुकी है। पिछले सप्ताह में एक हजार कोरोना पीड़ितों की संख्या पार करने वाला भारत दुनिया के 20 देशों में शामिल हो चुका है। संक्रमित लोगों की संख्या और संक्रमण दर को लेकर भारत की स्थिति अभी काबू में कही जा सकती है। सरकार भी इसे नियंत्रित सामुदायिक संक्रमण करार दे रही है। चुनौती आगे है। इसके बाद बढ़ने वाले नए मामलों की संख्या यह तय करेगी कि भारत में कोरोना वायरस के प्रकोप की स्थिति कैसी रहने वाली है। इसी से यह भी पता चलेगा कि पूरे देश में एक सप्ताह के लाकडाउन का क्या असर रहा। आइए जानते हैं और समझते हैं कि दुनिया के विभिन्न देशों में 1000वें मामले के बाद संक्रमित मामलों का ग्राफ कैसा रहा? इसी ट्रेंड के आधार पर भारत में इस वायरस के आगामी प्रकोप को समझा जा सकता है।

भारत में बढ़ते मामले

एक सप्ताह में भारत में कोरोना संक्रमित मामलों की संख्या दो गुने से अधिक हो गई।

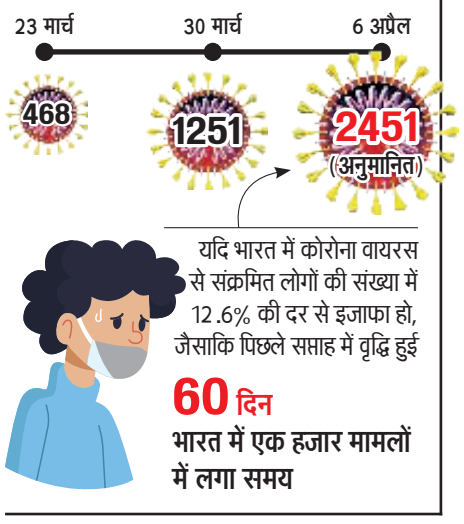

भारत की बेहतर और बदतर अनुमानित तस्वीर

भारत में लाकडाउन कदम के भीतर उसका 1000वां मामला सामने आया। लिहाजा अगले सप्ताह आने वाले नए मामले यह तय करेंगे कि भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम कितने प्रभावकारी साबित हो रहे हैं। हालांकि इस तस्वीर का एक आयाम यह हो सकता है कि अगर एक हजार मामलों के बाद भारत में संक्रमितों की दर चीन सरीखी रहती है तो भारत में संक्रमितों की संख्या नौ हजार पार कर सकती है। हालांकि इसका दूसरा पहलू यह भी है कि अगर भारत में संक्रमितों की संख्या में जापान का ट्रेंड दिखता है तो भारतीय संक्रमितों की संख्या 1500 के आसपास रह सकती है।

भारत में संक्रमितों का इस सप्ताह के लिए अनुमान यदि मामलों में वृद्धि इन देशों के मुताबिक हो...

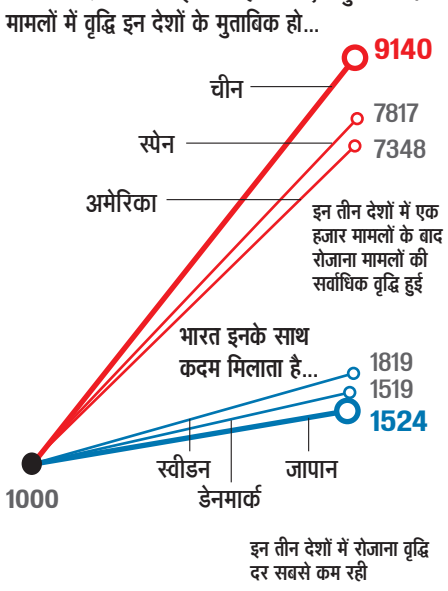

पिछले सप्ताह जिन देशों ने एक हजार मामलों का आंकड़ा पार किया उनमें रोजाना वृद्धि दर बहुत कम रही

वृद्धि दर कम रहने के पीछे माना जा सकता है कि कोरोना वायरस के शुरुआती प्रकोप से जूझने वाले देशों से इन देशों ने बहुत कुछ सीखा है। तभी भारत सहित इन देशों में लाकडाउन और शारीरिक दूरी पर तेजी के साथ भरोसा किया। इटली और स्पेन ने तब कड़े कदम उठाए जब वहां पर यह वायरस व्यापक रूप से विस्तार कर चुका था।

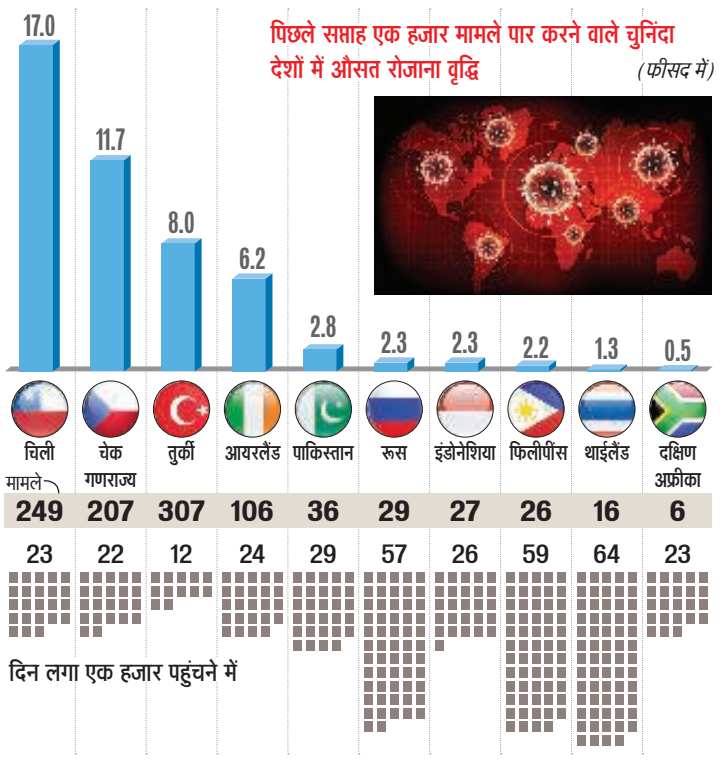

कोरोना के प्रकोप से शुरुआती रूप से जूझने वाले देश

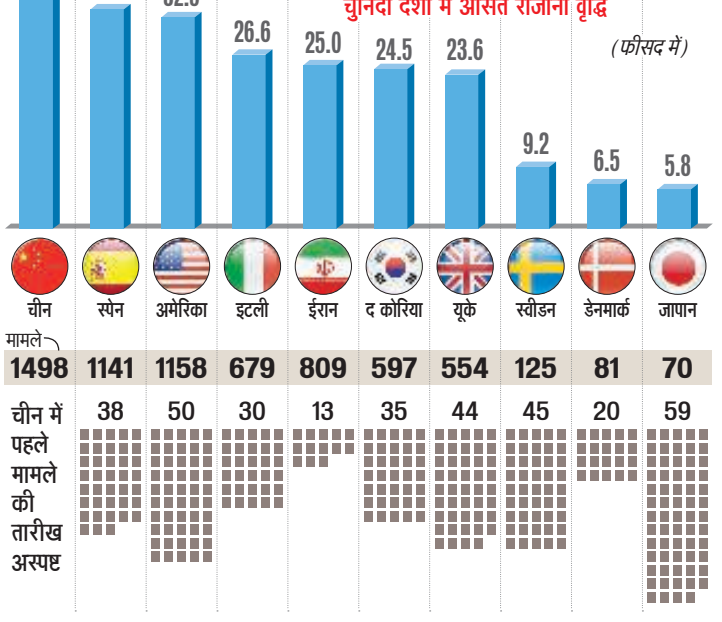

मौजूदा वृद्धि दर पर केरल और महाराष्ट्र में मामले

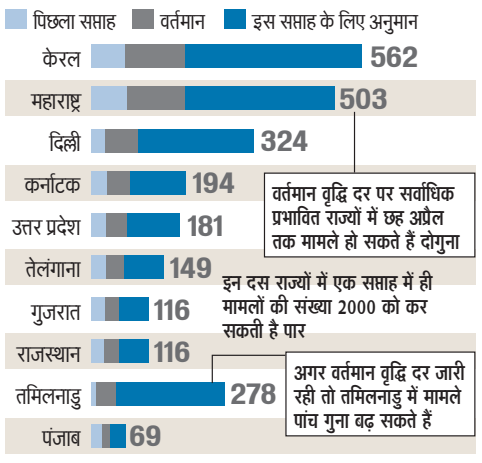

शुरुआती संक्रमण फैलाव का सबसे तेज दौर

हांगकांग के एक अस्पताल में 23 कोविड-19 मरीजों का अध्ययन बताता है कि ये बीमारी मनमाने ढंग से कैसे प्रसार कर सकती है

शुरुआती दशा में सर्वाधिक वायरल लोड: अध्ययन में पाया गया कि मरीज में शुरुआती लक्षण के समय सर्वाधिक वायरल लोड पाया गया। वायरल लोड का आशय किसी संक्रमित व्यक्ति में कुल वायरसों की संख्या है। बाद में इन वायरसों की संख्या कम होने लगती है।

कितना तेज प्रसार: शुरुआती चरण में व्यक्ति में वायरल लोड उच्चतम स्तर पर होता है। इसका सीधा सा मतलब है कि इस कैरियर में गंभीर लक्षण नहीं होते है फिर भी सर्वाधिक वायरस इसके भीतर होते हैं। लिहाजा कम्युनिटी ट्रांसमिशन में ऐसे व्यक्ति सबसे बड़ा खतरा साबित होते हैं।

हमेशा रखें एहतियात: रिपोर्ट इस पर लगातार हाथ धोते रहने के साथ ही सेल्फ आइसोलेशन में जाना होगा।

अपनी प्रजाति से अलग है यह वायरस: नोवेल कोरोना वायरस एनफ्लूएंजा के वायरस सरीखा है जिसमें शुरुआती चरण में ही संक्रमण फैलाने की क्षमता होती है। हालांकि यह सार्स या मर्स से अलग होता है जिनका उच्चतम वायरल लोड सात-दस दिन के बाद ही दिखता है।

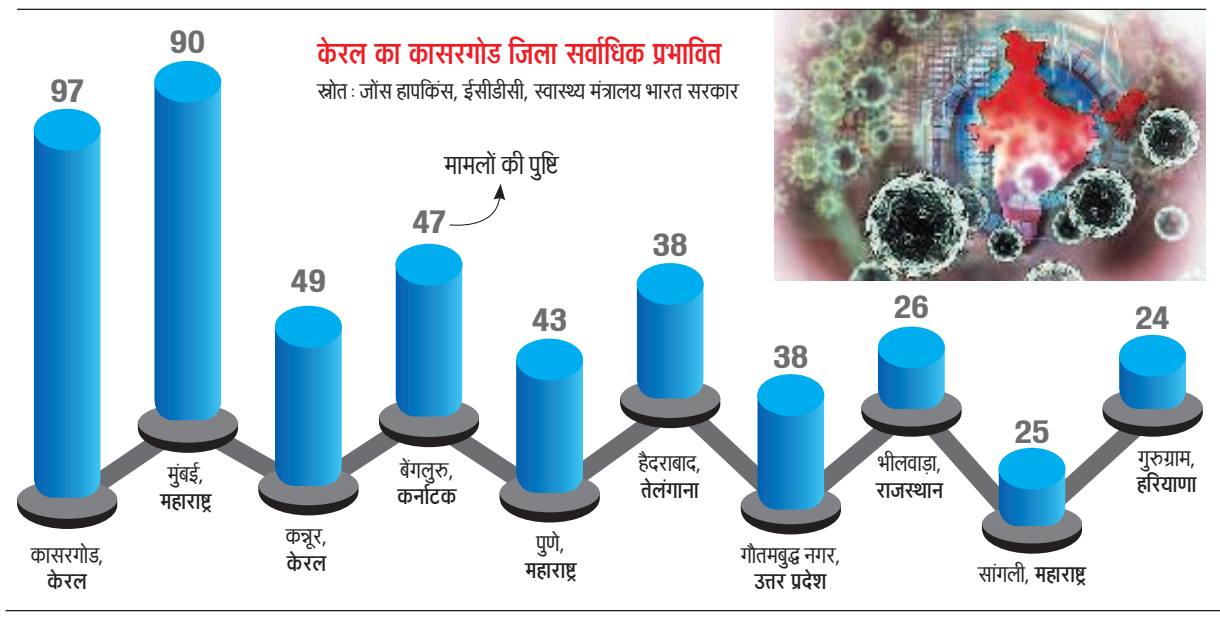

कतर से आए युवक की लापरवाही ने परिजनों को संकट में डाला

रजिया नूर, श्रीनगर : खाड़ी देश कतर में आटोमोबाइल कंपनी में काम करने वाला उत्तरी कश्मीर के बांडीपोरा जिले के अजस गांव का 27 वर्षीय एक युवक जब भी छुट्टियों पर घर आता था तो पूरा वक्त परिवार के साथ बिताता था। इस बार ऐसा नहीं हुआ। वह कतर से आने के बाद यहां अपने घर में टिककर नहीं बैठा। वह कभी अपने किसी रिश्तेदार के घर तो कभी किसी दोस्त के पास ठहरता रहा। इस डर से कि उसे आंगनबाड़ी, स्वास्थ्य केंद्र या फिर पुलिस थाने में हाजिरी देने न देना पड़े। दुनिया में कोरोना वायरस की महामारी फैलने के दौरान यह युवक 12 मार्च को घाटी वापस आया था। तब वह बिल्कुल स्वस्थ महसूस कर रहा था। एयरपोर्ट पर उसकी स्क्रीनिंग भी हुई। इसके बाद सीधे अजस गांव में अपने घर पहुंचा। इसी बीच घाटी में कोरोना ने दस्तक दी और संक्रमण के मामले उभरने लगे। इधर, प्रशासन ने एलान किया कि देश व दुनिया के अन्य हिस्सों से आए लोग अपनी ट्रेवल हिस्ट्री सार्वजनिक करें।

संक्रमण से बंगाल में एक और मौत, राज्य में अब तक तीन लोगों की गई जान

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

कोरोना संक्रमण से बंगाल में मंगलवार को एक की मौत हो गई। राज्य में मरने वालों की संख्या तीन पहुंच गई है। स्वास्थ्य विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि वह महिला हाल में राज्य के उत्तरी हिस्से की यात्रा पर गई थी। अधिकारी ने कहा, जांच के परिणाम आने से पहले, सोमवार रात को उसकी मौत हो गई । जांच में पता चला कि वह कोरोना वायरस से संक्रमित थी। बंगाल में कोरोना वायरस के 5 नए मामले सामने आने के साथ राज्य में कोविड-19 संक्रमितों की कुल संख्या 27 हो गई है।

तीनों लोगों के बारे में कहा जा रहा है कि उनके विदेश या किसी दूसरे राज्यों की हाल में यात्रा करने की कोई हिस्ट्री नहीं है। इनमें एक हुगली, एक कोलकाता और बारानगर निवासी है। फिलहाल प्रशासन व स्वास्थ्य विभाग के लिए इस बात का पता लगाना सबसे बड़ी चुनौती हो गई है कि आखिर यह लोग कैसे और किससे संक्रमित हुए।

बिहार में एक और पॉजिटिव, अब तक 16 लोग संक्रमित

जागरण टीम, पटना : बिहार में कोरोना का एक और पॉजिटिव मरीज मिला है। अगमकुआं स्थित राजेंद्र स्मारक चिकित्सा विज्ञान अनुसंधान संस्थान (आरएमआरआइ) में मंगलवार को कोरोना संदिग्ध 135 लोगों के नमूनों की जांच की गई। निदेशक डॉ. प्रदीप दास ने बताया कि इनमें से गोपालगंज के 30 वर्षीय युवक की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई है, जबकि 134 की रिपोर्ट निगेटिव है। बिहार में अभी तक 16 संक्रमित मिले हैं। युवक दुबई में कारपेंटर का काम करता था। वह हाल ही में विदेश से लौटा है। इस युवक को भी संक्रामक रोग अस्पताल स्थित आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है।

जम्मू-कश्मीर में छह नए मरीज मिले

राज्य ब्यूरो, जम्मू

जम्मू-कश्मीर में कोरोना वायरस से संक्रमित होने वालों का आंकड़ा 50 के पार चला गया है। मंगलवार को कश्मीर में छह और लोगों में संक्रमण की पुष्टि हुई है। इनमें एक 10 साल का बच्चा भी शामिल है।

जम्मू-कश्मीर में कोरोना वायरस से पीड़ित मरीजों की संख्या 55 हो गई है। इसमें से दो की मौत हो चुकी है, जबकि दो ठीक भी हुए हैं और उन्हें घरों में क्वारंटाइन में भेज दिया गया है। प्रदेश सरकार के प्रवक्ता रोहित कंसल के अनुसार, मंगलवार को जिन छह मरीजों में संक्रमण की पुष्टि हुई है, उनमें दो बेमिना (श्रीनगर), एक ईदगाह (श्रीनगर), एक बड़गाम और दो हाजिन (बांडीपोरा) के हैं। सभी पहले से पॉजिटिव आए मरीजों के संपर्क में थे। इनमें एक दस साल का बच्चा भी है। यह बच्चा भी कुछ दिन पहले संक्रमित हुए व्यक्ति के संपर्क में था। बच्चे के पिता ने डॉक्टरों पर आरोप लगाया है कि उसके बच्चे के इलाज में लापरवाही बरती गई है। उन्होंने कहा कि उनका बच्चा 23 मार्च को पॉजिटिव आए व्यक्ति के संपर्क में था। 28 मार्च को बच्चे में लक्षण भी नजर आने लगे थे। वह अपने बेटे को लेकर पहले एसएमएचएस अस्पताल में गए, जहां से डॉक्टरों ने उसे छाती रोग से जुड़े अस्पताल में भेज दिया। जब उन्होंने इस अस्पताल के डाक्टरों को बच्चे की हिस्ट्री बताई तो डाक्टरों ने उसे रैनावाड़ी स्थित जेएलएनएम अस्पताल में रेफर कर दिया।

इस अस्पताल के डाक्टरों ने शेर-ए-कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेस में रेफर किया। यहां के डाक्टरों ने सैंपल लेकर हमें घर भेज दिया और बच्चे को आइसोलेशन में रखने को कहा। अब उनका बच्चा पॉजिटिव आया है। उन्हें संदेह है कि घर के अन्य सदस्यों में भी संक्रमण हो सकता है। उन्होंने इस पूरे मामले की जांच करवाने की मांग की। कश्मीर में अब तक तीन बच्चे संक्रमित हो चुके हैं। पहले दो संक्रमित बच्चों की आयु सात माह और आठ वर्ष है।

यह है स्थिति

संक्रमित	55 (कश्मीर 43,जम्मू :12)
मौत	02
ठीक	2

सिरसा में मासूम भी चपेट में

जागरण संवाददाता, रोहतक : पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस (पीजीआइएमएस) में मंगलवार को कोरोना वायरस के दो और पॉजिटिव मामले सामने आए हैं। जांच में छह साल की बच्ची और आठ साल के बच्चे की रिपोर्ट पॉजिटिव पाई गई है। चिकित्सकों का कहना है कि दोनों अभी सिरसा के अस्पताल में आईसोलेशन वार्ड में भर्ती हैं। दोनों के सैंपल मंगलवार सुबह पीजीआइ में जांच के लिए भेजे गए थे। शाम को जारी रिपोर्ट में दोनों को संक्रमित होने की पुष्टि हुई। इससे पहले सोमवार की देर रात भी यहां एक महिला के पॉजिटिव होने की पुष्टि हुई थी। अब यहां मरीजों की संख्या संख्या तीन हो गई है। सिरसा में लगातार बढ़ती मरीजों की संख्या के कारण अब स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को अंकुश लगाना टेढ़ी खीर साबित होने वाला है।

किरकिरी के बाद भी नहीं सुधरे, फिर लोगों पर मारी केमिकल की धार

जागरण संवाददाता, बरेली

उप्र स्थित बरेली के सैटेलाइट बस अड्डे पर यात्रियों को सैनिटाइज्ड करने का मामला अभी शांत नहीं हो पाया कि मंगलवार को जिला अस्पताल को सैनिटाइज्ड करने पहुंची नगर निगम की टीम ने निकल रहे लोगों पर केमिकल की बौछार की। लोग सचेत थे। उन्होंने भागकर खुद को स्प्रे से अलग किया।

ऐसा ही कारनामा विगत रविवार को सैटेलाइट बस अड्डे पर अंजाम दिया गया था, जिसके वीडियो वायरल होने से अफसरों की फजीहत हुई थी। ऐसा करने वाले कर्मचारियों पर कार्रवाई भी होने जा रही है। इस बीच मंगलवार को नगर निगम की टीम ने फिर लापरवाही का सुबूत दिया। जिला अस्पताल को सैनिटाइज्ड करने के बाद नगर निगम की टीम ने साइकिल स्टैंड, अस्पताल के गेट, खिड़की को सैनिटाइज्ड करने के दौरान वहां से निकल रहे मरीज और तीमारदारों पर भी केमिकल का छिड़काव कर दिया। जबकि डॉक्टरों का स्पष्ट कहना है कि सोडियम हाइपो क्लोराइट दवा मिलाकर किया जाने वाला छिड़काव आंखों और त्वचा के लिए हानिकारक है। यही वजह रही कि सैटेलाइट पर ऐसा होने के बाद कांग्रेस महासचिव प्रियंका वाड्रा, पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और मायावती ने ट्वीट कर इसकी निंदा की थी। तब डीएम ने जांच बैठाई थी। दोषियों पर कार्रवाई की बात कही थी।

हरियाणा में सड़कों के साथ रेलवे बॉर्डर भी सील

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़ : हरियाणा में कोरोना के विरुद्ध दमदार तरीके से लड़ रही राज्य सरकार किसी तरह का जोखिम लेने के मूड में नहीं है। राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में सभी अंतरराज्यीय सीमाओं पर बने नाकों पर सख्ती के साथ चेकिंग करने की जरूरत पर जोर दिया गया तो साथ ही रेलवे ट्रैक के आसपास पुलिस बल तैनात करने पर सहमति बनी है, ताकि दूसरे राज्यों के लोग रेलवे पटरी के किनारे-किनारे हरियाणा में प्रवेश न कर सकें।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में हुई हरियाणा मंत्रिमंडल की बैठक में पुलिस व स्वास्थ्य विभाग के साथ-साथ शहरी निकाय तथा चिकित्सा विभाग की कार्यप्रणाली पर संतोष जाहिर किया गया। साथ ही लोगों से अनुरोध किया गया है कि यदि उन्होंने लॉकडाउन का अनुपालन नहीं किया तो मजबूरी में सरकार को सख्ती से पेश आना पड़ेगा।

बैठक में तय हुआ कि किसी भी बाहरी व्यक्ति को हरियाणा में इंट्री न करनी दी जाए। राज्य में जितने भी शेल्टर होम बनाए गए हैं, वहां डीसी दौरा करें तथा उनमें ठहरे लोगों को किसी तरह की दिक्कत न आए। इन शेल्टर होम में अब टीवी भी लगेंगे, ताकि लोगों को पूरे दिन बोरियत महसूस न हो सके। बैठक में रेलवे ट्रैक के आसपास पुलिस तैनात करने के निर्देश डीजीपी को दिए गए, ताकि वह सभी जिलों के एसपी को इस बारे में निर्देश दे सकें।

हरियाणा कैबिनेट की बैठक में भाग लेने के बाद जब गृह मंत्री अनिल विज चंडीगढ़ से अपने अंबाला छावनी आवास पर लौट रहे थे, तब उन्होंने शंभू बॉर्डर पर देवीनगर में लगे नाके की चेकिंग की। उस समय वहां सात पुलिसकर्मी तैनात थे। अनिल विज ने जीटी रोड पर बने नाके पर इन कर्मचारियों की संख्या को काफी कम बताया। विज ने टेलीफोन के जरिये अंबाला के एसपी से बात की और निर्देश दिए कि कर्मचारियों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए।

कनिका कपूर के माता-पिता का दोबारा होगा टेस्ट

जागरण संवाददाता, लखनऊ : संक्रमित महिला चिकित्सक की सास में कोरोना पॉजिटिव आने पर स्वास्थ्य विभाग सतर्क हो गया है। हेल्थ टीम ने गायिका कनिका के क्लोज कांटैक्ट में आए लोगों की दोबारा मॉनीटरिंग शुरू कर दी है। सबसे पहले गायिका के माता-पिता का सैंपल जांच के लिए दोबारा भेज गया है। दरअसल, लखनऊ के गोमती नगर निवासी राजधानी की पहली कोरोना मरीज ठीक हो गई है। उसके परिवारजन की पहली बार में जांच निगेटिव आई थी।

सोमवार को महिला की सास में कोरोना वायरस की पुष्टि हुई है। ऐसे में सीमएओ की टीम ने कमांड हॉस्पिटल में भर्ती बुजुर्ग महिला के परिवार के चार सदस्यों को बेस अस्पताल में क्वारंटाइन कराने का निर्देश दिया। इसी के बाद कनिका के संपर्क में आए लोगों की सूची खंगाली गई। सभी से फोन पर स्वास्थ्य की जानकारी ली गई।

ओमान से लौटे ग्रामीण की मौत, पूरा गांव क्वारंटाइन

संवाद सूत्र, चतरा : ओमान से लौटे झारखंड के चतरा के मयूरहंड थाना क्षेत्र के महेशा गांव निवासी अब्दुल अली के निधन के बाद मंगलवार को जिला प्रशासन ने पूरे गांव को क्वारंटाइन कर दिया है। 50 वर्षीय अब्दुल अली जनवरी माह में ओमान से गांव लौटे थे। गांव लौटने के बाद से ही उनकी सेहत ठीक नहीं थी। सोमवार को अचानक तबीयत ज्यादा खराब हो गई। घर वाले बेहतर इलाज के लिए उन्हें हजारीबाग लेकर जा रहे थे कि रास्ते में उनकी मौत हो गई। मौत की खबर रात में ही गांव में आग की तरह फैल गई। ग्रामीण दहशत में आ गए और इसकी जानकारी मुखिया को दी।

जिला प्रशासन को जानकारी मिलने के बाद उपायुक्त जितेंद्र कुमार सिंह के निर्देश पर सिविल सर्जन डॉ. अरुण कुमार पासवान ने एक टीम का गठन कर शव से स्वाब लेकर रिम्स भेजने का निर्देश दिया।

नेपाल सीमा पर फंसे हुए हैं बिहार व उत्तर प्रदेश के लोग

काठमांडू, एएनआइ : भारत-नेपाल सीमा पर रक्सौल-बीरगंज सीमा पर बिहार और उत्तर प्रदेश के हजारों लोग फंस गए हैं। कोविड-19 का संक्रमण रोकने के लिए दोनों देशों में लॉकडाउन लागू है जिससे दोनों तरफ पर्यटक और मजदूर फंस गए हैं। यातायात बंद रहने के कारण दोनों देशों की सीमा पर स्थित महाकाली नदी पार करने का प्रयास कर रहे तीन नेपाली नागरिकों को गिरफ्तार कर लिया गया। उत्तराखंड के धारचुला और पिथौरागढ़ जिले में 500 नेपाली नागरिक चार दिनों से फंसे हुए हैं। शुक्रवार की रात नेपाली अधिकारियों ने सीमा पर स्थित झूलते पुल का गेट खोल 225 नेपाली नागरिकों को धारचुला से निकाल लिया।

कोरोना वायरस के बढ़ते खतरे के कारण रोकथाम के कदम के तहत भारतीय अधिकारियों ने किसी को भी अपने क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति नहीं दी। इस कारण नो मैंस लैंड पर कई लोग 30 घंटे से फंसे हैं। 16 मार्च को भारत ने अपनी सीमा सील कर दी और बिहार में विदेशी नागरिकों का प्रवेश रोक दिया। पंद्रह दिनों के लिए बस सेवा निलंबित कर दी।

स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा कि सीमा पर 49 पारगमन स्थलों में से एक जगह एक संक्रमित रोगी मिला है। अधिकारियों ने कहा कि नेपाल से सटे जिलों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। वहां पारगमन स्थलों की गहरी निगरानी की जा रही है।

इस बीच मंत्रिमंडल की बैठक में नेपाल सरकार ने रविवार को अपना राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन और एक सप्ताह तक बढ़ाने का फैसला लिया है। सात अप्रैल की मध्य रात्रि तक नेपाल में लॉकडाउन लागू रहेगा। इस कारण भारतीय प्रवासियों को भोजन जुटाने आदि में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की वजह से बड़ी संख्या में उत्तर प्रदेश और बिहार के श्रमिक नेपाल सीमा पर फंस गए हैं। नेपाल ने भी अपने यहां लॉकडाउन सात अप्रैल तक बढ़ा दिया है। यह तस्वीर बीरगंज-रक्सौल भारत-नेपाल सीमा की है। एएनआइ

अपने देश से खफा नेपालियों ने कहा, भारत में ही रहेंगे

जागरण संवाददाता, पिथौरागढ़ : सीमा पर फंसे अपने लोगों को लेने में कतरा रहे नेपाल से गुस्साए नेपालियों से मंगलवार को पिथौरागढ़ के डीएम ने सीमा पर जाकर बात की और कहा कि जब तक नेपाल उन्हें लेने को तैयार नहीं होता, तब तक वह भारतीय सीमा पर तैयार किए गए राहत केंद्रों में ही रहें। डीएम ने उनको अपने हाथ से खाना परोस कर भी खिलाया और हरसंभव मदद की बात कही। अपने देश से गुस्साए नेपालियों ने डीएम को भरोसा दिया कि वह यहीं रहेंगे और व्यवस्था में पूरा सहयोग देंगे। कोरोना के संक्रमण के चलते भारत-नेपाल सीमा सील है। इधर, भारत में काम करने वाले नेपाली श्रमिकों का नेपाल जाने के लिए सीमा पर पहुंचने का सिलसिला बना हुआ है। इस वक्त धारचूला में बने अंतरराष्ट्रीय झूलापुल पर करीब छह सौ नेपाली श्रमिक पहुंचे हुए हैं। जिसमें सोमवार को नेपाल सरकार द्वारा गेट न खोलने पर इन लोगों ने नेपाल की ओर पथराव तक कर दिया था। नेपाली मजदूरों के तेवरों को देखते हुए मंगलवार को जिले के डीएम डॉ. वीके जोगदंडे और पुलिस अधीक्षक प्रीति प्रियदर्शिनी जौलजीबी, बलुवाकोट और धारचूला पहुंचे। तीनों स्थानों पर इन लोगों को ठहराने के लिए राहत केंद्र बनवाए हैं।

सरकार ने घर पर मास्क बनाने का तरीका बताया

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय की तरफ से लोगों को घर पर मास्क बनाने का तरीका बताया गया है। एक मैनुअल जारी कर लोगों को पुरानी बनियान, टी-शर्ट और रुमाल की मदद से प्रभावी मास्क बनाने की जानकारी दी गई है। यह मास्क वायरस के प्रसार को 70 प्रतिशत तक रोकने में कारगर है।

कोरोना के प्रसार को रोकने की दिशा में सरकार लगातार लोगों को यह संदेश दे रही है कि मास्क लगाकर रहें। मास्क लगाए रहने से किसी संक्रमित की छींक या खांसी से हवा में फैले वायरस को अपनी सांस तक पहुंचने से रोकना संभव है। विशेष रूप से भीड़भाड़ वाली जगहों पर रहने वालों को अनिवार्य तौर पर मास्क लगाना चाहिए। मैनुअल में कहा गया है कि मास्क को नियमित तौर पर पानी, साबुन और एल्कोहल आदि से साफ करते रहना चाहिए। मैनुअल के मुताबिक, '100 प्रतिशत कॉटन के कपड़े की दो परत बेहद छोटे कणों को रोकने में सर्जिकल मास्क की तुलना में 70 प्रतिशत तक कारगर है। इससे आसानी से सांस ली जा सकती है और ऐसे कपड़े आसानी से घरों में मिल भी जाते हैं। ऐसे मास्क का दोबारा प्रयोग करना भी संभव है।' इस मैनुअल का उद्देश्य है कि विभिन्न एनजीओ व व्यक्तिगत रूप से भी लोग मास्क बना सकें और लोगों में मास्क लगाने की आदत बने। एक विश्लेषण के मुताबिक, अगर 50 प्रतिशत लोग मास्क लगाकर रहें तो केवल 50 प्रतिशत लोग ही वायरस से सुरक्षित रह सकते हैं। वहीं अगर 80 प्रतिशत लोग मास्क लगाने लगें तो वायरस के संक्रमण की कड़ी को तुरंत रोका जा सकता है।

- घर पर आसानी से मिलने वाले कपड़ों से बनेगा मास्क
- वायरस के प्रसार को रोकने में 70 प्रतिशत तक कारगर

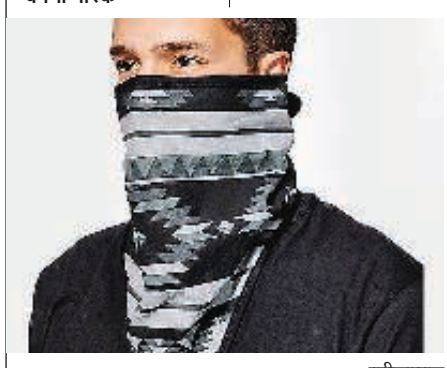

प्रतीकात्मक

बरतें सावधानी

मास्क बनाने से पहले कपड़े को अच्छी तरह धोएं और कम से कम पांच मिनट उबालें। उबालते समय पानी में नमक भी डाल लें। मास्क को रोजाना धोना और पानी में उबालना चाहिए। बिना साफ किए मास्क को दोबारा इस्तेमाल करने से संक्रमण का खतरा रहता है।

लॉकडाउन में बोरियत दूर करने के लिए ना लें तंबाकू-शराब का सहारा

नई दिल्ली, प्रेट्र : देश में कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों के बीच स्वास्थ्य मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि लॉकडाउन में बोरियत दूर करने के लिए तंबाकू और शराब जैसे नशीले पदार्थों का इस्तेमाल ना करें। इससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता तो कम हो ही सकती है मानसिक सेहत भी बिगड़ सकती है।

मंत्रालय ने लोगों से यह भी आग्रह किया है कि संक्रमण से प्रभावित लोगों के साथ अछूत जैसा बर्ताव नहीं करें। मंत्रालय की तरफ से जारी बयान में कहा गया है, 'अगर आपको लगता है कोई व्यक्ति संक्रमित है तो उसे एहतियात बरतने की सलाह दें और जरूरी हो तो मेडिकल सहायता लेने के तौर तरीके बताएं।'

स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि जिसे नशे की लत है, उसे अवसाद की स्थिति में पेशेवरों की मदद लेनी चाहिए। लॉकडाउन की अहमियत का उल्लेख करते हुए मंत्रालय ने कहा है कि इसका फैसला इसलिए किया गया है ताकि वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में न फैले और हमारी और दूसरों की इससे रक्षा हो। इसका मतलब है कि आवश्यक सामान की खरीदारी करने के लिए ही घरों से बाहर निकलें। कम से कम बाहर निकलें और जरूरी काम होने पर परिवार का कोई स्वस्थ सदस्य ही बाहर जाए।

मंत्रालय ने कहा है कि कोरोना वायरस से संक्रमित होने के बाद भी डरने की जरूरत नहीं है। ज्यादातर संक्रमित लोग पूरी तरह से ठीक हो जाते हैं। खुद को आइसोलेशन में रखें और डॉक्टर द्वारा दी गई दवा लेते हैं।

यह भी कहा गया है कि हर वक्त इस तरह की बातें नहीं करें कि हम बीमार पड़ जाएंगे। बल्कि उनके बारे में जानकारी हासिल करें जो संक्रमण से पूरी तरह से स्वस्थ हो चुके हैं।

- नशा करने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है कम
- अंदर से मजबूत व्यक्ति का कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा कोरोना

1918 की तरह कोरोना वायरस से मुकाबला करेगा देश

जागरण संवाददाता, अलीगढ़

102 साल पहले स्पेनिश फ्लू से हुई थी भारत में दो करोड़ लोगों की मौत

दुनिया के कोने-कोने में फैले कोरोना वायरस से लोग भयभीत हैं। हजारों लोग जान गंवा चुके हैं। कोरोना वायरस के संक्रमण से सामाजिक ढांचे में बदलाव की भी खबरें आने लगी हैं। वहीं, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के समाज विज्ञानियों ने कहा है कि भारत का सामाजिक ढांचा बहुत मजबूत है। कोरोना वायरस इसकी जड़ भी नहीं हिला सकता। कोरोना से देश उसी तरह मुकाबला करेगा, जैसे 1918 में स्पेनिश फ्लू से किया था। तब भारत में करीब दो करोड़ लोगों की मौत हुई थी।

एएमयू के समाज शास्त्र विभाग में चेयरमैन प्रो. अब्दुल वहीद के अनुसार, 70 फीसद हिंदुस्तान गांवों में बसता है। वहां लॉकडाउन का ज्यादा असर नहीं है। गांव के लोग इस बात का भी ख्याल रखते हैं कि बाहर का आदमी न आने पाए। खेती के साथ जानवरों का भी ख्याल रखते हैं। फसल काटने का भी समय आ गया है। छोटे शहरों में इसका असर ज्यादा नहीं होगा। बड़े शहरों में अधिक परेशानी है, लेकिन देश में सामाजिक समस्या आने वाली नहीं है। 1918 से 1920 में स्पेनिश फ्लू का संक्रमण हुआ था। तब देश में दो करोड़ लोग मारे गए थे। संक्रमण का कारण प्रथम विश्व युद्ध में शामिल होकर विदेश से लौटे सैनिकों को माना गया था। तब आजादी का आंदोलन भी चरम पर था, लेकिन सबकुछ सामान्य हो गया। कोरोना के संकट से भी भारत निकल जाएगा। संक्रमण से बचने के लिए आज भले ही हम शारीरिक दूरी के नियम का पालन कर रहे हैं। इस संकट से निकलने बाद बड़ों के पैर छूकर आशीर्वाद लेने व गले मिलने की परंपरा फिर भी कायम रहेगी। एएमयू के ही समाजशास्त्र विभाग में प्रोफेसर मोहम्मद अकरम भी यही मानते हैं। उनका कहना है कि कोरोना वायरस हमारे सामाजिक ढांचे को कमजोर नहीं कर सकता। समाज परिवार का ही एक रूप होता है, वो ऐसे ही कायम रहेगा।

मुंबई के आसपास खड़े जहाजों पर भी बनेंगे क्वारंटाइन वार्ड

राज्य ब्यूरो, मुंबई

- महाराष्ट्र में कोरोना रोगियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए किया गया फैसला

मुंबई महानगरपालिका आयुक्त ने शहर की खाली पड़ी इमारतों एवं सार्वजनिक स्थलों के साथ-साथ मुंबई के आसपास खड़े पानी के जहाजों को भी क्वारंटाइन वार्ड बनाने के लिए अधिग्रहण करने का निर्णय लिया है। यह फैसला महाराष्ट्र में कोरोना रोगियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए किया गया है। महाराष्ट्र में 24 घंटे में कोरोना के 77 नए रोगियों की पहचान हुई है। इनमें 59 मुंबई के हैं।

मुंबई मनपा आयुक्त प्रवीण परदेशी ने महानगरपालिका के सभी वार्डों के सहायक आयुक्तों को आदेश दिए हैं कि वे अपने क्षेत्रों में खाली पड़ी इमारतों, लॉज, होटल, धर्मशाला, क्लब, प्रदर्शनी केंद्र, कॉलेज, हॉस्टल, डॉरमेट्री, जिमखाना, बैंक्वेट हॉल, शादी के हॉल सहित समुद्र में खड़े पोत एवं अन्य निजी जहाजों का भी तत्काल प्रभाव से अधिग्रहण कर लें। आवश्यकता पड़ने पर इन सारे स्थानों का उपयोग उन लोगों के लिए क्वारंटाइन वार्ड बनाने के लिए किया जाए, जो किसी कोविड-19 संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आए हैं, लेकिन अभी उनमें इसके लक्षण नहीं दिखाई दे रहे हैं।

इन स्थानों पर भोजन एवं अन्य जरूरी सामान की आपूर्ति भी मनपा सहायक आयुक्तों के जिम्मे ही होगी। यह कदम अत्यंत घनी आबादी में रह रहे लोगों में इस बीमारी का प्रसार रोकने के लिए उठाया गया है।

बता दें कि महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटों के अंदर ही 77 नए रोगियों की पहचान होने से राज्य में कोरोना पीड़ितों की संख्या 302 पर पहुंच गई है। अचानक बढ़ी संख्या ने राज्य प्रशासन को चिंता में डाल दिया है।

अमेरिका ने विकसित किया सस्ता वेंटिलेटर

ह्यूस्टन, प्रेट्र : अमेरिका में कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच टेक्सास विश्वविद्यालय ने एक स्वचालित, हाथ में पकड़े जा सकने वाला वेंटिलेटर विकसित किया है। पारंपरिक वेंटिलेटर के मुकाबले इसकी कीमत भी बहुत कम है। इस बैग वाल्व मास्क में लगे इलेक्ट्रानिक उपकरण को इस तरह प्रोग्राम किया गया है यह बार बार स्वचालित रूप से पंप होता रहता है।

राइस यूनिवर्सिटी की टीम ने डॉक्टरों और अन्य वैज्ञानिकों की मदद से इस वेंटिलेटर को विकसित किया है। ● स्रोत ट्विटर

अमेरिकी रक्षा विभाग भी हुआ मुरीद

प्रोफेसर वेटरग्रीन ने कहा कि हमारे उपकरण से रक्षा विभाग भी प्रभावित है। इधर-उधर ले जाने में आसान होने के कारण यह सबका ध्यान आकर्षित कर रहा है। उम्मीद रक्षा विभाग भविष्य में इसे नौसेना में इस्तेमाल करने की इजाजत दे सकता है।

हाथ में लेकर भी लिया जा सकता है काम

इस वेंटिलेटर को विकसित करने वाली टीम के सदस्य प्रोफेसर वेटरग्रीन ने बताया कि यह बिजली से चलने वाला स्वचालित उपकरण है। यह उन लोगों के लिए नहीं जिनकी हालत बहुत गंभीर है, बल्कि उनके लिए है जिनको सांस लेने में दिक्कत है। इन मास्क को मरीजों को राहत देने के लिए इमरजेंसी मेडिकल स्टाफ हाथ में भी लेकर चल सकता है। लेकिन, हाथ से इसे कुछ मिनट तक ही दबाया जा सकता है। जिन मरीजों की हालत में सुधार हो रहा हो, उन्हें पारंपरिक वेंटिलेटर से हटाकर इस उपकरण पर शिफ्ट किया जा सकता है।

वेंटिलेटर की बढ़ी मांग का नतीजा

अमेरिका में इस बीमारी का व्यापक प्रकोप होने से अस्पतालों में संसाधनों की किल्लत हो गई है। मरीजों की भारी तादाद के आगे वेंटिलेटर भी बहुत कम पड़ रहे हैं। मेडिकल उपकरण बनाने वाली फिलिप्स समेत कई कंपनियों ने अपनी सप्लाई बढ़ाने के लिए कमर कसी है। लेकिन, जिस तेजी से मरीज बढ़ रहे हैं और इन उपकरणों की आपूर्ति शायद नहीं हो पाएगी। इस सूरत में यह उपकरण बड़े काम का साबित हो सकता है।

राइस विवि व मीट्रिक टेक्नोलाजीस का साझा उपक्रम

टेक्सास स्थित राइस यूनिवर्सिटी और कनाडा की वैश्विक हेल्थ डिजाइन फर्म मीट्रिक टेक्नोलाजीस ने मिलकर स्वचालित बैग वाल्व मास्क वेंटिलेशन यूनिट तैयार की है। इसकी लागत 300 डॉलर से भी कम है। मरीजों के इलाज के दौरान यह बहुत कारगर है। दुनिया भर में इसे ऑनलाइन बिक्री के जरिये उपलब्ध कराने की दिशा में दोनों संस्थाएं योजना तैयार कर रही हैं।

नासा व केनेडी को सम्मान देने के लिए टीम को दिया अपोलो नाम

यह उपकरण विकसित करने वाली टीम को 'अपोलो बीवीएम टीम' का नाम दिया गया। बेयर कॉलेज के इमरजेंसी मेडिसिन विभाग, राइस यूनिवर्सिटी में बायोइंजीनियरिंग विभाग और मीट्रिक टेक्नोलाजीस से संबद्ध भारतीय मूल के रोहित माल्या न यह नाम दिया है। उन्होंने राइस विवि के नासा से पुराने रिश्तों व पूर्व राष्ट्रपति राष्ट्रपति जेएफ केनेडी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए ऐसा किया।

दो साल पहले दी थी प्रेरणा

इस उपकरण को विकसित करने के लिए रोहित माल्या ने यूनिवर्सिटी के छात्रों को दो साल पहले प्रेरणा दी थी। रोहित ने थाइलैंड में क्वाई रिवर क्रिश्चियन अस्पताल में परिचारकों को मरीजों को घंटों तक बैग मास्क से सांस देते देखा था। जिसके बाद उनके दिमाग में स्वचालित वेंटिलेटर बनाने का विचार आया था। (स्रोत-प्रेट्र)

आठवां नवरात्र

नियमों का पालन करें, माता वैष्णो देवी कल्याण करेंगी

देवी पूजा घर में

जासं, कटड़ा : कोरोना वायरस के बढ़ते खतरे के बीच विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल माता वैष्णो देवी के मुख्य पुजारी अमीर चंद ने लोगों से अपील की कि सरकार की ओर से जारी किए गए नियमों का पूरी तरह पालन करें। इस समय माता वैष्णो देवी के भवन पर कोरोना वायरस से पूरे विश्व को मुक्ति दिलाने के लिए विशेष प्रार्थना की जा रही है। कहा, यह समय संकट की घड़ी जरूर है, लेकिन घबराने की जरूरत नहीं। नवरात्र चल रहे हैं, हमें पूरी उम्मीद है कि मां वैष्णो देवी सभी का कल्याण करेंगी।

मुख्य पुजारी ने कहा कि देश से कोरोना वायरस का भय और कोहराम तभी खत्म होगा जब सभी नियमों का पालन करेंगे। सभी अपने-अपने घरों में ही रहें और अपने परिवार को जागरूक करने के साथ ही अन्य लोगों को भी सचेत करें। उन्होंने कहा कि वैष्णो देवी की यात्रा बंद है, लेकिन भवन पर सुबह और शाम होने वाली दिव्य आरती में विशेष पूजा-अर्चना की जा रही है, ताकि मां की कृपा सभी पर बने रहे। इसके अलावा भवन पर जारी शतचंडी महायज्ञ में भी देश के साथ पूरे विश्व को कोरोना वायरस से मुक्ति दिलाने के लिए आहुतियां डालकर मां भगवती से प्रार्थना की जा रही है। भवन पर भी सभी पुजारी सरकार की ओर से जारी दिशा-निर्देशों का पूरा पालन करते हैं। आप भी कीजिए।

मां वैष्णो देवी के मुख्य पुजारी अमीर चंद ● जागरण

श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की ओर से दिव्य आरती और शतचंडी महायज्ञ का लाइव प्रसारण करने की व्यवस्था भी की गई है, ताकि घर बैठकर श्रद्धालु इसमें शामिल हो सकें और एक साथ पूरा देश मां से विश्व कल्याण की प्रार्थना कर सकें।

टीवी पर रामायण और महाभारत के बाद अब चाणक्य की बारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- अपने पुराने मोतियों से फिर निखरा दूरदर्शन, इस हफ्ते से उपनिषद गंगा व शक्तिमान भी दिखाया जाएगा

कोरोना लॉकडाउन में लोगों को घरों में ही भरपूर मनोरंजन का जरिया उपलब्ध कराने की पहल के तहत रामायण और महाभारत धारावाहिकों की दूरदर्शन पर वापसी ने अचानक बड़ी संख्या में दर्शकों को डीडी चैनलों की ओर मुखातिब कर दिया है। इन दोनों पौराणिक धारावाहिकों के साथ कुछ दूसरे पुराने लोकप्रिय सीरियलों की लोकप्रियता को देखते हुए प्रसार भारती अगले दो-तीन दिनों में दूरदर्शन के सुनहरे दौर के करीब आधा दर्जन और चर्चित धारावाहिकों का प्रसारण करने जा रही है।

सूचना-प्रसारण मंत्रालय की हरी झंडी मिलने के बाद दूरदर्शन इसी हफ्ते जिन चर्चित धारावाहिकों का प्रसारण शुरू करेगा, उनमें अभिनेता सह निर्माता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी का बेहद चर्चित धारावाहिक चाणक्य है। पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित एक और धारावाहिक उपनिषद गंगा का भी प्रसारण होगा। इसके अलावा बच्चों में जबरदस्त लोकप्रिय रहा मुकेश खन्ना का शक्तिमान, लोकप्रिय हास्य धारावाहिक श्रीमान-श्रीमती और कृष्णा कली जैसे सीरियलों का प्रसारण भी किया जाएगा।

लॉकडाउन के दो दिन बाद से ही दूरदर्शन के नेशनल चैनल पर रामायण रोजाना दो एपिसोड तो डीडी भारती पर महाभारत के भी दो एपिसोडों का प्रसारण हो रहा है। इसके अलावा ब्योमकेश बक्शी, सर्कस, हम हैं ना और तू तोता मैं मैना का भी प्रसारण हो रहा है। इस तरह दूरदर्शन के दोनों मुख्य चैनल पर सुबह से रात तक सभी उम्र वर्ग के लोगों के लिए मनोरंजन का विकल्प है।

बीते कई सालों से ज्यादा लोकप्रिय नहीं थे दूरदर्शन के कार्यक्रम : सरकारी प्रचार तंत्र का औजार बनने के बाद से दूरदर्शन के कार्यक्रमों की लोकप्रियता बीते कई सालों से नगण्य ही रही है। खासकर डिश टीवी के जरिये गांव-गांव तक चाहे मनोरंजन हो या न्यूज, निजी चैनलों की पैठ कहीं ज्यादा हो गई है।

निजी मनोरंजन चैनल के कई लोकप्रिय कार्यक्रमों को भी टक्कर : सूचना-प्रसारण मंत्रालय से जुड़े सूत्रों के अनुसार दर्शकों के इस जबरदस्त रुझान के कारण निजी मनोरंजन चैनल के कई लोकप्रिय कार्यक्रमों को भी टक्कर मिल रही है। इसीलिए कुछ लोकप्रिय निजी पे चैनलों ने अपने मासिक शुल्क को दो महीने के लिए मुफ्त भी कर दिया है। इस लिहाज से कोरोना वायरस लॉकडाउन में अपने सुनहरे दौर के कार्यक्रमों के जरिये दूरदर्शन एक बार फिर दर्शकों को अपनी ओर खींच रहा है।

दूरदर्शन के चर्चित धारावाहिक चाणक्य का एक दृश्य। फाइल

दिल्ली के लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के निदेशक डॉ. एनएन माथुर ने दी सलाह

बाहर से आए लोगों की निगरानी जरूरी

डॉक्टर का कहना है

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए शारीरिक दूरी के अलावा कोई रास्ता नहीं है। इसी उद्देश्य से पूरे देश में लॉकडाउन लागू किया गया। दिल्ली के लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के निदेशक डॉ. एनएन माथुर का कहना है कि विभिन्न राज्यों और महानगरों से जिस तरह बड़ी संख्या में लोग अपने गांव जा रहे हैं, उससे हालात और खराब हो सकते हैं। इसलिए कुछ सावधानियां बरतनी जरूरी हैं। बाहर से आने वाले लोगों को पहले निगरानी में रखना चाहिए। कम से कम 14 दिन तक। इस बीच किसी को बुखार, खांसी व सांस लेने में तकलीफ हो तो तत्काल जांच कराएं।

डॉ. एनएन माथुर

जागरूकता सबसे अहम

माथुर कहते हैं कि कोरोना महामारी को रोकने में जागरूकता सबसे जरूरी है। बगैर किसी जानकारी के लोग तरह-तरह की सूचनाएं फैला रहे हैं, इसलिए सरकार के दिशा-निर्देशों पर ही भरोसा करें और उनका पालन करें। अभी सबसे ज्यादा जरूरी यह है कि लोग घरों में रहें। परिवार के साथ समय बिताएं।

अलग कमरे में रहें खांसी-बुखार से पीड़ित

वे कहते हैं कि यदि हो सके तो खांसी और बुखार से पीड़ित लोग घर में भी एक अलग कमरे में रहें। उस कमरे में दूसरे लोग न जाएं। घर में साफ-सफाई का ध्यान रखें। फर्श को साफ रखें। बिस्तर की चादर और कपड़े रोज साफ करें।

बुजुर्गों के प्रति भी रहें ज्यादा सतर्क

वे कहते हैं कि अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। परिवार के बुजुर्गों के प्रति भी सतर्क रहें। मधुमेह, ब्लड प्रेशर, सांस व दिल की बीमारी से पीड़ित लोगों को विशेष सावधान रहने की जरूरत है। यदि मधुमेह है तो घर पर ही व्यायाम करें। इसके साथ ही दवा आदि से उसे नियंत्रित रखें। परेशानी होने पर डॉक्टर से सलाह लें।

प्रधानमंत्री कार्यालय में ट्वीट करते ही बुजुर्ग महिला की मदद को पहुंची सेना

जागरण संवाददाता, राजौरी : जम्मू संभाग के पुंछ में मंगलवार सुबह मानिक शर्मा ने प्रधानमंत्री कार्यालय में एक ट्वीट किया कि राजौरी जिले के कालाकोट तहसील के दूरदराज गांव दयाला में रहने वाली उसकी दादी की तबीयत काफी खराब है और उसे समय पर उपचार की सख्त जरूरत है। जैसे ही प्रधानमंत्री कार्यालय में यह ट्वीट पहुंचा। तुरंत इसकी जानकारी कालाकोट क्षेत्र में तैनात आरआर बटालियन को मिली। सेना ने मौके पर पहुंचकर महिला की मदद की। बता दें कि जानकारी मिलते ही आरआर बटालियन के अधिकारियों ने बटालियन के डॉक्टर व अन्य जवानों को एंबुलेंस के साथ दयाला गांव की तरफ रवाना कर दिया। मौके पर पहुंचे आरआर बटालियन के डॉक्टर ने पाया कि 85 वर्षीय सीता देवी को हृदय की तकलीफ है। इसके साथ उनका रक्तचाप में भी काफी तेज है। उसी समय डॉक्टर ने मौके पर बुजुर्ग महिला को प्राथमिक उपचार दिया।

पशुओं पर भी पड़ रही मार...

असम की राजधानी गुवाहाटी स्थित नवग्रह मंदिर के पास बंदरों को बिस्किट खिलाता एक पुलिसकर्मी। लॉकडाउन के कारण मनुष्य के आसपास रहने वाले पशु-पक्षियों को भी भोजन की किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। प्रेट्र

अखबार से कोरोना का कोई संबंध नहीं

अखबार सुरक्षित है

जेएनएन, नई दिल्ली

- एहतियात के साथ-साथ शोध और इससे जुड़ी जानकारियों से रहें अपडेट

लगभग पूरे विश्व में पैर पसार चुके कोरोना वायरस से बचाव ही सुरक्षा का उपाय है। शासन-प्रशासन के साथ सहयोग कर देश को इस चुनौती से निबटने में मदद करें। यदि हम और आप ने मिलकर इसी तरह से जागरूकता दिखाई तो निश्चित ही कोरोना हारेगा। इसके लिए आप एहतियात के साथ ही दिन-प्रतिदिन होने वाले शोध और इससे जुड़ी जानकारियों से भी खुद को अपडेट करते रहें। कोरोना व इससे इतर विभिन्न जानकारियों के लिए अखबार सबसे अच्छा माध्यम है। फैलाए जा रहे भ्रम से दूर रहें। अखबार पूरी तरह से सुरक्षित है। विशेषज्ञ भी लगातार इसकी पुष्टि कर रहे हैं।

आंख, कान और गला रोग का इलाज करने वाले चिकत्सकों के संगठन एसोसिएशन ऑफ ऑटोलर्निगोलोजिस्ट (एआइओ) बिहार-झारखंड के अध्यक्ष डॉ. एसपी सिंह का कहना है कि कोरोना वायरस फैलने की बात पूरी तरह अफवाह है। जिन्हें जानकारी नहीं है, वे ही ऐसा भ्रम फैला रहे हैं। अगर ऐसा होता तो अब तक कई गुणा ज्यादा लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हो जाते।

डॉ. एसपी सिंह जागरण

उनका कहना है कि ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं मिला है कि अखबार पढ़ने वाले कोरोना वायरस से संक्रमित हुए हैं। इससे वायरस संक्रमण की आशंका बिल्कुल निराधार है। अखबार ही क्यों, किसी भी कागज के छूने से कोरोना का संक्रमण नहीं होता है, क्योंकि कागज कोरोना वायरस उत्पन्न नहीं करता। अगर कोई व्यक्ति इस संक्रमण की गिरफ्त में है और दूसरे लोगों के संपर्क में आया तो खतरा है। कोरोना किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से ही फैलता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) व अन्य संगठन इसका प्रचार कर रहे हैं कि लोग घरों से नहीं निकलें, क्योंकि लोगों के संपर्क में आने से ही यह संक्रमण फैल रहा है। सरकार ने लॉकडाउन भी इसलिए किया है। उन लोगों को ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है, जिनकी उम्र 50 वर्ष से ज्यादा है और वे कई बीमारियों से ग्रसित हैं। खासकर बीपी और मधुमेह के मरीजों को घर से बाहर नहीं निकलना है। अखबार पढ़ें, क्योंकि इसके माध्यम से सही आप नई जानकारी से अपडेट होंगे।

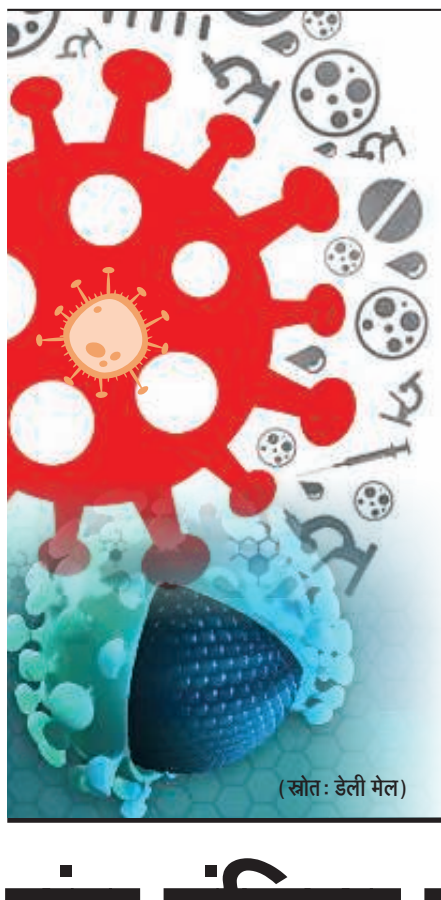

(स्रोत: डेली मेल)

कोरोना के संकटपूर्ण समय में मददगार मेंटल टूलकिट

कोरोना सिर्फ शारीरिक बीमारी नहीं है। इसके फैलाव ने दुनिया भर में लोगों को अपने घरों में दुबकने के लिए मजबूर कर दिया है। इससे लोग तरह-तरह की चिंताओं में घिर रहे हैं। लॉकडाउन का असर हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ने लगा है। ऐसे में ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक और लेखक डॉ. मैक्स कुछ ऐसे उपाय (मेंटल टूलकिट) बता रहे हैं, जिससे लॉकडाउन के कठिन समय में राहत और सकारात्मकता का भाव महसूस कर सकते हैं। उनके मुताबिक, कुछ ऐसी सामान्य बातें हैं, जो न सिर्फ अभी संकट के समय में संबल बनेंगी बल्कि आपको फलने-फूलने में भी मदद करेंगी... तो आइए जानते हैं, ऐसे ही कुछ टिप्स-

दूसरों की जीवनियां पढ़ें

भीषण चुनौतियों और संकटों का सामना कर विजेता बने लोगों की जीवनियां पढ़ें। क्योंकि आपकी अपनी कठिनाइयों और संघर्ष से पार पाने में उससे बढ़िया सीख और कहीं नहीं मिल सकती है।

रूटीन : यह बहुत ही अहम है। हम आदतों वाले प्राणी हैं और अपने जीवन में एक व्यवस्था बनाए रखना चाहते हैं। इसलिए दिन को खंडों में बांटें या एक टाइम टेबल ही बना लें। आपका घर कितना भी छोटा क्यों न हो लेकिन उसमें काम, व्यायाम तथा आराम समेत अन्य गतिविधियों के लिए जगह तय करें।

खाने-सोने का समय तय करें

इन दिनों कई लोग घर से काम कर रहे हैं और इनमें से कई लोगों ने एक शेड्यूल भी बना लिया है। फिर भी सुबह बिस्तर छोड़ने में सुस्ती दिखाते हैं। सुबह में लैपटॉप और मोबाइल फोन पर ही काम करना शुरू कर देते हैं- लेकिन ऐसा न करें।

खुद ही एक लक्ष्य तय करें

आप हमेशा ही कोई उपन्यास पढ़ने या कोई अन्य काम करने के बारे में सोचते रहे होंगे। अभी उसे करने का मौका आया है। यदि आप यह काम कर लेते हैं तो आप खुद को अतुलनीय रूप से पुरस्कृत महसूस करेंगे।

जो लोग कामकाजी नहीं हैं, वे सोफे पर पड़े रहते हैं। टीवी देखने में मशगुल होकर स्नैक्स के मजे लेते रहते हैं- इनसे परहेज करें। इन दिनचर्या में यदि अल्कोहल का योगदान है तो और भी बुरा है, जो आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालता है।

लॉकडाउन की प्राथमिकता स्वास्थ्य की रक्षा ही है। यह ठीक है कि आप रिलैक्स होने के लिए टीवी देखें लेकिन उसके लिए आपको फिट रहना चाहिए और एक्सरसाइज भी करनी चाहिए। इसका महत्व आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों के लिए है। खासकर, तब और भी, जब कि आप घर से बाहर नहीं निकल सकते।

इसके लिए कम से कम 30 मिनट आप ऑनलाइन एयरोबिक्स या योगा क्लास करें, सीढ़ियों को झाड़ने का भी काम कर सकते हैं। यह आपकी भूख और नींद में मदद करेगा और आपकी इम्यूनिटी भी बढ़ाएगा।

कोई कौशल सीखें

ऑनलाइन कई कोर्सेज उपलब्ध हैं। अपने दिमाग को बौद्धिकता या आनंद के लिए सक्रिय करें। इससे आपको कोरोना संकट के एहसास से निपटने में मदद मिलेगी। इससे यह फायदा भी होगा कि जब लॉकडाउन खत्म होगा तो आप कुछ सकारात्मक बातें हासिल कर चुके होंगे। उदाहरण के तौर पर आप कोई दूसरी भाषा धाराप्रवाह बोलना सीख सकते हैं या जादूगर भी बन सकते हैं।

बेचैनी भरे वक्त की योजना बनाएं

दिन में कभी ऐसा भी समय आएगा जब आप थोड़े उदास, बेचैन, अकेलापन या क्रोधित महसूस करेंगे। यह आम बात है। लेकिन कुछ ऐसा करें, जिससे कि इन अवस्थाओं में आप बेहतर महसूस करें। दोस्त को फोन करें, अपनी चिंताओं की डायरी लिखें, म्यूजिक सुनें। इन पूरी कवायदों का मूल तत्व यह है कि आप कभी भी अकेलापन महसूस नहीं करें। इन्हीं भावनाओं से हम लॉकडाउन के कठिन समय से निकलेंगे और पहले से भी मजबूत होंगे।

यंग इंडिया से हारेगा कोरोना वायरस

उम्मीद ▸ देश में काबू में रहेगी विदेश में कोहराम मचाने वाली महामारी

फील गुड न्यूज

युवा आबादी बनेगी रक्षक, थामेगी बीमारी की भयावहता

संदीप पांडेय, लखनऊ

दुनियाभर में कोराना का खौफ कायम है। चीन के बाद वायरस ने यूरोपीय देशों में कोहराम मचा दिया है लेकिन, हिम्मत बंधाने और सुकून देने वाली बात यह है कि भारत में इस वायरस के काबू में रहने की उम्मीद है। विशेषज्ञ यह दावा भौगोलिक और सामाजिक कारकों के विश्लेषण के आधार पर कर रहे हैं। उनका मानना है कि देश की युवा व ग्रामीण आबादी बीमारी से जंग जीतने में मददगार साबित होगी।

लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के पैथोलॉजिस्ट व ब्लड ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुब्रत चंद्रा ने कोरोना वायरस (सार्स-टू) पर अध्ययन किया। इसमें उन्होंने वायरस से प्रभावित चीन व यूरोपीय देशों को शामिल किया। स्टडी में भौगोलिक, सामाजिक परिस्थितियों पर फोकस किया गया। इसमें पाया कि चीन, इटली, अमेरिका व स्पेन जैसे देशों में अधिकतर बुजुर्गों की जान लेने वाला वायरस भारत की युवा आबादी के आगे पस्त हो जाएगा। उनके मुताबिक, शहरी आबादी बाहुल्य देशों में वायरस का प्रसार तेजी से हुआ। लिहाजा, वहां इस खतरनाक वायरस का चेन ब्रेक करना चुनौती बन गया। इसके विपरीत भारत की 66 फीसद आबादी गांव में रहती है। लिहाजा, यह बड़ी आबादी में वायरस के प्रसार पर ब्रेक लगाने का बड़ा सामाजिक हथियार है।

भारत में दो तिहाई युवा

देश	जनसंख्या	युवा	बुजुर्ग व बच्चे
भारत	138	60-65	30-35
चीन	144	50	50
अमेरिका	33	25	75
इटली	6	25	75
स्पेन	4.6	20	80
इंग्लैंड	6.7	30	70

नोट : देशों की आबादी करोड़ में पढ़ें, यह लगभग में है, युवा और बुजुर्ग-बच्चों का औसत फीसद में है।

ग्रामीण भारत बनेगा ताकत

देश	शहरी आबादी	ग्रामीण आबादी
भारत	34	66
चीन	69	31
अमेरिका	83	17
इटली	70	30
स्पेन	80	20
इंग्लैंड	84	16

नोट : ग्रामीण व शहरी आबादी के आंकड़े प्रतिशत में हैं।

यह भी हैं तथ्य

- हाल के दिनों में औसत आयु में वृद्धि हुई है। इस लिहाज से स्टडी को व्यापक करने के लिए 18 से 60 वर्ष तक के व्यक्ति को युवा माना गया है। वहीं स्टडी में 18 वर्ष से कम को बच्चों के श्रेणी रखा गया है।
- औसत आयु पहले भारत में 60 वर्ष मानी जाती थी, अब बढ़कर 70 वर्ष हो गई है। वहीं, यूरोपीय व विकसित देशों में औसतन आयु 80 से 85 वर्ष है। इसलिए, यहां बुजुर्गों की संख्या अधिक है।
- बुजुर्ग की संख्या कम होने से भारत में बीमारी से मृत्युदर कम रहेगी। वहीं, यूरोपीय देशों में बुजुर्गों में मृत्यु दर का बड़ा कारण डिसऑर्डर है।

दृढ़ इच्छाशक्ति से पाई महामारी पर विजय

अनिल भारद्वाज, गुरुग्राम : कोरोना से लड़ाई जीतकर अपने घर लौट आए रोहित शर्मा का कहना है कि कोरोना से जीतने के लिए आपको डॉक्टर के बताए अनुसार चलना होगा और दृढ़ इच्छाशक्ति रखनी होगी। आप कोरोना को हर हाल में हराने में कामयाब होंगे। रोहित समाज से अपील करते हैं कि कोई कोरोना वायरस से ग्रस्त मरीज को नफरत भरी निगाहों से न देखे। जो आज बीमार हुआ है, वो कल ठीक भी हो जाएगा। यही वक्त होता है, जब कोई संकट से घिरता है और उसे सहयोग की जरूरत होती है। समाज को सोचना चाहिए कि बीमार होने वाला पागल नहीं है, जिसे कदम-कदम पर राय देने वाले मिलते हैं। उनके अनुसार कोरोना के मरीज को स्वयं के और दूसरों के बचाव के लिए आईसोलेशन सेंटर में रहना जरूरी है।

रोहित 18 मार्च को लंदन से घर आए थे। हल्का बुखार आने पर उन्होंने 19 को कोरोना का टेस्ट कराया और घर में ही खुद को आईसोलेट कर लिया। 20 मार्च को रिपोर्ट आई, जिसमें उनके कोरोना वायरस से पीड़ित होने की पुष्टि हो गई थी।

जागरण न्यू मीडिया लाया 'पॉजिटिव इंडिया' सीरीज

▸ ट्विटर पर जारी पहली सीरीज में शेयर की जाएंगी सफलता की प्रेरणादायक कहानियां

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : कोविड-19 के प्रकोप से पूरी दुनिया में चिंता, भय और अनिश्चितता का माहौल है। इस परिस्थिति में जागरण न्यू मीडिया ऐसी कहानियां लेकर आ रहा है जो सकारात्मक संदेश देने के साथ-साथ कुछ बेहतर करने की प्रेरणा देगा। 'पॉजिटिव इंडिया' सीरीज के माध्यम से शिक्षा, इनोवेशन/रिसर्च और एंटरप्रेंयोरशिप के क्षेत्र में हो रहे अच्छे कार्यों को शेयर किया जाएगा।

यह सीरीज ट्विटर पर जागरण न्यू मीडिया का पहला इनीशिएटिव है जो सोशल मीडिया के अन्य प्लेटफॉर्म के साथ-साथ जागरण.कॉम, हर जिंदगी, वनली माय हेल्थ और जागरण जोश पर साझा की जाएगी। इसके तहत हर हफ्ते दो कहानियां साझा की जाएंगी। उदाहरण के लिए दैनिक जागरण के ट्विटर हैंडल-@jagranNews पर कैप्टन स्वाति रावलप्तपॉजिटिवइंडिया की कहानी बताई गई है। उन्होंने इटली से 265 भारतीय नागरिकों को सुरक्षित लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जागरण न्यू मीडिया के सीईओ भरत गुप्ता ने कहा, 'पॉजिटिव इंडिया' ऐसी सीरीज है जिससे हमें कुछ नया करने की प्रेरणा मिल सके, हमारे दिलोदिमाग पर सकारात्मक असर डाल सके और नकारात्मक विचारों से लड़ने को प्रेरित कर सके। अमृता त्रिपाठी, हेड न्यूज पार्टनरशिप, ट्विटर इंडिया ने कहा, इस सीरीज में हिंदी-अंग्रेजी दोनों में पॉजिटिव न्यूज और प्रेरणादायक कहानियां शेयर की जाएंगी।

विक्की कौशल ने पीएम केयर्स को दिए एक करोड़

▸ लता मंगेशकर ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री कोष में दिए 25 लाख रुपये

▸ करीना कपूर और सैफ अली एनजीओ और अंतरराष्ट्रीय संस्था को देंगे योगदान

एंटरटेनमेंट ब्यूरो, मुंबई

कोरोना वायरस के खिलाफ जारी जंग में फिल्म बिरादरी की तरफ से आर्थिक मदद का सिलसिला जारी है। मंगलवार को लता मंगेशकर, विक्की कौशल, प्रियंका चोपड़ा जोन्स, करीना कपूर खान और सारा अली खान जैसे कई सितारों ने योगदान देने की घोषणा की।

'उड़ी : द सर्जिकल स्ट्राइक' अभिनेता विक्की कौशल ने पीएम केयर्स फंड और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री राहत कोष में एक करोड़ रुपये देने की बात कही। स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री राहत कोष में 25 लाख रुपये दान देने की घोषणा की। प्रियंका चोपड़ा जोन्स और उनके पति निक जोन्स ने भी कोरोना के खिलाफ जंग में विश्व की दस संस्थाओं को योगदान देने की बात कही। इनमें यूनिसेफ, फीडिंग अमेरिका, गूंज, गिव इंडिया और पीएम केयर्स जैसी कई संस्थाएं शामिल हैं।

वहीं करीना कपूर खान ने पति सैफ अली खान और बेटे तैमूर के साथ मिलकर पीएम केयर्स के बजाय यूनिसेफ, गिव इंडिया और इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर ह्यूमन वैल्यूज जैसी संस्थाओं को आर्थिक सहयोग देने की बात कही है। करीना ने सोशल मीडिया पर लिखा है, 'इस तरह की आपात स्थिति में हमें एकसाथ आकर एक-दूसरे की मदद करने की जरूरत है। हम दोनों ने यूनिसेफ, गिव इंडिया और द इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर ह्यूमन वैल्यूज को मदद देने का संकल्प लिया है। हम उन लोगों से भी ऐसा करने का आह्वान करते हैं, जो करने में सक्षम हैं। हम साथ हैं.. जय हिंद।' हालांकि उन्होंने धनराशि का खुलासा नहीं किया जबकि सारा ने पीएम केयर्स और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री राहत कोष में योगदान देने की बात कही है। फिल्ममेकर रोहित शेट्टी ने सिनेवर्कर्स की मदद के लिए 25 लाख रुपये का योगदान दिया है। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट कर पीएम-केयर्स में योगदान देने वाली हस्तियों को धन्यवाद दिया है।

बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दिए पांच लाख

ममता बनर्जी — फाइल

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कोरोना वायरस से लड़ने के लिए अपनी व्यक्तिगत आय से पांच लाख रुपये पीएम राहत कोष में जामा कराए हैं। यही नहीं पांच लाख रुपये उन्होंने राज्य के आपातकालीन राहत कोष में भी जमा कराए हैं। तृणमूल कांग्रेस की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि बनर्जी को किताबों व संगीत से मिली रॉयल्टी राशि से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष और पश्चिम बंगाल राज्य आपातकालीन राहत कोष में दान दिया गया है। साथ ही ममता ने कहा है कि जिस तरह से कोविड-19 के खिलाफ पूरा देश सीमित संसाधनों में लड़ रहा है, उसमें यह मेरी ओर से सहयोग है।

220 करोड़ रुपये देगी कोल इंडिया लिमिटेड

नई दिल्ली, जेएनएन : कोरोना वायरस से निपटने के लिए आगे बढ़कर आर्थिक मदद देने का सिलसिला जारी है। इसी क्रम में सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी कोल इंडिया लिमिटेड ने 220 करोड़ रुपये प्रधानमंत्री राहत कोष में देने की घोषणा की है। कोयला मंत्री प्रहलाद जोशी ने ट्वीट कर यह जानकारी दी।

आइटीबीपी ने दिया एक दिन का वेतन : भारत तिब्बत सीमा पुलिस (आइटीबीपी) के जवानों और अधिकारियों ने अपना एक दिन का वेतन प्रधानमंत्री राहत कोष में दिया है। आइटीबीपी के प्रवक्ता विवेक कुमार पांडेय ने बताया कि 10 .54 करोड़ रुपये की राशि इलेक्ट्रॉनिकली ट्रांसफर कर दी गई है।

पीएम की मां ने दान किए 25 हजार : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मां हीराबेन मोदी ने 25 हजार रुपये प्रधानमंत्री राहत कोष में दान दिए हैं। उन्होंने यह राशि अपनी निजी बचत में से दान दी है।

गिलोय का रस और काढ़ा पी रहे राज्यपाल लालजी टंडन

ऐसे बिताया दिन

राजीव सोनी, भोपाल

मध्य प्रदेश में पिछला पखवाड़ा राजनीतिक उथल-पुथल में बीता। कमल नाथ सरकार की विदाई हुई और नए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शपथ ली। अब कोरोना वायरस ने आम और खास को घर में रहने को मजबूर कर दिया तो 85 वर्षीय राज्यपाल लालजी टंडन ने भी अपनी दिनचर्या और कार्यप्रणाली बदली है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए वे गिलोय का रस, अदरक और जड़ी-बूटियों के काढ़े का सेवन कर रहे हैं। इस उम्र में भी उनकी सक्रियता गजब की है।

देशव्यापी लॉकडाउन को आत्म अनुशासन का पर्व मानकर वे अपनी बहुप्रतीक्षित संस्मरणों की पुस्तक का शीर्षक 'स्मृतिनाद' तय कर नए अध्याय लिख रहे हैं। उन्होंने लखनऊ और जिलों के प्रवास निरस्त कर मेल-मुलाकातें भी सीमित कर दी हैं। होली के बाद प्रदेश में सियासी भूचाल के चलते राज्यपाल टंडन की दिनचर्या भी पूरे पखवाड़े अव्यवस्थित रही। दैनिक जागरण के सहयोगी प्रकाशन 'नईदुनिया' के साथ विशेष चर्चा में उन्होंने बताया कि मेरी वर्षों पुरानी आदत है कि रतजगा कितना भी हो जाए, सुबह साढ़े छह बजे प्राणायाम के साथ ही दिन की शुरुआत होती है। प्रदेश में हुए ताजा सत्ता परिवर्तन के दौरान कई दिन तक राजभवन सचिवालय को रात-रात भर काम करना पड़ा। वह स्वयं भी कई रातें दो-ढाई बजे तक जागे।

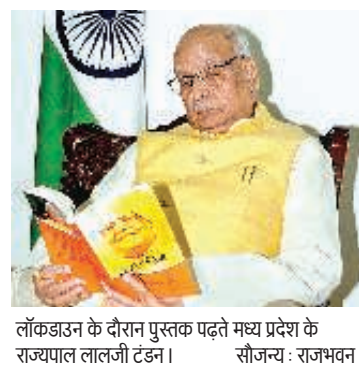

राजभवन के स्टाफ को छुट्टी : कोरोना महामारी के चलते लालजी ने ने अपनी दिनचर्या में बदलाव किया है। इन दिनों राजभवन में होने वाली सामान्य मुलाकातों पर उन्होंने पाबंदी लगा दी है। अतिविशिष्ट लोगों की भी महामहिम से मिलने के पूर्व थर्मल स्कैनिंग की जा रही है। उन्हें सुरक्षित दूरी बनाकर ही राज्यपाल से बात करने को कहा गया है। राजभवन के ज्यादातर कर्मचारियों को छुट्टी दे दी गई। अधिकारियों को भी एक दिन के अंतराल से आने को कहा गया है। जरूरी काम ज्यादातर फोन पर ही निस्तारित करनी की कोशिश होती है। कुलपतियों से वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिये बात होती है। दीक्षा समारोह और लखनऊ-विदिशा दौरा टाल दिया गया है।

मेरे लिए आत्म अनुशासन का पर्व : लालजी कहते हैं कि लॉकडाउन मेरे लिए तो यह आत्म अनुशासन के पर्व जैसा है। नवरात्र पर्व भी चल रहा है। कई दशक हो गए इन दिनों घर पर ही स्वाध्याय और देवी आराधना करता हूं। घर में कलश स्थापना भी करता हूं। अष्टमी पर कुलदेवी का पूजन हवन करता हूं। नवरात्र के पहले और अंतिम दिन व्रत रहता हूं। नवरात्र में मेरा खान-पान बहुत सादा और फलाहार पर ही जोर रहता है। वैसे भी हमेशा सादा और शाकाहारी पौष्टिक भोजन ही लेता हूं।

▸ नवरात्र में सादा एवं पौष्टिक खानपान के साथ फलाहार पर जोर

▸ लॉकडाउन का उपयोग कर रहे अपनी ही पुस्तक को अपडेट करने में

लॉकडाउन के दौरान पुस्तक पढ़ते मध्य प्रदेश के राज्यपाल लालजी टंडन। — सौजन्य : राजभवन

राजभवन की रसोई : राज्यपाल कहते हैं कि नवरात्र में सभी लोग कन्या भोजन कराते हैं, लेकिन इस बार देश पर संकट है। भोजन के लिए कोई परेशान न हो इसलिए राजभवन की रसोई में रोज 100 लोगों के भोजन पैकेट बन रहे हैं। भोजन के पैकेट नगरनिगम का अमला जरूरतमंदों के बीच वितरित करता है।

मुलाकातें कर दीं सीमित

राज्यपाल ने बताया कि इन दिनों कोरोना संक्रमण के चलते मैंने अपनी दिनचर्या तो बदली ही, प्रदेश में सभी लोगों के लिए जरूरी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए हैं। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखना बहुत जरूरी है। इसलिए गिलोय का रस, अदरक और आयुर्वेदिक औषधियां भी ले रहा हूं। मुलाकातें सीमित कर दी हैं, इसलिए अब फुर्सत के क्षणों का उपयोग अपनी ही पुस्तक पढ़ने और उसे अपडेट करने में जुट गया हूं। एक बात और संस्मरणों की इस पुस्तक का शीर्षक भी मैंने 'स्मृतिनाद' तय कर लिया है।

कोविड-19 के खिलाफ बुद्धि और युवा शक्ति

कोरोना के खिलाफ छिड़ी जंग में राज्यपाल लालजी टंडन ने बुद्धि और युवा शक्ति के सकारात्मक उपयोग की नई पहल शुरू है। सुबह साढ़े छह बजे से रात 11 बजे तक उनकी सक्रियता बनी हुई है। पिछले तीन दिन में सभी विश्वविद्यालयों के छात्रों के माध्यम से जनजागरूकता के 22 लाख संदेश प्रसारित हो चुके हैं। टंडन का मानना है कि यदि 22 में से 10 लाख युवाओं ने भी यह संदेश दस-दस लोगों को पहुंचा दिए तो प्रदेश के एक करोड़ लोगों को जागरूक किया जा सकेगा। उनका मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से भी संवाद बना हुआ है। सोमवार रात को भी उन्होंने इंदौर सहित प्रदेश के अन्य शहरों की मौजूदा स्थिति पर चर्चा की।

मिसाल

डॉ. सुधीर डेहरिया की कर्तव्यपरायणता के लोग हुए कायल, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री सहित कई लोगों ने की सराहना

पांच दिन बाद घर पहुंचे सीएमएचओ दहलीज से ही लौट आए

नईदुनिया, भोपाल

कोरोना की महामारी से लोगों को बचाने के लिए देश के सभी डॉक्टर पूरे मनोयोग से मरीजों के इलाज में जुटे हैं। वे कई दिनों तक शहर में होने के बावजूद घर नहीं जा पा रहे हैं। भोपाल के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) डॉ. सुधीर डेहरिया इसी कर्तव्यपरायणता की जीती-जागती मिसाल हैं। सोमवार को वे पांच दिन बाद घर पहुंचे और चाय पीकर ही घर की दहलीज से ही लौट आए। मंगलवार को उनकी यह फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो गई। देश के कोने-कोने से उनकी इस कर्तव्यनिष्ठा की सराहना की जा रही है। लोग उन्हें सलाम कर रहे हैं। उनकी तारीफ प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी की है।

दरअसल, डेहरिया भोपाल जिले में कोरोना से निपटने के लिए स्वास्थ्य टीम का नेतृत्व कर रहे हैं। प्रदेश की राजधानी होने से उन पर दबाव भी ज्यादा है। इसलिए संकट के इस दौर में कई दिनों तक वे परिजन से भी नहीं मिल पा रहे हैं। दैनिक जागरण के सहयोगी प्रकाशन नईदुनिया में खबर प्रकाशित होने के बाद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उनकी फोटो को फेसबुक पर पोस्ट करते हुए लिखा कि डॉक्टर डेहरिया और इन जैसे हजारों-लाखों कोरोना वारियर्स को मेरा शत-शत नमन।

एसडीएम ने शादी स्थगित कर निरस्त कराई छुट्टी : लॉकडाउन के दौरान अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाने के लिए नरसिंहपुर जिले के करेली की एसडीएम संघमित्रा बौद्ध ने 12 अप्रैल को होने वाली अपनी शादी स्थगित कर दी है। मूलतः दतिया निवासी संघमित्रा का विवाह भिंड में पदस्थ एसडीएम अभिषेक चौरसिया से होना था। 8 फरवरी को सगाई हो गई थी। इसके बाद शादी की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। दोनों ने मार्च के शुरुआती दिनों में छुट्टी के लिए आवेदन भी कर दिया था। अवकाश स्वीकृत भी हो गए, लेकिन कोरोना संकट को देखते हुए दोनों ने शादी स्थगित करने का निर्णय लिया व छुट्टी पर न जाकर अपने क्षेत्र की जनता को सेवाएं देने का फैसला किया है। संघमित्रा ने कोरोना बचाव एवं राहत कार्य के लिए नरसिंहपुर जिले के लिए 10 हजार रपये एवं मप्र प्रशासनिक सेवा संघ में 10 हजार रपये भी दिए हैं।

कोरोना से लोगों को बचाने में जुटे भोपाल के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सुधीर डेहरिया चाय पीकर घर की दहलीज से ही लौट आए। — सौ. डॉ. डेहरिया

इन्होंने भी सराहा

दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने भी उनकी तारीफ करते हुए फेसबुक पर लिखा कि ये है देशभक्ति। अपने काम को निष्ठा से पूरा करना ही सच्ची देशभक्ति है, सच्ची पूजा है। कवि इमरान प्रतापगढ़ी, उत्तर प्रदेश के आइपीएस अधिकारी एडीजी नवनीत सिकेरा ने भी उनके इस जज्बे को सलाम किया है।

पतंग के जरिये 'हीरो' का गुणगान

भोपाल में सेवा संकल्प युवा संगठन ने लोगों को महामारी से बचने का संदेश देने के लिए नया प्रयोग किया है। समिति ने एक दर्जन से अधिक पतंगें उड़ाई। इन पतंगों में एक ही संदेश लिखा है 'सीएमएचओ डॉ. सुधीर डेहरिया हमारे हीरो हैं'।

ग्राम पंचायत ने किया एक करोड़ रुपये का योगदान

▸ हरियाणा के भिवानी जिले की ग्राम पंचायत डाडम ने पेश की मिसाल

▸ सरंपच सहित सभी पंचों का सर्वसम्मत से निर्णय, एसडीएम ने की सराहना

जागरण संवाददाता, तोशाम (भिवानी)

कोरोना से संघर्ष में फंड का कोई रोना नहीं है। महज तीन हजार की आबादी वाली हरियाणा के भिवानी में ग्राम पंचायत डाडम ने प्रधानमंत्री राहत कोष में एक करोड़ रुपये दिए हैं। पंचायत को विकास कार्यो के लिए जो फंड मिला है, उसमें ग्रामवासियों और सरपंच द्वारा अपनी तरफ से रकम जोड़कर ये एक करोड़ रुपये जुटाए गए हैं। वैसे भी यह ग्राम पंचायत इस महायुद्ध के हर मोर्चे पर अपनी भूमिका महत्वपूर्ण ढंग से रेखांकित कर रही है। पूरे गांव को रोज सैनिटाइज किया जा रहा है। गांव में लॉकडाउन के नियमों का पालन हो रहा है। केवल वही लोग बाहर निकलते हैं, जिनपर सामाजिक दायित्व है।

पीएम राहत कोष में एक करोड़ की रकम देने का प्रस्ताव सरपंच रामफल दहिया का था, जिसे पंचायत ने सर्वसम्मति से पारित कर दिया। यह ग्राम पंचायत स्वयं भी आर्थिक रूप से संपन्न है। गांव डाडम में स्थित पहाड़ी ग्राम पंचायत के अधीन आती है। इसलिए खनन कार्य से प्रदेश सरकार को जो रॉयल्टी मिलती है, उसका 10 फीसद ग्राम पंचायत को अपने क्षेत्र में विकास कार्य के लिए दिया जाता है। ग्राम पंचायत इस राशि का अपने स्तर पर प्रयोग कर सकती है। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी को देखते हुए ग्राम पंचायत ने इस राशि को अपने विकास कार्यों के बजाय लोगों की जान बचाने उन्हें सहायता प्रदान करने का निर्णय लिया। पंचायत ने एक करोड़ रुपये की राशि का फंड पीएम राहत कोष में ट्रांसफर कराने के लिए संबंधित कागजात तोशाम के एसडीएम संदीप कुमार को सोमवार को सौंप दिए। पंचायत के प्रतिनिधियों का मानना है कि विकास कार्य व अन्य पंचायत के कार्य तो बाद में भी किए जा सकते हैं, लेकिन कोरोना से निपटना प्राथमिक प्राथमिकता है।

दैनिक जागरण

धैर्य कड़वा है, लेकिन इसका फल मीठा होता है

देशघाती लापरवाही

यह जानना हैरान-परेशान और साथ ही भयभीत करने वाला है कि जब देश-दुनिया में कोरोना वायरस के खौफ के चलते सोशल डिस्टेंसिंग पर जोर दिया जा रहा था और हर तरह के जमावड़े से बचने की नसीहत-हिदायत भी दी जा रही थी तब दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में तब्लीगी जमात के एक केंद्र में तमाम लोग एकत्रित थे। इनमें देश के साथ विदेश से आए लोग भी शामिल थे। इनमें से करीब दो दर्जन के बारे में संदेह है कि वे कोरोना वायरस से संक्रमित हैं। खतरा इसलिए बढ़ गया है कि एक तो यहां से अपने राज्य तेलंगाना लौटे छह लोगों की संक्रमण से मौत हो चुकी है और दूसरे, यह पता चल रहा कि इस केंद्र में देश के विभिन्न राज्यों से आए लोग अपने-अपने घरों को लौट चुके हैं। अब इन सबके साथ इनके संपर्क में आए लोगों की भी तलाश करनी पड़ रही है। साफ है कि तब्लीगी जमात के आयोजकों ने अपनी लापरवाही से पूरे देश के लिए एक बड़ा खतरा पैदा कर दिया। हालांकि आयोजक इस दलील के सहारे खुद को निर्दोष बता रहे हैं कि देशव्यापी लॉकडाउन के बाद तमाम लोग उनके यहां फंस गए और पुलिस ने उन्हें निकालने के अनुरोध की अनदेखी की, लेकिन सवाल यह है कि जब लॉकडाउन के काफी पहले ही दिल्ली सरकार ने दो सौ से अधिक लोगों के जमावड़े पर रोक लगा दी थी तब फिर इस धार्मिक स्थल में लोगों का आना-जाना क्यों लगा रहा? यह अनुत्तरित प्रश्न आयोजकों की लापरवाही की ही पोल खोल रहा है।

तब्लीगी जमात के कर्ता-धर्ता अपनी सफाई में कुछ भी कहें, यह किसी से छिपा नहीं कि अन्य देशों और खासकर पाकिस्तान से भी इसी तरह की खबरें आ रही हैं कि इस जमात के लोग मजहबी प्रचार के अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने की धुन में सरकारी आदेशों-निर्देशों को ठेंगा दिखाकर जमावड़ा लगाने से बाज नहीं आ रहे हैं। निःसंदेह इस तथ्य की भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि निजामुद्दीन में कई देशों के ऐसे मजहबी प्रचारक मिले जिन्होंने वीजा नियमों का उल्लंघन करने में गुरेज नहीं किया। यह शुभ संकेत नहीं कि दिल्ली के साथ देश के अन्य हिस्सों में भी विभिन्न धार्मिक-सांस्कृतिक स्थलों में सोशल डिस्टेंसिंग को ताक पर रखा जा रहा है। यह एक तरह से कोरोना वायरस के फैलाव को जानबूझकर बढ़ाने वाली हरकत है। केंद्र और राज्य सरकारों के साथ उनकी विभिन्न एजेंसियों और साथ ही समाज के हर तबके को सोशल डिस्टेंसिंग के किसी भी उल्लंघन को देशघाती आचरण की तरह लेना होगा और यह समझना होगा कि जिंदगी बचाने की यह जंग आम लोगों के सहयोग के बिना नहीं लड़ी-जीती जा सकती।

चिंता का विषय

लॉकडाउन की आड़ में जमाखोरी और कालाबाजारी चिंता का विषय है। ऐसे वक्त में जब पूरा देश कोरोना वायरस के संक्रमण से न केवल भयभीत है, बल्कि हर वह कदम उठाने को मन से तैयार है, जिससे इस महामारी को फैलने से रोका जा सकता है। उत्तराखंड की स्थिति भी जुदा नहीं है। यह ठीक है कि अभी हम पहली दहलीज पर हैं, लेकिन इसे लेकर बेफिक्र होने जैसा कुछ नहीं है। उत्तराखंडवासी कोरोना संक्रमण के खतरे से न केवल भलीभांति वाकिफ हैं, बल्कि राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन में सहयोग के लिए हर तरह से तैयार हैं। इसी का प्रमाण है कि 22 मार्च को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जनता कर्फ्यू अपील को उत्तराखंड से अभूतपूर्व समर्थन मिला। इतना ही नहीं, इसके बाद प्रधानमंत्री ने कोरोना के संक्रमण की चेन को तोड़ने के लिए 21 दिन का लॉकडाउन घोषित किया तो भी उत्तराखंडवासी विचलित नहीं हुए। उन्होंने तहेदिल से इस आह्वान को स्वीकारा और राष्ट्रव्यापी जागरूकता की इस मुहिम में अपनी भूमिका सुनिश्चित की। लेकिन इस सबके बीच चिंताजनक यह कि लॉकडाउन की आड़ में जमाखोर और कालाबाजारी करने वाले सक्रिय हो गए। मुनाफाखोरों ने विपदा की इस घड़ी को कमाई का अवसर मान लिया। जमाखोरों ने जरूरी वस्तुओं का कृत्रिम संकट खड़ा कर दिया। राज्य के तमाम शहरों से ओवर रेटिंग और जमाखोरी की शिकायतें आ रही हैं। इस पर अंकुश लगाने में तंत्र अभी तक नाकाम दिखा। सिस्टम की चाल में भी खोट नजर आ रहा है। सरकार पहले दिन से दावा कर रही है कि आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बाधित नहीं होने दी जाएगी। किसी भी व्यक्ति को भूखा नहीं सोने दिया जाएगा। मगर प्रशासनिक हलकों में इसको लेकर हरकत कम ही दिख रही है। यही नहीं, अभी तक सरकार ऐसा प्रभावी सिस्टम भी नहीं बना पाई कि लोगों को उनके घर के नजदीक ही रोजमर्रा का सामान उपलब्ध हो जाए। सरकारी सस्ता गल्ला दुकानें इसका माध्यम हो सकती हैं। राज्यभर में मोहल्ला स्तर पर सरकारी राशन की दुकानें हैं। सरकार इन तक राशन, फल, सब्जी और दूध उपलब्ध कराने की व्यवस्था कर दे तो लोगों को अनावश्यक रूप से शहरों की दौड़ नहीं लगानी पड़ेगी। कहने में कोई हिचक नहीं कि देश में जिस अनुपात में कोरोना मरीजों की संख्या बढ़ रही है, उसे देखते हुए उत्तराखंड में लॉकडाउन में ढील को जन सुविधा के विकल्प के रूप में प्रचारित करना आसानी से गले नहीं उतर रहा।

सबक सिखाने वाली महामारी

डॉ. अश्विनी कुमार

कोरोना की जो त्रासदी हम झेल रहे हैं वह हमें मानवीय सीमाओं का स्मरण कराने के साथ यह भी बता रही कि जीवन वैसे नहीं चलता जैसे हम उसके लिए योजनाएं बनाते हैं

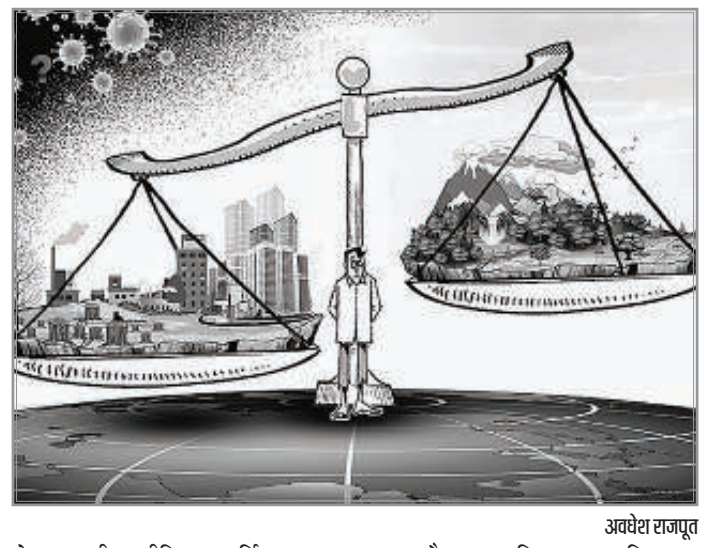

अवधेश राजपूत

जब पूरी मानवता एक आपदा से जूझ रही है तब उससे जुड़े सबक कलमबद्ध करने की कवायद में मेरा ध्यान सबसे पहले प्रकृति के आगे मनुष्य की तुच्छता की ओर जाता है। जब मनुष्य ने पृथ्वी पर आधिपत्य स्थापित करने का दावा किया तब प्रकृति ने हस्तक्षेप कर उसे उसकी हैसियत दिखा दी। कोरोना वायरस के खिलाफ हमारी सामूहिक असमर्थता ने मानवीय क्षमताओं की सीमाओं को लेकर बड़ी-बड़ी दंभी धारणाओं की पोल खोलकर रख दी है। कोरोना वायरस से उपजी कोविड-19 महामारी को लेकर सबक यही है कि प्रकृति के आगे मनुष्य असहाय है और जब प्रकृति सबक सिखाती है तो उसमें पूरी मानव जाति के लिए एक सीख होती है।

सुरक्षा और प्रगति के लिए जिस स्थिर समाज और भविष्य को लेकर निश्चिंतता एक जरूरी शर्त होती है उसके लिए भी कोविड-19 एक और बड़ा सबक है। इस महामारी के चलते जिस रफ्तार के साथ वैश्विक स्तर पर गतिरोध उत्पन्न हुआ है उसने वैश्विक व्यवस्था की बुनियाद को लेकर सवाल उठा दिए हैं। बिल्कुल वैसे ही जैसे हम प्रकृति की व्यवस्था में पर्यावरणीय संतुलन की उन अनिवार्यताओं को याद कर हिल जाते हैं जिन पर कोई तर्क-वितर्क नहीं हो सकता।

कोरोना वायरस स्मरण कराता है कि मानवीय पीड़ा को विभाजित नहीं किया जा सकता। यह सभी पर असर दिखाती है और इससे केवल हम अकेले ही जुड़े हुए नहीं हैं। जैसे गरीबी और गरिमा का संबंध है वैसे ही न्याय और संवेदना भी किसी समाज की गुणवत्ता को दर्शाती है। हमने यह बात फिर से सीखी है कि बंधुता, मानवीय निकटता एवं मित्रता अभी भी जीवंत हैं और किसी संकट के समय मानवता की कड़ी और मजबूत होती है। इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि मानवता के लिए गंभीर खतरा प्रार्थना में हमारे विश्वास को और प्रगाढ़ करता है और एकजुटता के भाव को भी, खासतौर से उस खतरे के खिलाफ जो अपनी चपेट में लेने के लिए कोई भेदभाव न करता हो। अगर मानवता का भाव प्रभावी हो तो किसी महामारी के खिलाफ महायुद्ध में कोई भी तमाशाई बनकर नहीं रह सकता।

यह त्रासदी हमें स्वयं से यह सवाल करने के लिए भी विवश कर रही है कि क्या हम जीडीपी आंकड़े की धुन में ही लगे रहें या फिर इसके बजाय सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता की राह पकड़ें? निःसंदेह आर्थिक वृद्धि और भौतिक संपन्नता की भी खुशियां बढ़ाने में अपनी भूमिका होती है, पर क्या मानवीय कुशलक्षेम को मापने के लिए यही मुख्य पैमाना होना चाहिए? ज्ञात मानवीय इतिहास में हुई भौतिक प्रगति और व्यापक तकनीकी बदलाव से जो कुछ भी हासिल हुआ वह इस संकट की घड़ी में हमारे कितना काम आ रहा है? इससे हमें साझा भविष्य को लेकर अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करना चाहिए, विशेषकर वैश्वीकरण को लेकर कि क्या यही वैश्विक बदलाव लाने वाली सबसे प्रमुख धारा है। आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी शक्ति में असमान देश सिर्फ एक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की स्थापना में बहुस्तरीय कदमों के लिहाज से समान रूप से योगदान नहीं कर सकते। हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि वैश्वीकरण का भविष्य इसी बात से निर्धारित होगा कि दुनिया के वंचित वर्गों के लिए इससे क्या हासिल होता है? अगर कुछ हासिल होता है तो भी वैश्वीकरण को लेकर वाजिब पड़ताल इस पहलू पर होनी चाहिए कि राज्य व्यवस्था में अधिकारों के प्रयोग की कवायद में नैतिक दबाव से अनियंत्रित भीमकाय व्यवस्था को कितना प्रोत्साहन दिया जाए? इसके साथ ही हमारे संवैधानिक संस्थानों और वर्षों से उन्हें समृद्ध किए जाने की उस प्रक्रिया को लेकर भी बहस शुरू हो जाएगी जिसमें इन संस्थानों को समय के साथ और समृद्ध किया गया ताकि उदार लोकतांत्रिक राज्य की बुनियाद सुरक्षित रहे। कुल मिलाकर जो त्रासदी हम झेल रहे हैं वह हमें मानवीय कल्पना की सीमाओं का स्मरण कराने के साथ यह भी बता रही कि जीवन वैसे नहीं चलता जैसे हम उसके लिए योजनाएं बनाते हैं।

निराशा और अंदेशे के इस दौर में राष्ट्र के नेता होने के नाते प्रधानमंत्री से अपेक्षा है कि वह देश के मिजाज को समझें और उसे सही दिशा प्रदान करें। वह नागरिकों को उन्मुख करें कि वे सरकार द्वारा उठाए गए कदमों को सफल बनाने के लिए अपनी सहभागिता करें। कोरोना वायरस के संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए उठाए गए कदमों के साथ ही सरकार ने उन वंचित लोगों के लिए भी भरोसेमंद और पर्याप्त कदम उठाए जिनके पास न तो काम-धंधा है और न खाने-पीने के साधन और घर-बार न होने के कारण भावनात्मक असुरक्षा भी। ऐसे में यह जरूरी होगा कि सरकारी फैसलों को लागू करने में लोगों की गरिमा के साथ कोई समझौता नहीं किया जाए। भूख के खिलाफ बेबस लोगों पर सरकारी सख्ती और पुलिसिया बर्ताव देश की आत्मा को छलनी करने वाला है। स्वतंत्रता एवं गरिमा का आकांक्षी कोई राष्ट्र अपने नागरिकों को यूं ही मरने नहीं दे सकता। हमें यह नहीं भूलना होगा कि जिंदगी की जद्दोजहद में रोजाना उनकी गरिमा को तार-तार किया जाता है। इसका समाधान किसी भी संवैधानिक राज्य के समक्ष एक कड़ी चुनौती है। हमारी सामूहिक गरिमा पर प्रहार का कोई भी प्रयास समूचे राष्ट्र के लिए निंदनीय और साथ ही उसकी आध्यात्मिक विरासत पर भी आघात होगा।

यह समय नेतृत्व के लिए नैतिक साहस और मानवीय गरिमा के आह्वान का है। प्रधानमंत्री का दायित्व है कि वह भारतीय राज्य के समस्त संसाधनों के सदुपयोग से सुनिश्चित करें कि देश के लोगों के जीवन की रक्षा पूरी गरिमा के साथ की जाएगी। हमारे सामाजिक जुड़ाव की अंतर्निहित तार्किकता को भी पुष्ट करना होगा कि राष्ट्र हमेशा अपने नागरिकों के लिए तत्पर है। मौजूदा माहौल में पूरा देश प्रधानमंत्री के साथ एकजुट है। प्रवर्तनकारी राजनीति इस आपदा के समय सबसे सही राष्ट्रीय प्रतिक्रिया होगी। हम जानते हैं कि इतिहास में ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है जो हमें अतीत की व्याख्या, वर्तमान का समाधान और भविष्य का आकलन करना सिखाता हो, पर हम इतनी उम्मीद तो कर सकते हैं कि कोविड-19 के बाद की दुनिया और बेहतर होगी। यह भी आशा है कि नई अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था अधिक मानवीय हो जिसमें शांति एवं सह-अस्तित्व जैसी अवधारणाएं महज कल्पनालोक के विचार न रह जाएं।

(लेखक पूर्व केंद्रीय मंत्री हैं)

response@jagran.com

पुन : विस्थापन की त्रासदी

बद्री नारायण

उन कामगारों के प्रति संवेदना जगानी ही होगी जो शहरों में तमाम सुख-सुविधाओं के साधन बनाते हैं या उपलब्ध कराते हैं

कोरोना वायरस के संक्रमण से उपजी कोविड-19 बीमारी ने भारतीय समाज के सामने एक बड़ा संकट पैदा कर दिया है। यह संकट है भारत के बड़े शहरों के प्रवासी श्रमिकों एवं दिहाड़ी मजदूरों की एक बड़ी संख्या का पुनः विस्थापन। पुनः विस्थापन इसलिए कि एक बार तो वे अपने गांव-घर से विस्थापित होकर रोजी-रोटी की तलाश में महानगरों में आए। अब फिर बड़ी संख्या में विस्थापित होकर अपने 'गांव-देश' की ओर पलायन करने के विवश हुए हैं। देशव्यापी लॉकडाउन के कारण शहरों में काम बंद हो गए हैं। काम बंद होने से इन लोगों के सामने रोजी-रोटी की समस्या खड़ी हो गई है। यहां 'रोजी-रोटी' का तात्पर्य भोजन की चिंता मात्र नहीं है, वरन शहर में रहने का खर्च, दो पैसा कमाने की चाह आदि भी उनकी 'रोजी-रोटी' की अवधारणा से जुड़ी हुई है।

जिन प्रवासी मजदूरों ने हमारे नगरों के आधारभूत ढांचों का निर्माण किया, जो हमारे नगर जीवन के प्राण तत्व हैं, वे आज कोविड-19 महामारी के कारण अपने भविष्य को लेकर आशंकित हैं। कोरोना के कहर ने इन गरीबों के सामने 'दोहरा संकट' खड़ा कर दिया है। उनके लिए पहला संकट अपने को जिंदा रखना है और दूसरा संकट महानगरों में फैले कोरोना के संक्रमण से अपने को बचाना। उनके पास 'शारीरिक दूरी' बनाए रखने लायक व्यवस्थित घर भी नहीं हैं। वैसे भी शहरों में तो उनका रहवास सामूहिक एवं भागीदारी के जीवन से ही निर्मित होता है। ऐसे में रोजी-रोटी की बर्बादी एवं कोरोना का भय, दोनों मिलकर उन्हें पलायन' के लिए बाध्य कर रहे। भारत में अब तक लगभग 31 प्रतिशत शहरीकरण हुआ है। यह इन्हीं के खून-पसीने से संभव हुआ है, किंतु हमारे 'नागर अभिजात्य' के लिए शायद ये प्रवासी मजदूर 'अदृश्य समुदाय' के रूप में होते हैं। यहां अदृश्य समुदाय का तात्पर्य उस समुदाय से है जो हमारी सोच का हिस्सा हमारी जरूरतों के लिए तो होता है, किंतु किसी संवेदना की घड़ी में हमें उसकी याद नहीं आती। हालांकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'जनता कर्फ्यू' के अपने भाषण में कहा था कि 'ऐसे लोगों के ड्यूटी पर नहीं आने पर भी उन्हें उनके मालिक तनख्वाह दें एवं काम से न निकालें।' उन्होंने हाल में शारीरिक दूरी के साथ संवेदनात्मक नजदीकियां बढ़ाने का भी एक जरूरी आग्रह किया।

अगर आंकड़े देखें तो भारत में लगभग 14 करोड़ के आस-पास देशांतरिक प्रवासी हैं। इनमें करीब दो करोड़ प्रवासी मजदूर दो बड़े राज्यों उत्तर पदेश एवं बिहार से हैं। माना जाता है कि हिंदी पट्टी के चार राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान से लगभग 50 प्रतिशत प्रवासी मजदूर आते हैं। दिल्ली एवं मुंबई इन प्रवासी मजदूरों के पसंदीदा शहर हैं, जहां बड़ी संख्या में प्रवासी श्रमिक कार्यरत हैं।

लॉकडाउन के बाद एक-दो दिनों तक तो प्रवासी श्रमिक अपने पसंदीदा शहर में रह पाए, किंतु जब उन्हें लगा कि यहां तो जीना मुश्किल है तो वे पैदल ही अपने घरों की ओर निकल लिए। जब सरकार को लगा कि यह लॉकडाउन उन्हें रोक नहीं पा रहा है तो उन्हें अपने-अपने गृह क्षेत्र पहुंचाने या फिर जहां थे वहीं ठहराने की व्यवस्था की गई।

प्रश्न उठता है कि जिन मजदूरों-कामगारों की कमाई से उनके गृह क्षेत्रों में पैसे का प्रवाह तीव्र होता था, परिवार में खुशहाली आती रही, उनके प्रति गृह क्षेत्र का रवैया कैसा है? बिहार के गांव का एक युवा मुंबई में नौकरी करता था। लॉकडाउन के पहले दादर-पटना एक्सप्रेस से वह अपने गांव पहुंचा। गांव पहुंचा तो उसने देखा कि लोग न उसके पास अना चाहते हैं, न बात करना चाहते हैं। जब वह अपने घर पहुंचा तो उसकी मां, भाई, पत्नी का भी उसके प्रति व्यवहार बदला हुआ था। सब उससे बच-बच कर बात कर रहे थे। उसने अपना दुख बयान करते हुए बताया- भईया, ऐसा लग रहा, जैसे हम अछूत हों। एक समय जिस परदेशी की याद में गांवों में अनेक लोकगीत गाए जाते थे और जिसके आने की प्रतीक्षा रहती थी, आज उसी 'परदेशी' से बचने की कोशिश हो रही है। आजकल गांवों में यह प्रचलित है कि 'बिदेशी और परदेशी से बच कर रहिए।' अभी तक दुनिया में जितनी भी महामारियां फैली हैं, अगर उनके इतिहास का पन्ना पलटें तो पता चलेगा कि अधिकतर के प्रसार के प्रथम वाहक विभिन्न समाजों का अमीर वर्ग, पर्यटक, जहाजों के चालक दल, व्यापारी, सैनिक टुकड़ियां, औपनिवेशक अधिकारी और प्रशासक रहे। इनके जरिये महामारियां यूरोप, अफ्रीका एवं एशिया से होती हुईं गरीबों एवं आम आदमी तक पहुंचीं। यदि कोरोना वायरस के प्रसार की कड़ी की व्याख्या करें तो साफ होता है कि यह भी हमारे समाज के कुछ अमीर वर्ग के लोगों, पर्यटकों, नौकरशाहों एवं मध्यपूर्व में कार्यरत कुछ प्रवासियों के माध्यम से हमारे शहरी मध्यवर्ग और अन्य समुदायों तक फैला। इस क्रम में अगर ये गरीब दिहाड़ी मजदूर आते हैं तो वे इसके 'निर्दोष शिकार' होंगे।

यह वक्त सिर्फ अपने को बचाने का ही नहीं, बल्कि अपनी संवेदना को भी बचाने का है। संवेदना उनके प्रति जो हमारे लिए, नागरजनों के लिए तमाम सुख-सुविधाओं एवं जरूरतों के साधन या तो बनाते हैं या उपलब्ध कराते हैं। शायद हमारी यही संवेदना उन्हें महानगर छोड़ अपने गृह क्षेत्रों की ओर पलायन करने से रोक सकती है। हमारे समाज के ये ऐसे लोग हैं जो आज प्रवास एवं गृह क्षेत्र, दोनों ही जगहों पर बेगाने से होते जा रहे हैं। ऐसा नहीं होने दिया जाना चाहिए। हमें अपने संवाद, सहयोग, सहकार आधारित भारतीय जीवन को बचाते हुए शहरी मजदूरों और कामगारों के प्रति संवेदनशील होना होगा। यह वक्त के साथ-साथ इंसानियत की भी मांग है।

(लेखक गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के निदेशक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

आत्मसंयम

संसार में माया का प्रभाव इतना प्रबल है कि उससे बच पाना असंभव-सा होता है। माया के आकर्षण में मनुष्य जीवन के मूल कर्तव्यों के प्रति उदासीन हो जाता है। वह परमात्मा से भी दूर और स्वकेंद्रित होता जाता है। परिणामस्वरूप उसका जीवन दुखों से भर जाता है। जीवन को दुखों से उबारना है तो निदान अपने अंदर खोजने होंगे। पंच तत्वों से मनुष्य का तन रचकर परमात्मा ने उसके अंदर जो चेतन तत्व टिकाया है वह अपार शक्तियों से संपन्न है। जब अंतर का चेतन तत्व जागृत हो, तब जीवन में संतुलन और संयम बना रहता है।

संसार में मनुष्य का अपना कुछ भी नहीं है जिस पर वह अभिमान कर सके। उसका अपना तन भी सृष्टि से उधार में लिए तत्वों से मिल कर बना है, जिन्हें उसे एक दिन लौटना ही है। जो भी वह अर्जित कर रहा है उसका उपभोग वह उसी अवधि तक कर सकता है जो परमात्मा ने निर्धारित किया हुआ है। यह भी सत्य है कि जो कुछ उसके पास है वह कब तक रहेगा यह कोई नहीं जानता। राजा से रंक और रंक से राजा होते पल भी नहीं लगता। जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है कि मनुष्य अपने बारे में जाने। विडंबना है कि ऐसा नहीं होता। वह बाहर का ज्ञान अर्जित करने में व्यस्त रहता है, किंतु अपने स्व से अनभिज्ञ होता है। स्वयं के बारे में वह वैसा ही जानता है जैसा दूसरे उसे बताते हैं। मनुष्य स्वयं को जानने के लिए अंतर ध्यान करे। परमात्मा ने उसे क्यों रचा और उसके जीवन का क्या लक्ष्य निर्धारित किया, इसका बोध अंतर्दृष्टि ही दे सकती है।

आज जब महामारी के भय से मनुष्य घर के अंदर कैद होकर रह गया है तो उसकी आवश्यकताएं भी सीमित हो गई हैं। जिनके पीछे वह दिन भर भागता रहता था आज उनके बिना भी वह जी रहा है। आशा की जानी चाहिए कि परिस्थितियां सामान्य होने के बाद मनुष्य का व्यवहार पहले से भिन्न होगा। इससे मनुष्य के दुख भी कम होंगे।

डॉ. सत्येंद्र पाल सिंह

नई रणनीति की जरूरत

पीयूष द्विवेदी

प्रति एक हजार व्यक्तियों पर एक चिकित्सक का होना अच्छी स्थिति होती है, लेकिन भारत इस अनुपात से अभी दूर है

देश में लॉकडाउन को सफल बनाने के लिए सभी स्तरों पर प्रयास किए जा रहे हैं। देश की अधिकांश आबादी अपने घरों में बैठी हुई है और खुद को तथा देश को इस तीव्र संक्रमण वाली महामारी से बचाने में लगी है, लेकिन इस लॉकडाउन में भी देश के चिकित्सक, पुलिस बल जिस प्रकार से अपनी जान हथेली पर लेकर लोगों के लिए कार्य कर रहे हैं, उस योगदान के लिए कोई भी शब्द कम है। यह स्थिति भविष्य के लिए हमारे समक्ष कुछ प्रश्न भी छोड़े जा रही है।

अब तक हम यही मानते आए हैं कि देश की सरहदों पर खड़े सेना के जवानों को ही हर हाल में अपनी ड्यूटी निभानी पड़ती है। इस बात का ध्यान सैन्य बलों के प्रशिक्षण में भी रखा जाता है और उन्हें इस बात के लिए शरीर और मन से तैयार किया जाता है कि कैसी भी स्थिति में वे अपने दायित्व का निर्वाह कर सकें, लेकिन मौजूदा स्थिति ने हमें यह सोचने पर विवश कर दिया है कि सेना के साथ-साथ कुछ अन्य क्षेत्र भी हैं, जिनको आपात स्थिति की सेवाओं के लिए तैयार करने पर काम किया जाना चाहिए।

आज जो हालात हैं, वे किसी सैन्य युद्ध से कम नहीं हैं, बल्कि इस मायने में उससे बढ़कर ही हैं कि इसमें एक अदृश्य शत्रु से निपटना है। इस युद्ध में कोई सेना नहीं लड़ रही, बल्कि यहां लड़ाई हमारे स्वास्थ्यकर्मी, पुलिसकर्मी लड़ रहे हैं। क्या ऐसी चुनौती के लिए इनको प्रशिक्षित किया गया है? क्या ये शारीरिक-मानसिक रूप से इस तरह की आपदा में काम करने के लिए तैयार हैं? जैसे सेना के पास युद्ध की स्थिति के लिए सदैव गोला-बारूद और जरूरी उपकरण अतिरिक्त रूप से तैयार होते हैं, क्या स्वास्थ्य-पुलिस जैसे क्षेत्रों में ऐसी आपात स्थिति में काम करने के लिए जरूरी संसाधन हैं? दुर्भाग्यवश इन प्रश्नों के उत्तर काफी हद तक नकारात्मक ही हैं। भारत में चिकित्सकों की कमी की बात किसी से छिपी नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रति एक हजार व्यक्तियों पर एक चिकित्सक का होना अच्छी स्थिति होती है, लेकिन फिलहाल भारत इस अनुपात से दूर है।

निश्चित ही फिलहाल हमारा पूरा ध्यान सभी संभव विकल्पों को आजमाते हुए और जितना हो सके अपने स्वास्थ्यकर्मियों-पुलिसकर्मियों को सुरक्षित रखते हुए इस आपदा से निपटने पर होना चाहिए, लेकिन इस आपदा से निपटने के बाद हमें अपनी तैयारियों को ऐसी नई चुनौतियों जो भविष्य में और भी आ सकती है, के अनुरूप पुख्ता करने की दिशा में काम करना होगा।

इस आपदा ने हमें इस सत्य से अवगत करा दिया है कि आज केवल सेना को सुसज्जित एवं मजबूत रखकर कोई देश अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त नहीं रह सकता, क्योंकि इस नए समय में लड़ाई के और मोर्चे भी खुल गए हैं, जहां जीत हासिल करने के लिए नई रणनीति और तैयारी की जरूरत है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

अतीत ही नहीं वर्तमान भी कुछ सिखाता है

फिर से तय करनी होंगी प्राथमिकताएं शीर्षक से युक्त अपने लेख में चिराग जैन ने कलिंग युद्ध की विभीषिका से आए सुखद परिवर्तन की संकल्पना को वर्तमान की कोरोना विभीषिका से जोड़कर जिस भावी परिवर्तन की बात की है, वह समझने योग्य है। वस्तुतः अभी तक अतीत से सबक लेकर वर्तमान को ठीक करने के जिस मिथक पर हम चल रहे थे, उसको तोड़ने का समय आ गया है। 1975 के आपातकाल की देशव्यापी राजनीतिक विभीषिका के बाद मनुष्य जीवन को ठहरा देने वाली यह कोरोना विभीषिका है, जिसके संदेश को समझने की जरूरत है। प्रगतिशीलता के व्यामोह में हमने जिस भारतीयता के विचार को तिलांजलि दे दी, उसका दुष्परिणाम अनेक विकृतियों के रूप में हम भोग रहे हैं। कोरोना वायरस से लड़ने की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर लगते सवालिया निशान बता रहे हैं कि हमने भारतीयता से समन्वित प्राकृतिक जीवन से दूरी बनाकर जीवनदायिनी प्रकृति से जमकर खिलवाड़ किया है। महानगरीय जीवन संस्कृति में फलती-फूलती अप्राकृतिक जीवनचर्या से कमजोर हो चुकी रोग प्रतिरोधक क्षमता ही कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने में सहयोग कर रही है। इसके इतर इस वायरस से बचने के एकमात्र उपाय शारीरिक दूरी के प्रति जैसा आत्मानुशासन प्रदर्शित होना चाहिए था, वह दिखाई नहीं देता। लॉकडाउन के कड़े निर्देशों के बाद भी निजामुद्दीन में तब्लीगी मरकज में लगभग डेढ़ हजार की भीड़ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस जमात में सम्मिलित होने वाले साधारण व्यक्ति न होकर इस्लाम धर्म के ऐसे आलिम लोग थे जिन्हें मुस्लिम समाज अपने आदर्श के रूप में देखता है। लॉकडाउन की अवधि में ऐसा ही दूसरा उदाहरण दिल्ली के प्रवासी कामगारों और मजदूरों ने अलग-अलग समूहों में पैदल ही अपने घर की ओर कूच करके पेश किया है। शारीरिक दूरी की धज्जियां उड़ाने वाले हाल के ये दो उदाहरण हमें बहुत कुछ बता रहे हैं।

डॉ. वीपी पाण्डेय, अलीगढ़

दिशा-निर्देशों का पालन अहम

देश ही नहीं संपूर्ण विश्व में कोरोना नामक अदृश्य शत्रु कोहराम मचा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समस्त भारतीयों से 21 दिनों तक घर में ही रहने के लिए प्रार्थना की थी। देश के प्रत्येक नागरिक के जीवन को सुरक्षित करने के लिए संपूर्ण देश को लॉकडाउन करना महत्वपूर्ण और जरूरी निर्णय था। सभी धार्मिक स्थल, परिवहन, निजी एवं सरकारी कामकाज बंद करवा दिए गए हैं। यह सब निर्णय लेने के बाद भी कुछ लोग धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन कर लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ करने से बाज नहीं आ रहे हैं। हमारे कर्मवीर डॉक्टर, मीडिया, पुलिस, सफाई और पैरामेडिकल आदि कर्मचारी दिनरात हमारे स्वास्थ्य व अन्य सभी सुविधाओं के लिए अपनी जान की परवाह किए बिना लगे हुए हैं। इस समय हम सभी का एक ही धर्म बनता है और वह राष्ट्र सेवा है। किसी भी प्रकार के धार्मिक या सामाजिक कार्यक्रम करना जन विरोधी हैं। किसी भी प्रकार के अंधविश्वास से दूर रहें, झूठी अफवाहों से बचें और घर में ही रहकर देश के शीघ्र स्वस्थ एवं महामारी से बाहर निकलने के लिए प्रार्थना करें।

आचार्य राम कुमार बघेल शास्त्री, पलवल

मदद में न हो देरी

कोरोना के कहर से कोई भी राज्य अछूता नहीं है। देश में 14 अप्रैल तक का लॉकडाउन भी लागू है। इस लॉकडाउन में सबसे अधिक परेशानी गरीब वर्ग और दिहाड़ी मजदूरों के लोगों को हो रही है। हालांकि इनकी मदद के लिए सरकार और तमता समाजसेवी भी आगे आ चुके हैं, पर कुछ ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब अभी किसी को नहीं पता। जैसे कि कई मशहूर हस्तियों और उद्योगपतियों ने सरकार को मदद के लिए बड़ी धनराशि दी है। सवाल है कि उसे जरूरतमंदों तक पहुंचने में अभी और कितना समय लगेगा। मदद भी तभी महत्वपूर्ण साबित होगी जब समय पर जरूरतमंदों को मिले। सरकार को इस ओर ध्यान देना होगा कि मददगार लोगों को जरूरत के अनुसार मदद अवश्य और तुरंत पहुंचाई जाए।

अमन माहेश्वरी, दिल्ली विश्वविद्यालय

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :

दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

50 शीर्ष बैंकों की वैश्विक रैंकिंग में चीन के 11 बैंक शामिल हैं। दुख की बात है कि इसमें भारत का कोई भी बैंक नहीं है।

आजकल

समय की मांग है वर्क फ्रॉम होम

कोरोना संक्रमण के इस भयावह दौर में एक अच्छी बात यह है कि देश के नागरिकों ने एकजुटता का परिचय दिया है। साथ ही कार्यालयों की कार्य संस्कृति में 'वर्क फ्रॉम होम' यानी घर से काम करने के रूप में एक नए आयाम का विस्तार हुआ है। सरकारों के सामने काम का यह एक नया मॉडल और लोगों के लिए शारीरिक दूरी बनाए रखने का एक नया संदर्भ भी है। इसके कई फायदे सामने आए हैं जिन पर इस संकट के गुजर जाने के बाद निश्चित रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए

डॉ. विशेष गुप्ता
अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग

आज भारत समेत दुनिया के अधिकांश देश कोरोना वायरस संक्रमण की चपेट में हैं। सभी शैक्षिक, आर्थिक, धार्मिक और व्यावसायिक संस्थान बंद हैं। देश-दुनिया में इस समय एक भय का माहौल है। सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में कार्यरत लोगों को घर पर ही रहने, बाहरी लोगों से दूरी बनाए रखने और 'वर्क फ्रॉम होम' यानी घर से काम करने के लिए कहा गया है। केंद्र एवं प्रदेश की सरकारों ने स्वास्थ्य, सुरक्षा और रोजमर्रा की चीजों से जुड़े लोगों को अपनी लगातार सेवा देने तथा स्वयं को सुरक्षित रखने के दिशा-निर्देश भी जारी कर दिए हैं।

देश भर में जारी लॉकडाउन का असर तो दिख रहा है, परंतु लोगों के घरों पर ठहरने, वर्क फ्रॉम होम के साथ-साथ शारीरिक दूरी बनाने के कई स्तरीय परिणाम भी सामने आ रहे हैं। इस वर्क फ्रॉम होम से जुड़ा देश में पहला वह वर्ग है जो उच्च शिक्षित है, डिजिटल तकनीक में माहिर है और बड़ी कंपनियों में काम करता है। देश का यह वह वर्ग है जिसके पास शुरू से ही समय का अभाव रहा है। यहां तक कि ये लोग परिवार के साथ साथ खुद के लिए भी समय नहीं निकाल पाते थे। आज ये लोग वीडियो कांफ्रेंसिंग, चैटिंग, सोशल मीडिया एवं अन्य तकनीकी उपायों के जरिये कार्यालय संबंधी व्यापक कामकाज को घर से अंजाम दे रहे हैं। वर्क फ्रॉम होम से जुड़ा दूसरा वह बाबू वर्ग है जिसके कार्यालय की जिंदगी डिजिटल तकनीक के मुकाबले फाइलों में अधिक कैद रही है। निश्चय ही इस वर्ग के लोग ऑफिस के कार्यों से पूरी तरह आजाद हैं। इनके लिए लॉकडाउन पूर्ण अवकाश का अहसास करा रहा है।

वर्क फ्रॉम होम कार्य संस्कृति के भीतरी पक्ष को जानने से ज्ञात हुआ है कि इस लॉकडाउन ने सभी वर्गों के लोगों को इस समय अपने परिवार, बच्चों एवं वरिष्ठजनों से सघन संवाद करने और उन सभी के साथ यह समय व्यतीत करने का अवसर दिया है। परिवार में जो हंसी-खुशी पहले शुष्क हो गई थी, परिवार के इस संवाद ने उसे पुनर्जीवित करने का काम किया है। इससे यह तथ्य भी उभरकर सामने आया है कि निःसंदेह इस लॉकडाउन और शारीरिक दूरी से परिवार की थमी हुई जिंदगी को दोबारा शुरू करने का मौका मिला है।

वर्तमान लॉकडाउन के अन्य कई सकारात्मक असर भी हमारे सामने दिखाई दे रहे हैं। मसलन अधिकांश लोगों के अपने-अपने घरों में ही रहने के कारण सड़कों पर यातायात का कम होना, वाहनों का न्यूनतम प्रयोग तथा सड़क जाम से निजात इत्यादि के साथ में अनेक प्रकार के प्रदूषणों से मुक्ति भी इसके सकारात्मक परिणाम कहे जा सकते हैं। फ्लेक्सजॉब नामक संस्था ने वर्क फ्रॉम होम से संबंधित एक हजार लोगों पर अध्ययन करने पर पाया कि घर से काम करने वाले लोग अपने काम में 65 फीसद अधिक उत्पादित रहे हैं। इस रिपोर्ट में यह बताया गया है कि कार्यालय का काम करते-करते उनके कार्यालय के काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच में तमाम तरह के खांचे बन गए थे जिनसे भी कुछ हद तक उन्हें छुटकारा मिला है। घर से कार्यालय जाने का तनाव, रास्तों का जाम एवं ऑफिस पहुंचने में लेटलतीफी जैसे झंझटों से छुटकारा भी इससे मिला है। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के साथ में परिवार का वात्सल्य, समय पर भोजन एवं सामाजिक सीख के प्रबंध भी इससे उपलब्ध हो रहे हैं।

देखने में आया है कि पहले वर्क फ्रॉम होम की परंपरा केवल कुछ मल्टीनेशनल कंपनियों तक सीमित थी। उसके बाद यह संस्कृति उन कार्यालयों तक विस्तारित हुई जिन कार्यालयों में फाइलों की ऑनलाइन व्यवस्था कर दी गई थी। भारत सरकार के साथ राज्य सरकारों के आधे कार्यालयों में अभी पूरी तरह फाइलों का डिजिटलीकरण नहीं होने से सभी कार्मिकों को अभी वर्क फ्रॉम होम की सुविधा नहीं है। यही वजह है कि देश में लॉकडाउन के बाद वर्क फ्रॉम होम से देश की कार्यालयी व्यवस्था को अपेक्षित सहयोग नहीं मिल रहा है। हां, इतना जरूर है कि यह कार्य संस्कृति देश के कार्यालयी तंत्र को ऐसी विषम परिस्थितियों में संचालन करने के लिए सरकारों के लिए एक मॉडल जरूर है। लेकिन इसके लिए सरकारों को पहले अपने सभी कार्यालयों को बिना देर किए ऑनलाइन करने की जरूरत होगी। इसके साथ-साथ इससे जुड़े अपने सभी कार्मिकों को भी इस तंत्र के संचालन के लिए प्रशिक्षित करते हुए डिजिटल यंत्रों से लैस करना होगा। इस कोरोना वायरस की महामारी को देखते हुए आज जैसे हालात हैं, भविष्य में अब ऐसे संक्रमण नहीं होंगे, इसकी कोई गारंटी नहीं दी जा सकती। इसलिए ऐसे लॉकडाउन के कालखंड में भी देश का अंदरूनी तंत्र ठीक से काम करता रहे, इस बारे में समय रहते सरकारों को सोचने की आवश्यकता है। सभी लोगों के लिए वर्क फ्रॉम होम एक ऐसी व्यवस्था रहेगी जिससे सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर काम भी नहीं रुकेगा और सड़कों पर जाम और तरह-तरह के प्रदूषणों से भी मुक्ति मिलेगी।

तमाम वैज्ञानिक शोधों के अनुसार आज मानवता का भविष्य भी दांव पर लगा है। इसलिए भविष्य में भी संक्रमण की ऐसी समस्याओं के आने की आशंकाओं को नकारा नहीं जा सकता है। ऐसे संक्रमण काल में सरकारों के साथ-साथ बच्चों एवं महिलाओं से लेकर बुजुर्गों तक सभी संघर्ष करने को मजबूर होते हैं। आर्थिक संसाधनों को भी भारी नुकसान पहुंचता है। असल में देखा जाय तो यह सब क्षति देश की ही होती है। इसलिए सरकारों को वर्क फ्रॉम होम जैसे मॉडल को और अधिक विकसित करते हुए सभी लोगों तक इसकी पहुंच बनानी होगी। उससे ऐसे संकट आने पर मानवता का बचाव भी होगा और कार्मिकों के रास्तों की तमाम दुश्वारियां भी कम होंगी। साथ ही उन्हें अनेक प्रकार के तनावों से छुटकारा मिलेगा और देश की कार्यालयी व्यवस्था भी निर्बाध गति से चलती रहेगी। इसलिए सरकारों को इस संकट के समय में इस दिशा में समय रहते सोच विकसित करने की आवश्यकता है।

घर से दफ्तरी काम का भविष्य

कैलाश बिश्नोई

भारत सहित दुनिया के 50 से ज्यादा देशों ने बड़े हिस्सों में लॉकडाउन कर रखा है। इस वजह से 230 करोड़ से अधिक लोग अपने घरों में कैद हैं और आवश्यक सेवाओं को छोड़कर आवाजाही पर पूरी तरह प्रतिबंध है। भारत में भी जिस तरह 14 अप्रैल तक के लिए लॉकडाउन की घोषणा हुई है लोग इसके आदी नहीं है, इसलिए इसके हिसाब से ढलने में लोगों को समय लग रहा है। ऐसे में कामकाजी दुनिया भी बड़े बदलाव से गुजर रही है। कोरोना वायरस से पैदा महामारी के कारण हमारे काम करने का ढंग भी बदल गया है और स्कूलों, सरकारी विभागों, चिकित्सा सेवाओं और कारोबार से जुड़े लाखों लोग घर बैठकर काम कर रहे हैं। चूंकि काम को पूरी तरह से रोका नहीं जा सकता और स्वास्थ्य का ख्याल रखना भी बेहद जरूरी है, ऐसे में वर्क फ्रॉम होम ही बेहतर विकल्प है। केंद्र सरकार के अलावा कई राज्य सरकारों तथा निजी कंपनियों ने भी कर्मचारियों को घर से काम करने (वर्क फ्रॉम होम) की सुविधा दी है। इस कारण से पूरे देश में गैर इरादतन भी लोग घर से काम करने के राष्ट्र स्तरीय प्रयोग के लिए बाध्य हो गए हैं।

कोविड-19 महामारी के पहले भी बहुत सारे भारतीय वर्क फ्रॉम होम के विकल्प को आजमाना चाहते थे। लेकिन अब कंपनियों को मजबूरन अपने कर्मचारियों को घर से काम करने के लिए कहना पड़ा है। यहां तक कि सरकारी अधिकारी भी कंपनियों से ऐसा करने के लिए कह रहे हैं। यह उन कंपनियों के लिए एक तरह से टेस्ट है, जो रिमोट वर्किंग को आजमाना चाहती थीं कि इसके नतीजे कैसे होते हैं। प्राइवेट सेक्टर में प्रबंधन यह मानकर चल रहा है कि वर्क फ्रॉम होम लंबे समय तक चलेगा इसलिए सबको इसकी प्रैक्टिस ऐसी करवाई जाए कि सब इसमें ढल जाएं। हालांकि घर से काम करने का ट्रेंड कई कंपनियों के लिए अभी पूरी तरह नया सा है।

कामकाज की नई संस्कृति में कई चुनौतियां भी हैं। घर से काम करने पर दफ्तर का डाटा लीक होने की आशंका जताई जा रही है। दुनिया भर में कोरोना संकट के चलते साइबर हमलों की कई घटनाएं देखने को मिली हैं। अस्पतालों से लेकर कंपनियों तक के डाटा लीक के मामले सामने आए हैं। साइबर कानून विशेषज्ञों की राय में भारत में भी घर के इंटरनेट पर दफ्तर का काम करने से ऐसी घटनाएं सामने आ सकती हैं। भविष्य में ये मामले अदालतों में जाने से कंपनियों का समय भी बर्बाद होगा।

देश भर में कई कंपनियों के पास वर्क फ्रॉम होम के लिए सही सेटअप नहीं है। एक अग्रणी आइटी सर्विस मैनेजमेंट कंपनी गार्टनर के अनुसार, भारत की 54 प्रतिशत कंपनियों के पास ऐसा सिस्टम और तकनीक नहीं है कि वे अपने कर्मचारियों से घर से काम करवा सकें। ऐसे में जब इस महामारी का प्रकोप खत्म हो जाएगा तो बहुत सारी कंपनियां अपने कामकाज के पुराने ढर्रे पर लौट सकती हैं।

हालांकि बहुत सी कंपनियों के लिए घर से काम करने का यह भरोसेमंद विकल्प आगे भी जारी रहने वाला है। कोरोना महामारी के दबाव में अब जब इसे अपनाया गया है तो यह माना जाने लगा है कि अब इसका व्यावहारिक पक्ष जल्द ही कंपनियों को समझ में आएगा और वे इसकी संस्कृति को सीखेंगी। इससे आगे चल कर दूरस्थ कामकाज के नए मॉडल विकसित होंगे। लेकिन श्रम कानूनों में घर पर बैठकर काम करने के विकल्प को व्यावहारिक नहीं माना गया है।

श्रम कानूनों में बदलाव को लेकर प्रस्तावित लेबर कोड वर्क फ्रॉम होम को कानूनी मान्यता देने को लेकर पूरी तरह मौन है। हालांकि इस संहिता में गिग इकोनॉमी, असंगठित क्षेत्रों तथा अनौपचारिक श्रमिकों को मान्यता दी गई है। ऐसे में सरकार को घर से कार्यालय का काम करने वालों को कानूनी मान्यता देने लिए गंभीरता से सोचना शुरू करना चाहिए, क्योंकि वर्क फ्रॉम होम एक ऐसा विचार है, जिसका अब वक्त आ गया है।

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्येता हैं)

खरी-खरी

नायक के नाम एक गृहिणी की चिट्ठी

डॉ. साधना बलवटे

जै राम जी की मोदी जी। हम सब यहां कुशल से हैं। अब जब घर में ही पड़े हैं तो अकुशल होने की कोनो स्थिति भी नहीं है सो झक मारके कुशल होंगे ही। मोदी जी, पहली बार जब आपने दिन भर घर से बाहर नहीं निकलने और ताली बजाने की कही तो हमने वैसा ही किया। आपने कही थाली बजाओ, हमने थाली बजाई। आपने कही हाथ धोओ, हमने हाथ धोये। आपने कही काम वाली को छुट्टी देओ, हमने दे दई। कहने का मतलब यह कि आप की कही हमारे लिए पत्थर की लकीर। हमरे क्या हमार पतिदेव भी आपकी कोई बात टाल न सकत।

एक आप ही हो जिनको वो हाथ धरने देत हैं। हमें तो जब-तब डपट देत हैं। ऐसो है कि हमने आपकी इत्ती बात मानी, अब आप भी हमारो एक काम कर देओ। एक बार फिर आठ बजे टीवी पर प्रकटो और हमार पतिदेव से बस इत्तो कह देव कि भैया घर में रह रहे भोत अच्छी बात है, पर ये तनिक देर में चाय, तनिक देर में नाश्ते की फरमाइश ना करें। लगे हाथ लरकन के भी समझाय देओ कि दिन भर पबजी न खेलें, तनिक सब्जी काटने में हमरी मदद कर दें।

हो सके तो आप इत्तो और कर देओ कि ई कलजुगी सौतन फुनिया से हमार पतिदेव को तलाक करवा देओ। कभी वाट्सएपी तो कभी फेसबुकी, कभी यूट्यूबिया सी दिखत है। और कित्ते नाम गिनाएं। हम कह दे रहे हैं कि इससे छुट्टी नहीं हुई तो हमसे हो जई हैं। हम जानत हैं, वे आपकी बात मना कर ही नहीं सकत। और जो मना करने को कोशिश भी करे तो पता नहीं आप कैसे उनका क्वारंटाइन कर देव। न जाने कित्तो कालो जादू आवे है आपके।

आप एक काम और कर देव कि जो लोगन तालाबंदी में भी बाहर निकल रहे हैं, उनकी नसबंदी करवा देव। ससुरे वैसे ही हम सौ ऊपर तीस करोड़ होई गए हैं। इनके बाहर निकलबै से तनक ऊंच-नीच हो गई तो? ऐलते-चलते ये बच्चन लोग की भी सुन लो। कह रहे हैं कि जै थाली बजाने को पिरोगराम भोत अच्छो थो। रोज ही हो जातो तो इक्कीस दिन बढ़िया कट जातो। आगे आप खुद समझदार हो। कम लिख्यो है, ज्यादा समझो।

ट्वीट-ट्वीट

तब्लीगी जमात के लोगों और उनके संपर्क में आए लोगों को अब खुद ही बाहर आकर प्रशासन को अपने बारे में जानकारी देनी चाहिए। किसी के लिए नहीं तो कम से कम अपनी जिंदगी बचाने के लिए ही ऐसा कर लो, क्योंकि आपको भी नहीं पता कि आपको वायरस ट्रांसफर हुआ या नहीं। प्रशासन ढूंढते हुए पहुंचे तब तक कहीं देर न हो जाए।

सुशांत सिन्हा@SushantBSinha

यकीनन देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात का जमावड़ा गैर-जिम्मेदाराना था। इसका आयोजन और इसे होने देना दोनों ही आपराधिक मामले हैं। लेकिन क्या इसके लिए किसी एक धर्म पर आक्षेप लगाना चाहिए? बिल्कुल भी नहीं। यह वक्त कट्टरता दिखाने का नहीं, बल्कि सभी की बेहतरी पर ध्यान केंद्रित करने का है। तभी हम मौजूदा कोरोना संकट से पार पा सकेंगे।

निधि राजदान@Nidhi

जानलेवा कोरोना वायरस के चलते केवल पिछले पांच दिनों में अमेरिका में मृतकों की संख्या तीन गुना बढ़कर 3,000 के आंकड़े को पार कर गई। सोमवार को अकेले न्यूयॉर्क में ही 900 लोग मर गए। ये रुझान हम लोगों के लिए भी चेतावनी हैं कि घर में रहकर खुद को सुरक्षित करें। नहीं तो छोटी सी लापरवाही घातक हो सकती है।

ब्रह्मा चेलानी@Chellaney

जागरण जनमत — कल का परिणाम

पलायन के दौरान रास्ते में फंसे लोगों को क्वारंटाइन के लिए शेल्टर में रखने का सरकारी फैसला सही है?

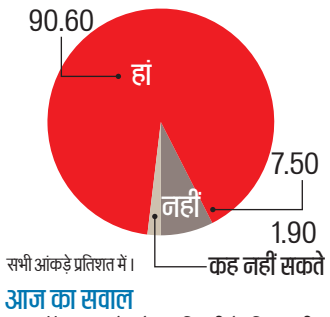

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या लॉकडाउन के दौरान दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी मरकज में शामिल लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

सरकारें करती रहीं घूम-घूम ऐलान,
मरकज में सोए रहे भाई चद्दर तान।
भाई चद्दर तान वहां से ले बीमारी,
घूम-घूम कर देश यहां से वहां प्रसारी।
हम हो लापरवाह न खुद कर्तव्य विचारें,
कैसे लाखों जान बचाएं तब सरकारें!

– ओमप्रकाश तिवारी

क्रांतिकारी साबित होगा बैंकों का विलय

ब्रजेश कुमार तिवारी
एसोसिएट प्रोफेसर, जेएनयू

केंद्र सरकार ने पिछले साल अगस्त में बैंकों के विलय की घोषणा की थी और इस साल चार मार्च को केंद्रीय कैबिनेट ने 10 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को चार बैंकों में समेकित करने की मंजूरी दी है जो आज यानी एक अप्रैल से लागू होगा। बैंकिंग क्षेत्र में सबसे बड़े विलय से अब सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की संख्या 12 रह जाएगी। दरअसल घरेलू और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने के लिए बैंकिंग उद्योग में समेकन की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। निश्चय ही बड़ी इकाइयां बनाने का यह निर्णय भारतीय बैंकों को अर्थव्यवस्था की उच्च वित्त पोषण जरूरतों को पूरा करने में सक्षम बना देगा और वैश्विक स्तर पर अधिग्रहण करने में मदद करेगा।

बैंकिंग प्रणाली किसी भी अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा होती है और बैंक जनता के धन के ट्रस्टी होते हैं। इसलिए शेयर धारकों की तुलना में जमाकर्ता बैंकों के कल्याण में अधिक निहित होते हैं। एक बैंक का विफल होना एक निर्माण कंपनी की विफलता की तुलना में अधिक हानिकारक होता है। विलय और अधिग्रहण आज बाजार की रणनीति का अभिन्न अंग हैं। यह एक निश्चित भौगोलिक पैरामीटर तक सीमित नहीं है, न ही यह एक नया विकास है। दरअसल यह एक वैश्विक घटना है, जिसका अनुमान है कि दुनिया भर में हर साल चार हजार से ज्यादा विलय और अधिग्रहण की घटना को अंजाम दिया जाता है।

भारतीय बैंकिंग प्रणाली के लिए विलय और अधिग्रहण के माध्यम से बैंकों का समेकन कोई नई बात नहीं है। यह आधुनिक बैंकिंग के शुरुआती दिनों से जारी है, जब 18वीं शताब्दी में अंग्रेजी हुकूमत ने तीनों प्रेसिडेंसी बैंकों का विलय करके इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया का गठन किया था जो वर्तमान में स्टेट बैंक

ऑफ इंडिया के रूप में काम कर रहा है।

आज के वैश्विक आर्थिक परिवेश में दक्षता में सुधार करना, नए बाजारों तक पहुंच कायम करना और नई क्षमताओं का निर्माण करना बेहद महत्वपूर्ण हो गया है। विनिवेश और प्रतिस्पर्धा ने बैंकों को अपने रिटर्न को बढ़ाने के लिए नए-नए तरीकों की तलाश करने के लिए मजबूर किया है। यह एक स्पष्ट तथ्य है कि नई इकाइयों की स्थापना की तुलना में विलय और अधिग्रहण के माध्यम से विकास सस्ता और तेज होता है। बैंकिंग क्षेत्र में विलय और अधिग्रहण प्रतिस्पर्धा में अभूतपूर्व वृद्धि, पूंजी प्रवाह के निरंतर उदारीकरण, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय वित्तीय प्रणालियों का एकीकरण और वित्तीय नवाचार आदि के मुख्य कारण हैं।

बैंकिंग उद्योग में प्रतिस्पर्धा का सामना करने और वैश्विक मानकों के बढ़ने पर आकार बहुत मायने रखता है। बैंकों का यह विलय लेन-देन की लागत को कम करके अर्थव्यवस्था के आकार को बढ़ाएगा। विलय और अधिग्रहण वित्तीय ताकत बनाने, बढ़ते खुदरा व्यापार के बड़े हिस्से पर कब्जा करने, अधिक जोखिम लेने और बेहतर क्षेत्रीय एवं वैश्विक उपस्थिति को सुनिश्चित तथा सुरक्षित करने में मदद करेंगे। साथ ही यह नए बाजारों में तत्काल प्रवेश सुनिश्चित करेगा और संसाधनों के समेकन के माध्यम से परिचालन लागत को कम करेगा।

विलय और अधिग्रहण बैंकिंग उद्योग में पूंजी पर्याप्तता के मानदंडों की आवश्यकता को पूरा कर पाएंगे। यह विलय भारतीय बैंकों को बड़े आकार का लाभ प्रदान करेगा, जो कि अधिकांश विदेशी बैंकों के पास है। ध्यान रहे, संपत्ति के मामले में भारत का सबसे बड़ा बैंक भारतीय स्टेट बैंक, शाखा नेटवर्क के मामले में चीन के आइसीबीसी बैंक के बाद दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा बैंक है। फिर भी दुनिया के शीर्ष एक हजार बैंकों में वह 55वें स्थान पर ही है। शीर्ष 50 बैंकों की वैश्विक रैंकिंग में चीन के 11 बैंक हैं, लेकिन इसमें भारत का कोई भी बैंक नहीं है। दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद हमारे पास कोई भी बड़े आकार का बैंक नहीं है जो विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सके।

यह सच है कि विलय की प्रक्रिया एक बैंक को और मजबूती प्रदान करती है ताकि वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा हो सके, लेकिन विलय के बाद निःसंदेह कुछ चुनौतियां भी आएंगी जिनमें एनपीए, कर्मचारियों का भावनात्मक असंतुलन, सांस्कृतिक परिवर्तन और कार्य संस्कृति का बेमेल होना प्रमुख हैं।

प्राइस वाटरहाउस कूपर्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत वर्ष 2040 तक दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा बैंकिंग हब हो सकता है। तेज आर्थिक विकास के लिए एक मजबूत बैंकिंग प्रणाली महत्वपूर्ण है। केंद्र सरकार का यह फैसला बैंकिंग प्रणाली की व्यापकता और गुणवत्ता में निश्चित तौर पर सुधार लाएगा और इसके दूरगामी परिणाम होंगे।

मंथन

शिक्षा में सुधार का अवसर

कोरोना के खिलाफ इस जंग को हम जीतेंगे जरूर, परंतु यह महामारी हमारी शिक्षा प्रणाली की विफलताओं को भी उजागर करने में कामयाब रही है

डॉ. गुंजन राजपूत
विभागाध्यक्ष, स्कूल ऑफ एजुकेशन, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर

कोरोना वायरस की वैश्विक महामारी से आज लगभग सभी देश जूझ रहे हैं। कम हो या ज्यादा, मजबूत हो या कमजोर इस महामारी ने आज विश्व के हर कोने में मानवता के वजूद पर सवाल खड़ा कर दिया है। जहां घर पर बैठे लोग हर पल खबरों के जरिये एक भयावह भविष्य की तस्वीर देख रहे हैं, वहीं दूसरी ओर बाजार भरा पड़ा है ऐसे चुटकुलों एवं वीडियो से जो घर बैठे लोगों के लिए एक गुदगुदा माहौल बना रहे हैं। इनमें से बहुत से वीडियो हैं देश के कोने-कोने से आए पुलिसवालों एवं जनता के जिनमें पुलिसकर्मी कहीं जबरन तो कहीं विनम्रता से जनता को घर पर बैठने को कह कर सरकार का साथ दे रहे हैं। इन वीडियो में अगर हम देखें तो ज्यादातर पुलिस से टकराते हुए हमारे युवा नजर आएंगे। यहां सवाल पुलिसवालों की कर्तव्यनिष्ठा या मनमानी का नहीं है, यहां सवाल हमारी मानसिकता को जन्म देने वाली हमारी शिक्षा प्रणाली का है। महामारी की इस जंग को हम जीतेंगे जरूर, परंतु यह महामारी हमारी शिक्षा प्रणाली की विफलताओं को उजागर करने में कामयाब रही है। प्रधानमंत्री ने 22 मार्च को अपने संबोधन में दो बातों पर जोर दिया था-संकल्प और संयम। यकीनन उन्हें देशवासियों से और खासकर युवा वर्ग से उम्मीद रही होगी कि वे इन दोनों ही कौशल का ज्ञान रखते होंगे। और हो भी क्यों ना, आखिर भारत विश्व का सबसे जवान देश है जहां युवाओं की संख्या पूरी जनसंख्या का एक बड़ा अनुपात है।

कोरोना के चलते अन्य देशों में जान गंवाने वालों में सबसे ज्यादा संख्या बुजुर्गों की है, तो यहां सबसे बड़े संकल्प और संयम की उम्मीद है युवा पीढ़ी से। परंतु कई वीडियो में यही युवा इन कर्तव्यों की धज्जियां उड़ाते दिख रहे हैं। क्या यही अपेक्षा थी या है हमको युवाओं से? शायद हमारी शिक्षा प्रणाली शायद कुछ हद तक विफल रही है निचली कक्षाओं में संकल्प और संयम जैसे कौशल का विकास करने में। अगर हम देखें तो पाएंगे कि हमारी शिक्षा प्रणाली में अमूमन रोजगार पाने पर अधिक जोर दिया जाता है। कमी नहीं है हमारे देश में ऐसे युवाओं की जो ऐसे विषयों की तरफ आकर्षित होते हैं जिससे वे बस कोई रोजगार पा जाएं। हमारे देश का बाजार भी रोजगार पाने पर आधारित है। सरकार के विरोध में बेरोजगारी एक बड़े मुद्दे का काम करती है। युवा वोट देने का आधार भी रोजगार के प्रावधानों से जोड़ते हैं। यहां सवाल है कि आज इस आपदा में जहां हम वैश्विक व्यापार की निर्भरता को लेकर अपनी अर्थव्यवस्था के लिए चिंतित हैं वहां हमारी शिक्षा प्रणाली में व्यापारिक दृष्टिकोण को पैदा करने की कितनी क्षमता है? हमारी शिक्षा प्रणाली युवाओं में रोजगार बढ़ाने के गुण पर कितना ध्यान देती है? यहां प्रधानमंत्री द्वारा घोषित मेड इन इंडिया को अपनी शिक्षा प्रणाली से जोड़कर एक साझा मॉडल तैयार करने के बारे में सोचना चाहिए। वैसे संयुक्त राष्ट्र के पूर्व उपसचिव अजय छिब्बर ने कहा है कि दूसरे देशों की तुलना में कोरोना वायरस से भारत को कम आर्थिक नुकसान होगा, क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ाव अपेक्षाकृत कम है, फिर भी छोटे कारोबारों द्वारा अपनी अर्थव्यवस्था को और मजबूत बनाया जा सकता है। जिस तरह मेड इन इंडिया जोर देता है छोटे व्यापारों द्वारा भारत में ही उत्पादन करने पर, वहीं हमारी शिक्षा प्रणाली को व्यापारिक कौशल पर जोर देना चाहिए। व्यापारिक कौशल विकसित कर मेड इन इंडिया जैसी योजनाओं का लाभ पा कर लघु उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सकता है और विश्व में व्यापारिक निर्भरता को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। व्यापारिक दृष्टिकोण दूरदर्शिता के कौशल का विकास करता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 11 मार्च को कोरोना को महामारी घोषित किया था। उसके बाद जहां कई लोगों ने इसके दूरगामी परिणामों को समझा, वहीं कई युवा आज भी इसके भयावह परिणामों को समझ नहीं पा रहे हैं। यहां दूरदर्शिता के कौशल का अभाव झलकता है तो इसका अर्थ यह लगाया जा सकता है कि अगर सरकार कठोर कदम नहीं उठाती तो शायद युवा वर्ग इसके दूरगामी परिणाम देख ही नहीं पाता।

भारत विश्व में अपने मजबूत सामाजिक ढांचे के लिए जाना जाता है और पूरे विश्व में यह अनुमान लगाया जा रहा है कि अपने इसी मजबूत सामाजिक ढांचे की बदौलत भारत इस लड़ाई को लड़ने में सक्षम हो सकता है। परंतु भारत जहां एक ओर मजबूत सामाजिक ढांचे के दम पर लड़ रहा है, वहीं दूसरी ओर धार्मिक विभाजन का दर्द झेल रहा है। धार्मिक विभाजन भारत के इतिहास का कोई नया पन्ना नहीं है। परंतु इतिहास के पन्नों में क्या मौजूदा मानव सभ्यता ने इस तरह की महामारी की रुद्रता देखी होगी? लॉकडाउन की स्थिति में जहां हर वर्ग प्रभावित हुआ है वहीं हर वर्ग धर्म के आधार पर विभाजित होता भी दिख रहा है। जहां सरकार सबको इस आपदा से सहजता एवं सामंजस्य से लड़ने को कह रही है, वहीं कुछ युवा सोशल मीडिया के द्वारा लोगों द्वारा की जा रही मदद को भी धर्म के आधार पर बांट रहे हैं। यहां शायद हमारी शिक्षा प्रणाली की राष्ट्रवाद की भावना ना पनपाने की विफलता दिखती है। यह पहली आपदा है जिसे एक ही समय पर हर भारतवासी झेल रहा है और जहां सरकार के नियमों का पालन हर भारतीय की मजबूरी भी है, परंतु यह नामानी हमारी शिक्षा प्रणाली की नाकामी का ही नतीजा है, क्योंकि हम शायद विफल रहे हैं सबको एकता और राष्ट्रवाद सिखाने में। ऐसे में इस विषय पर हमें सोचना होगा।

अगले साल तक लागू रहेगी विदेश व्यापार नीति

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना महामारी से जारी लड़ाई को देखते हुए सरकार ने विदेश व्यापार नीति 2015-20 की अवधि को एक साल के लिए बढ़ा दिया है। 31 मार्च को विदेश व्यापार नीति की अवधि समाप्त हो रही थी। विदेश व्यापार नीति के तहत ही निर्यात-आयात पर व्यापारियों को कई प्रकार की छूट और सुविधाएं देने का प्रावधान होता है। विदेश व्यापार नीति की अवधि में एक साल के विस्तार के साथ ही इस नीति के तहत व्यापारियों को मिलने वाले तमाम प्रोत्साहन पहले की तरह जारी रहेंगे।

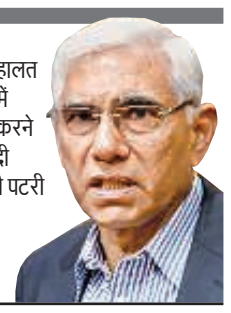

भारतीय बैंकों की वित्तीय हालत फिलहाल खस्ता है। ऐसे में सुधार के लिए एक रोडमैप तैयार करने की सख्त जरूरत है। जितनी जल्दी सुधार होंगे, इकोनॉमी उतनी जल्दी पटरी पर लौटेगी।

— विनोद राय, पूर्व सीएजी

दो महीने ही किस्त अदायगी से राहत

वजह ▶ मार्च के अंतिम दिन भी कई बैंकों ने काटी ग्राहकों के खाते से किस्त की रकम

डेढ़ दर्जन बैंकों ने जारी किया कर्ज अदायगी भुगतान पर रोक संबंधी निर्देश

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रतीकात्मक।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने पिछले शुक्रवार को एलान किया कि तीन महीनों के लिए ग्राहकों को टर्म लोन की किस्त नहीं चुकानी पड़ेगी। यह मार्च माह से ही लागू किया गया था। मंगलवार को सरकारी क्षेत्र के तकरीबन 13 बैंकों समेत निजी क्षेत्र के दूसरे बैंकों ने अपनी ब्रांचों को भी इस संबंध में निर्देश जारी कर दिया कि एक मार्च से 30 मई, 2020 के बीच हर तरह के टर्म लोन की अदाएगी तीन महीनों के लिए टाल दी गई है। लेकिन इस नियम का एक दूसरा पहलू यह है कि ग्राहकों को तीन नहीं, बल्कि दो ही महीने की राहत मिलेगी। दरअसल यह फैसला 27 मार्च को लिया गया था और तब तक सामान्यतया 99 फीसद किस्तें चली जाती हैं। उपर से सूचना यह है कि कई बैंकों ने मंगलवार (31 मार्च, 2020) तक बकाये लोन को ऑटोमेटिक डेबिट किया है। बैंकों के मुख्यालय से शाखाओं तक सूचना भेज दी गई है लेकिन अभी ग्राहकों को इस बारे में सूचना नहीं मिली है। अगले कुछ दिनों के दौरान जिन ग्राहकों की मासिक किस्त काटी जानी है, उन्हें भी बैंकों से सूचना आ रही है कि अपने खाते में पर्याप्त पैसा रखें।

इसके अलावा भी इस स्कीम को लेकर कुछ दूसरे सवाल हैं जिनके जवाब अभी बैंकों की तरफ से नहीं दिए गए हैं। मसलन, एसबीआइ की तरफ से बताया गया है कि मार्च से मई के बीच सारे टर्म लोन की अदाएगी को तीन महीने के लिए बढ़ाया जा रहा है। साथ ही इस अवधि के लिए कंपनियों के वर्किंग कैपिटल पर देय ब्याज को भी बढ़ाया जा रहा है। इसमें यह स्पष्ट नहीं है कि तीन महीने के ब्याज का भुगतान ग्राहकों को कब करना पड़ेगा। आरबीआइ का निर्देश साफ है कि इस तीन महीने की अवधि के दौरान ब्याज की गणना होगी जिसका भुगतान आगे करना होगा। अब सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने जो सूचना दी है उसमें टर्म लोन को लेकर स्थिति साफ की गई है। इसमें कहा गया है कि टर्म लोन में मूल धन व इस पर देय ब्याज, मासिक किस्त, क्रेडिट कार्ड बकाया शामिल है। बैंक ऑफ इंडिया का निर्देश थोड़ा और साफ है क्योंकि इसमें सभी तरह के पर्सनल लोन, हाउसिंग लोन, व्हीकल लोन, एजुकेशन लोन, कृषि लोन को शामिल किया गया है।

सभी बैंकों ने कहा है कि इन तीन महीनों के लिए लोन भुगतान को तीन महीने के लिए बढ़ाया जा रहा है। हालांकि ब्याज को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं की गई है। बैंकिंग विभाग के सूत्रों के मुताबिक जिस अवधि के लिए बैंकों ने कर्ज अदायगी को माफ किया है उस अवधि के दौरान ब्याज गणना होगी लेकिन इसके भुगतान को लेकर बैंक आगे फैसला करेंगे। बैंकों के पास चौथे महीने में तीन महीने के दौरान देय ब्याज को एक साथ लेने का विकल्प भी होगा जिसे मासिक किस्त के साथ जोड़ कर लिया जा सकेगा। इस बारे में उन्हें ग्राहकों को पहले सूचना देनी होगी। मोटे तौर पर बैंकों के इस निर्देश का मतलब यह हुआ कि जिन लोगों की कर्ज की अवधि मार्च 2025 में समाप्त हो रही है अब वह जून, 2025 में समाप्त होगी। यानी निर्धारित अवधि से तीन महीने ज्यादा भुगतान करना होगा।

घर से काम कर रहा इनकम टैक्स विभाग

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : मार्च का महीना आय कर अधिकारियों के लिए किस तरह से बीतता है यह उनसे बेहतर कोई नहीं जानता। राजस्व संग्रह के लक्ष्य को पूरा करने में समूचे विभाग में हड़कंप जैसी स्थिति बनी रहती है। लेकिन इस बार हालात दूसरे हैं। कोरोना वायरस के चलते जिस तरह से देशभर में लॉकडाउन लगा है, उसकी वजह से आयकर अधिकारियों को भी घर से ही काम करना पड़ रहा है। हालांकि इन अधिकारियों को घर से भी पूरी ड्यूटी बजानी पड़ रही है, करदाताओं को फोन भी करना पड़ रहा है और उनसे कर अदायगी के बारे में पूछताछ भी करनी पड़ रही है। अपने अपने इलाकों की रिपोर्ट रोजाना अधिकारियों को भेजनी पड़ रही है। इस पर आयकर अधिकारियों का एसोसिएशन नाराज भी है कि अभी के माहौल में ऐसा करना संवेदनहीनता है।

दूसरी तरफ, वित्त मंत्रालय के सूत्रों का कहना है कि यह संवेदनहीनता नहीं है क्योंकि आयकर विभाग का काम करदाताओं की मदद करना है। फोन करने का मतलब यह होता है कि वह करदाताओं की समस्याओं के बारे में पूछें और उसका समाधान करें। यही उनकी ड्यूटी है।

शेयर बाजार में निवेशकों को मायूस कर गया वित्त वर्ष

मुंबई, प्रेट्र : बीते वित्त वर्ष (2019-20) के आखिरी कारोबारी सत्र में घरेलू शेयर बाजारों में बिकवाली पर जोर रहा। इस दौरान बीएसई का 30-शेयरों वाला प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स 1,028.17 अंकों यानी 3.67 प्रतिशत सुधार के साथ 29,468.49 अंक पर बंद हुआ। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का 50-शेयरों वाला प्रमुख सूचकांक निफ्टी भी मंगलवार को कारोबार के आखिर में 316.65 अंक यानी 3.82 प्रतिशत उछलकर 8,597.75 अंक पर बंद हुआ। हालांकि आखिरी कारोबारी सत्र में इस बढ़त के बावजूद पूरे वित्त वर्ष के लिए सेंसेक्स में 9,204.42 अंक यानी 23.80 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। निफ्टी भी पूरे वित्त वर्ष के दौरान 3,026.15 अंक यानी 26.03 प्रतिशत फिसल गया।

मौजूदा कोरोना संकट के बीच घरेलू शेयर बाजारों को बीते मार्च ने कई ऐसे दिन दिखाए, जिनकी निवेशक कतई उम्मीद नहीं कर रहे थे। इस वर्ष मार्च में सेंसेक्स और निफ्टी ने न केवल अपनी सबसे बड़ी गिरावटें देखीं, बल्कि दोनों सूचकांकों की पांच सबसे बड़ी गिरावटों में से तीन पिछले महीने ही आईं।

मंगलवार को सेंसेक्स पैक में सबसे ज्यादा 7.84 प्रतिशत की बढ़त आइटीसी के स्टॉक्स में दर्ज की गई। आरआइएल, ओएनजीसी, टाटा स्टील, टेक महिंद्रा, सन फार्मा और एसबीआइ के शेयर भी खासा उछले। सेंसेक्स में सिर्फ चार स्टॉक्स इंडसइंड बैंक, मारुति सुजुकी, बजाज फाइनेंस और टाइटन के शेयरों में गिरावट देखी गई। सेक्टोरल इंडेक्स के मामले में बीएसई के सभी इंडेक्स चढ़कर बंद हुए। बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स में भी करीब तीन प्रतिशत तक का उछाल देखा गया।

कारोबारियों का कहना था कि एशियाई बाजारों की रिकवरी और चीन की उत्पादन गतिविधियों में सुधार के चलते घरेलू शेयर बाजारों में निवेशकों का रुख सकारात्मक रहा। चीन का मैन्यूफैक्चरिंग पीएमआइ मार्च में 52 पर पहुंच गया, जो फरवरी में 35.7 के स्तर तक गिर गया था। दिन के कारोबार के बारे में जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के रिसर्च प्रमुख विनोद नायर का कहना था कि चीन की उत्पादन गतिविधियों में सुधार ने दुनियाभर के शेयर बाजारों को भरोसा दिया। विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआइआइ) द्वारा की जा रही बिकवाली भी बीते दो कारोबारी सत्रों में थमती नजर आई है। हालांकि विदेशी बाजारों के घटनाक्रम ही आने वाले दिनों में भारतीय शेयर बाजारों को दिशा देंगे।

लेखाजोखा

- आखिरी कारोबारी दिन 1,028 अंकों की बढ़त के बावजूद मंगलवार को खत्म वित्त वर्ष रहा निराशाजनक
- पूरे वित्त वर्ष के दौरान सेंसेक्स में करीब 24 और निफ्टी में 26 प्रतिशत की गिरावट

निवेशकों के डूबे 37 लाख करोड़ से अधिक

नई दिल्ली, प्रेट्र : 31 मार्च को खत्म वित्त वर्ष में शेयर बाजार में निवेशकों के 37.59 करोड़ रुपये डूब गए। वित्त वर्ष के दौरान बीएसई का 30-शेयरों वाला सेंसेक्स 9,204.42 अंक फिसल गया, जबकि निफ्टी को 3,026.15 अंकों का झटका लगा। कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए सरकार द्वारा मार्च में राष्ट्रीय स्तर पर लॉकडाउन की घोषणा के चलते यह महीना निवेशकों के लिए बुरा स्वप्न साबित हुआ, क्योंकि अकेले इसी महीने बीएसई-सेंसेक्स में 8,828.8 अंकों की गिरावट हुई। वित्त वर्ष के आखिरी महीने यानी मार्च में शेयर बाजारों में बिकवाली का ऐसा आलम रहा कि जो सेंसेक्स 20 जनवरी को 42,273.87 के सर्वकालिक उच्च स्तर पर था, वह 24 मार्च को 25,638.9 अंकों के साथ वर्ष के निचले स्तर तक लुढ़क गया। उससे पिछले वित्त वर्ष (2018-19) में बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 8.83 लाख करोड़ रुपये से अधिक बढ़ा था। हालांकि बीते वित्त वर्ष में आरआइएल 10 लाख करोड़ रुपये का एमकैप हासिल करने वाली पहली कंपनी बनी।

सितंबर तक सरकार लेगी 4.88 लाख करोड़ कर्ज

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोविड-19 महामारी से लड़ने के लिए सरकार वित्तीय रूप से कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती है। यही वजह है कि बुधवार से शुरू हो रहे वित्त वर्ष (2020-21) के लिए तय उधारी लक्ष्य का 62 फीसद से अधिक पहली छमाही में ही पूरा कर लिया जाएगा।

मंगलवार को आर्थिक मामलों के सचिव अतनु चक्रवर्ती ने बताया कि नए वित्त वर्ष की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर, 2020) में सरकार 4.88 लाख करोड़ रुपये उधार लेगी जो पूरे वित्त वर्ष के लिए निर्धारित उधारी लक्ष्य का 62.56 फीसद है। बीते वित्त वर्ष (2019-20) की पहली छमाही में तय उधारी लक्ष्य के 62.25 फीसद का कर्ज लिया गया था। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने गत एक फरवरी को बजट पेश करने के दौरान वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान 7.8 लाख करोड़ रुपये उधार लेने का लक्ष्य रखा था। वित्त वर्ष 2019-20 में उधार लेने का अनुमानित लक्ष्य 7.1 लाख करोड़ रुपये था।

सरकार ने कहा है कि वह सिर्फ अप्रैल माह में ही 79,000 करोड़ रुपये मूल्य के प्रतिभूति (सिक्युरिटीज) जारी करेगी। इनकी परिपक्वता अवधि दो से लेकर 40 वर्षों तक के लिए होगी। अतनु चक्रवर्ती ने बताया कि कोविड-19 की वजह से सरकार के खर्च में बढ़ोतरी लाजिमी है और स्वास्थ्य क्षेत्र को हर प्रकार की मदद देने के साथ उद्योग को राहत पैकेज देने के लिए सरकार इस प्रकार के कदम उठाने जा रही है।

चक्रवर्ती ने यह भी बताया कि सरकार ने डेट एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) के माध्यम से भी उधार लेने का प्रस्ताव रखा है। वित्त वर्ष 2020-21 के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य जीडीपी का 3.5 फीसद रखा गया है जबकि वित्त वर्ष 209-20 के लिए यह ल क्ष्य 3.8 फीसद का है।

वैश्विक मंदी की मार से बचा रहेगा भारत : अंकटाड

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कोरोना संकट के कारण इस साल मंदी की चपेट में आ जाएगी विश्व की अर्थव्यवस्था
- विकासशील देशों को उबारने के लिए यूएन ने 2.5 ट्रिलियन डॉलर के पैकेज की मांग की

प्रतीकात्मक।

कोरोना के चलते दुनिया के लगभग सभी विकासशील देशों के सामने बड़ी मुसीबत खड़ी होने की आशंका जताई गई है, लेकिन भारत और चीन इससे बचे रहेंगे। भारत के लिए यह सुखद अनुमान यूनाइटेड नेशंस कांफ्रेंस ऑन ट्रेड एंड डेवलपमेंट (अंकटाड) की रिपोर्ट में किया गया है। हालांकि रिपोर्ट में इस बात का जिक्र नहीं किया गया है कि कैसे भारत व चीन कोरोना से होने वाले आर्थिक नुकसान से खुद को बचा पाएंगे।

रिपोर्ट में कहा गया है कि कोरोना महामारी की वजह से इस साल विश्व की अर्थव्यवस्था मंदी की चपेट में आ जाएगी। खरबों डॉलर का नुकसान उठाना पड़ेगा। खासकर विकासशील देशों को इस वैश्विक मंदी के गंभीर परिणाम झेलने होंगे, लेकिन चीन व भारत के साथ ऐसा नहीं होगा। रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया की दो तिहाई आबादी विकासशील देशों में रहती है, जहां कोविड-19 की वजह से अभूतपूर्व आर्थिक नुकसान होने की आशंका है। विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने 2.5 ट्रिलियन डॉलर के राहत पैकेज की मांग की है।

अंकटाड के विश्लेषण में कहा गया है कि अगले दो साल में खाद्य व अन्य वस्तुओं का निर्यात करने वाले देशों में होने वाले निवेश में दो से तीन ट्रिलियन डॉलर की कमी आ सकती है। अंकटाड ने कहा है कि जी20 देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए पांच ट्रिलियन डॉलर के पैकेज की घोषणा की है। इनमें से एक से दो ट्रिलियन डॉलर इन देशों के बीच मांग में बढ़ोतरी के लिए खर्च किए जा सकते हैं। इन सबके बावजूद इस साल वैश्विक मंदी रह सकती है जिससे वैश्विक आय में खरबों डॉलर के नुकसान की आशंका है। विकासशील देशों को इसके गंभीर परिणाम झेलने होंगे। इन चुनौतियों के बीच भी चीन और भारत इसकी मार से बचे रहेंगे। ऐसा कैसे होगा, इसकी कोई विस्तृत जानकारी रिपोर्ट में नहीं है। अंकटाड ने कहा है कि कोरोना संकट की वजह से आने वाले समय में कठिनाइयां जारी रहेंगी। इस बात के साफ संकेत मिल रहे हैं कि विकासशील देशों की आर्थिक हालत बेहतर होने से पहले बहुत खराब स्थिति में चली जाएगी।

राष्ट्रीय

गारमेंट के 81 फीसद ऑर्डर रद

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना संकट की वजह से गारमेंट इंडस्ट्री के उद्यमियों के 81 फीसद ऑर्डर रद हो चुके हैं। वहीं, साल 2020 में पिछले साल के मुकाबले गारमेंट की मांग में 40 फीसद तक की गिरावट रहने की आशंका है। यह जानकारी क्लोदिंग मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सीएमएआइ) की रिपोर्ट में दी गई है। सीएमएआइ 1500 से अधिक गारमेंट मैन्यूफैक्चरर्स का संगठन है जिनका सालाना कारोबार 60,000 करोड़ रुपये से अधिक का है। सीएमएआइ ने गारमेंट इंडस्ट्री को बचाने के लिए सरकार से वहां काम करने वाले कर्मचारियों की सैलरी में प्रतिमाह 5,000-5,000 रुपये योगदान देने की गुजारिश की है।

सीएमएआइ के मुताबिक सर्वे में शामिल 59 फीसद मैन्यूफैक्चरर्स ने कहा कि लॉकडाउन के बाद उनके कारोबार के राजस्व में 40 फीसद से अधिक की गिरावट आ सकती है। सर्वे में शामिल 29 फीसद ने कहा कि राजस्व में 40 से 20 फीसद तक गिरावट हो सकती है। 20 फीसद मैन्यूफैक्चरर्स ने तो यहां तक कहा कि लॉकडाउन समाप्त होने के बाद उन्हें अपने कारोबार को बंद करने की नौबत आ सकती है। सर्वे में शामिल 80 फीसद ने कहा कि लॉकडाउन समाप्त होने के बाद सरकार की मदद के बगैर वह अपने यहां काम करने वाले कर्मचारियों को नौकरी पर रखने की स्थिति में नहीं होंगे।

इस साल गारमेंट की मांग में 40 फीसद तक की गिरावट होने के चलते 43 फीसद मैन्यूफैक्चरर्स को यह उम्मीद है कि उनके स्टॉक में 40 फीसद से अधिक का इजाफा होगा। 47 फीसद का मानना है कि स्टॉक में 30 से 40 फीसद तक की बढ़ोतरी होगी। 80 फीसद मैन्यूफैक्चरर्स ने बताया कि उन्हें तत्काल प्रभाव से अपनी यूनिट का आकार छोटा करने की आवश्यकता है।

सीएमएआइ के मुताबिक लॉकडाउन के खत्म होने के बाद मैन्यूफैक्चरर्स को अपनी यूनिट चालू रखने के लिए अपने 30 फीसद कर्मचारियों को कम करना होगा और बचे हुए कर्मचारियों के वेतन में 20 फीसद की कटौती करनी पड़ेगी।

कृषि कार्यों में भी सतर्कता व सावधानी जरूरी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

सरकार ने खेतों में खड़ी रबी फसलों की कटाई व मड़ाई के साथ उपज के भंडारण और रखरखाव में सावधानी बरतने की सलाह दी है। बागवानी फसलों में आम के पेड़ों पर फल लग रहे हैं, जिसके लिए जरूरी पोषक तत्व व अन्य देखभाल जरूरी हैं। इसके लिए सरकार की ओर से लॉकडाउन में छूट देते हुए फर्टिलाइजर और कीटनाशकों के कारोबार चालू रखे गए हैं। केंद्र सरकार के मुताबिक पशु चिकित्सा, मछली व पोल्ट्री उद्योग में लगे लोगों को व्यक्तिगत स्वच्छता व सामाजिक दूरी को सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है।

कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय की ओर से जारी एडवाइजरी में फसलों की कटाई, फल व सब्जियों की तुड़ाई, मुर्गीपालन और मत्स्यपालन में लगे लोगों की व्यक्तिगत स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने की जरूरत बताई गई है। हाथों से होने वाली फसलों की तुड़ाई में चार से पांच फीट की पट्टियों में काम करने को कहा गया है। यह भी सलाह दी गई है कि खेत में एक साथ अधिक श्रमिकों को न लगाया जाए, बल्कि उसकी जगह कई हिस्सों में बांटकर पारियों में काम कराया जाए। इससे शारीरिक दूरी बनी रहेगी।

एडवाइजरी में इस बात पर संतोष जताया गया है कि इस बार अधिकांश गेहूं उत्पादक राज्यों में औसत तापमान नीचे चल रहा है, जिससे गेहूं की कटाई में 10 से 15 दिनों का विलंब होने से भी कोई दिक्कत नहीं है। लॉकडाउन को देखते हुए यह उपयुक्त है। जिन खाली खेतों में मूंग की बोआई करनी है, उसकी वैज्ञानिक तैयारियां की जाएगीं।

दूरी अनिवार्य

- आम के पेड़ों पर छिड़काव जरूरी, मूंग की खेती का समय चालू
- भंडारण के लिए वैज्ञानिक सलाह पर ध्यान दें, बोरियों को सैनिटाइज करें

लॉकडाउन में ये प्रतिबंध मुक्त

कृषि व उससे जुड़े विभिन्न उद्यम वाली गतिविधियां, इसमें पशु चिकित्सालय, एपीएमसी की सभी मंडियां और उपज की ढुलाई, किसानों को खेतिहर मजदूरों के खेती के कामकाज, फार्म मशीनरी से जुड़े कस्टम हायर सेंटर, फर्टिलाइजर, कीटनाशक, बीजों के विकास और पैकेजिंग इकाइयां, बड़ी मशीनों की अंतरराज्यीय आवाजाही

क्या है एडवाइजरी

- कृषि के विभिन्न कार्यों में हाथ की जगह मशीनों से काम पर जोर दिया जाए
- मशीनों और उपकरणों का संचालन उपयुक्त हाथों में ही सौंपा जाए
- उपज के भंडारण वाली बोरियों व अन्य पैकेजिंग सामाग्री को भी सैनिटाइज किया जाए
- खलिहान के काम में भी सावधानी व सतर्कता बरतने की जरूरत है
- मक्के व मूंगफली के काम में लगाई गई मशीनों की उचित साफ सफाई सुनिश्चित की जाए
- सारे उपकरणों को बार बार छूने पर साबुन से हाथ धोना चाहिए

कोरोना के मामलों का बढ़ना चिंताजनक नहीं

बेंगलुरु, प्रेट्र : बायोकॉन लि. की प्रबंध निदेशक किरण मजूमदार शॉ ने कहा है कि देश में कोरोना के मामलों का बढ़ना चिंता का कारण नहीं है और उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भारत इस संकट से बाहर निकलने में कामयाब होगा।

शॉ ने प्रेट्र से एक विशेष साक्षात्कार में कहा कि एक बात हमें हर हाल में याद रखनी चाहिए कि कोरोना संक्रमित लोगों की संख्या में बढ़ोतरी होगी। लेकिन, इससे चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। मुझे लगता है कि हमें वास्तव में इस बारे में चिंता करने की आवश्यकता है कि बीमारी की गंभीरता क्या है? अगर बहुत सारे लोगों की स्थिति गंभीर हो जाती है, तो यह चिंता की बात होगी। उन्होंने कहा कि भारत ने कोरोना का प्रसार रोकने में अब तक बेहतर प्रदर्शन किया है। इसके लिए लॉकडाउन लागू किया गया और लोगों को क्वारंटाइन किया गया। उड़ानों पर प्रतिबंध लगाया गया। इन उपायों से भारत में कोरोना का प्रसार नहीं हुआ। लेकिन, कोविड-19 की जांच दर काफी कम है। सरकार को कोरोना के खिलाफ लड़ाई में पहले ही निजी क्षेत्र की मदद लेने पर विचार करना चाहिए था।

रोजाना 10 लाख लीटर दूध खरीदेगी महाराष्ट्र सरकार

राज्य ब्यूरो, मुंबई

- लॉकडाउन के कारण किसानों को हो रहा है नुकसान
- कोरोना संकट खत्म होने के तीन-चार महीनों बाद तक होती रहेगी खरीद

महाराष्ट्र सरकार ने किसानों को राहत देने के लिए उनसे रोज 10 लाख लीटर दूध खरीदने का फैसला किया है। यह फैसला मंगलवार को उपमुख्यमंत्री अजीत पवार की अध्यक्षता में हुई राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में लिया गया। राज्य सरकार रोजाना 10 लाख लीटर दूध 25 रुपये प्रति लीटर की दर से खरीदेगी। यह खरीदी अगले चार-पांच दिनों में शुरू हो जाएगी और कोरोना संकट खत्म होने के बाद भी अगले दो-तीन महीनों तक जारी रहेगी।

लॉकडाउन शुरू होने के बाद राज्य में दूध की खपत कम हो गई है। शहरों में मिठाइयों की दुकानें, पाउडर और पनीर आदि बनाने वाले कारखाने बंद हो गए हैं। इसके कारण दूध के भाव में 15 से 17 रुपये प्रति लीटर तक की कमी आ गई है। किसानों को नुकसान से बचाने के लिए राज्य सरकार यह कदम उठाने जा रही है। दूध की खरीद पर राज्य सरकार ने 200 करोड़ रुपये खर्च का अनुमान लगाया है।

सरकार के इस फैसले का किसान संगठनों ने स्वागत किया है, लेकिन इससे किसानों को पर्याप्त राहत मिलने पर आशंका भी जताई है। अखिल भारतीय किसान सभा के प्रदेश सचिव डॉ. अजीत नवले ने कहा कि महाराष्ट्र में दूध का कुल उत्पादन करीब एक करोड़, 30 लाख लीटर है।

इसमें से सिर्फ 40 लाख लीटर दूध पॉलीथिन पैकेट के जरिये घरेलू खपत के लिए भेजा जाता है। शेष 90 लाख लीटर दूध से दूसरी चीजें तैयार की जाती हैं। डॉ. नवले का मानना है कि महाराष्ट्र के दुग्ध उत्पादकों का संकट जल्दी खत्म होने वाला नहीं लगता। दूध से तैयार होने वाले पदार्थों का निर्यात महीनों तक सामान्य होने की संभावना नहीं दिख रही।

जी-20 देशों में दवा और अहम कृषि उत्पादों के निर्यात का बड़ा अवसर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

जी-20 के सदस्य देशों ने वाणिज्य मंत्रियों की बैठक में भारत की दवा और मेडिकल उपकरणों के साथ कृषि उत्पादों के लिए अपने-अपने बाजार को खोलने पर सहमति जताई है। इसकी मुख्य वजह यह है कि कोरोना से जूझ रहे विश्व के विकसित देश भारत की ओर उम्मीद की नजर से देख रहे हैं। भारत को कम कीमत में दवा बनाने में महारत हासिल है। भारत खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए कृषि उत्पादों के निर्यात के मामले में भी सक्षम देश है। वहीं, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि कोविड-19 से लड़ने के लिए विभिन्न देशों की सरकारों के पास नीतिगत स्तर पर उपाय बहुत सीमित हैं। ऐसे में इसके खिलाफ लड़ाई के लिए आइएमएफ को वित्तीय मदद देने के नए तरीके अपनाने की जरूरत है।

केंद्रीय वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने जी-20 देशों के साथ बैठक में इन देशों को कम कीमत वाली दवाओं की उपलब्धता बढ़ाने में मदद की पेशकश की थी। बैठक में इस बात पर भी विचार किया गया कि इस घड़ी में सभी देश एक-दूसरे के हेल्थ प्रोफेशनल्स की मदद ले सकते हैं। वाणिज्य मंत्रालय के मुताबिक गोयल ने जी-20 और अतिथि देशों के व्यापार व निवेश मंत्रियों की बैठक में महामारियों के खिलाफ लड़ाई के लिए एक वैश्विक तंत्र विकसित करने का आह्वान किया।

वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से हुई बैठक में कोविड-19 महामारी को वैश्विक चुनौती करार दिया गया। वाणिज्य मंत्रालय के मुताबिक बैठक में कोविड-19 से पार पाने के लिए हर प्रकार के उपायों पर चर्चा की गई। इन उपायों के तहत इस बात पर सहमति बनी कि व्यापार में अनावश्यक बाधाएं नहीं आनी चाहिए या वैश्विक आपूर्ति चेन बाधित नहीं होनी चाहिए। व्यापार डब्ल्यूटीओ नियमों के अनुरूप होना चाहिए। सभी देशों ने अपनी-अपनी जरूरतों के अनुरूप आवश्यक वस्तुओं के व्यापार को आसान बनाने के लिए तत्काल कदम उठाने पर बल दिया।

लॉकडाउन के बीच मंदिरों की चौखट तक सिमटेगा राम जन्मोत्सव

रघुवशरण, अयोध्या

- भीड़-भाड़ को दूर रख सादगीपूर्ण समारोह की तैयारी
- अपेक्षा के विपरीत रामलला का जन्मोत्सव भी पारंपरिक होगा

जिस राम जन्मोत्सव में आस्था का सैलाब उमड़ता था, अब वह उत्सव मंदिरों की चौखट तक सिमटा रहेगा। दो अप्रैल को होने वाले रामजन्मोत्सव को संतों ने श्रद्धालुओं से अपने घरों पर ही मनाने का आह्वान किया है।

शीर्ष पीठ मणिरामदास जी की छावनी के महंत एवं श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपालदास ने सोमवार को ही आह्वान किया कि कोरोना संकट के बीच श्रद्धालु अपने घरों में ही राम जन्मोत्सव मनाएं, तो गुरुवार को पड़ रहे राम जन्मोत्सव की तैयारियों में लगे साधु-संत भी उत्सव को मंदिर की चौखट तक ही सीमित रखने को संकल्पित हैं। गत नौ नवंबर को सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद रामलला का प्रथम जन्मोत्सव पूरी भव्यता से मनाए जाने का अनुमान था। वासंतिक नवरात्र के पहले दिन रामलला को बुलेट प्रूफ गर्भगृह में स्थानांतरित करने के साथ इसकी शुरुआत भी हो गई, पर कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण से जंग आगे बढ़ने और देशव्यापी लॉकडाउन का असर गहराने के साथ साफ होता गया कि रामलला का जन्मोत्सव इस बार भी सादगी के ही बीच मनाया जाएगा।

रामलला के प्रधान अर्चक आचार्य सत्येंद्रदास के अनुसार श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि रामलला के जन्मोत्सव पर कोई अतिरिक्त प्रयास संभव नहीं है और जन्मोत्सव उसी तरह मनाया जाएगा, जिस तरह सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने से पूर्व तिरपाल के गर्भगृह में मनाया जाता रहा है।

रामभक्तों की एक अन्य प्रधान पीठ कनकभवन में भी उत्सव को लेकर पूरी सावधानी बरती जा रही है और प्रयास किया जा रहा है कि उत्सव की व्यापकता चुनिंदा श्रद्धालुओं तक सीमित हो। कनकभवन के नित्य दर्शनार्थी मधुकरी संत मिथिलाबिहारीदास के अनुसार, कोरोना संकट को देखते हुए नवरात्र शुरू होने के साथ बधाई गान की महफिल का स्वरूप भी प्रतीकात्मक रखा गया है, ताकि संक्रमण की कोई आशंका न रहे।

आचार्य पीठ दशरथमहल बड़ास्थान का राम जन्मोत्सव भी भव्यता का पर्याय माना जाता रहा है, पर इस बार नवरात्र की दस्तक के साथ मंदिर का मुख्य द्वार बाहरी श्रद्धालुओं के लिए बंद कर दिया गया है। पीठाधीश्वर बिंदुगाद्याचार्य देवेंद्रप्रसादाचार्य के कृपापात्र रामभूषणदास कृपालु के अनुसार, दूरभाष और सोशल मीडिया के माध्यम से भक्तों को पहले ही रोक दिया गया था और यह सुनिश्चित किया गया है कि राम जन्मोत्सव में आश्रम के ही लोग शामिल हों।

माल्या ने सरकार से मांगी मदद

लंदन, एएनआइ: भगोड़े शराब कारोबारी विजय माल्या ने कहा है कि उसकी सभी कंपनियों का संचालन और उत्पादन बंद हो चुका है। लिहाजा उसने अपनी कंपनी के कर्मचारियों को घर भेजने में भारत सरकार से मदद मांगी है।

माल्या ने एक ट्विटर पोस्ट में कहा, 'पूरे देश में लॉकडाउन करके भारत सरकार ने वो किया है जिसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था। हम उसका सम्मान करते हैं। मेरी सभी कंपनियों ने प्रभावी रूप से संचालन बंद कर दिया है। सभी तरह का उत्पादन भी बंद है। फिर भी हम कर्मचारियों को घर नहीं भेज रहे हैं और बेकार का खर्च वहन कर रहे हैं। सरकार को मदद करनी ही होगी।'

एक अन्य पोस्ट में माल्या ने कहा, 'मैंने बार-बार किंगफिशर एयरलाइंस द्वारा लिए गए कर्ज की राशि बैंकों को लौटाने का प्रस्ताव दिया है। न तो बैंक धनराशि लेने के लिए तैयार हैं और न ही प्रवर्तन निदेशालय जब्त की गई उन संपत्तियों को छोड़ना चाहता है जिसे उसने बैंकों की ओर से जब्त किया है। उम्मीद है कि संकट के इस दौर में वित्त मंत्री मेरी बात सुनेंगी।'

19 लोगों की मौत हो गई चीन के सिचुआन प्रांत के जंगल में लगी आग से। जान गंवाने वालों में आग बुझाने के काम में जुटे 18 दमकलकर्मी शामिल हैं। शुरुआत में आग शिचांग शहर के नजदीक के जंगल में लगी और तेज हवा के चलते यह देखते ही देखते दूर तक फैल गई।

कोविड-19 से सांसत में हैं पूरी दुनिया के लोग

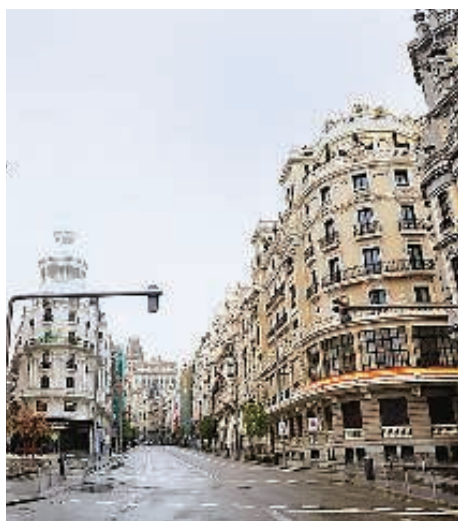

कोरोना के चलते स्पेन की राजधानी मैड्रिड में सूनसान पड़ा ग्रान विया स्ट्रीट। सामान्य दिनों में यहां पैर रखने की जगह मिलती है। रायटर

अमेरिका में धर्मशालाएं बंद करने से बेघरों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। अस्थाई शेल्टर होम की यह तस्वीर लास वेगास की है। इसमें शारीरिक दूरी के नियम का पालन करते हुए जमीन पर बॉक्स बनाए गए हैं। एएफपी

फ्रांस के राष्ट्रपति एमानुएल मैक्रों (बाएं) ने मंगलवार को सेंट बारथेलेमी-डी एनजॉउ स्थि एक फेस मास्क फैक्ट्री का दौरा किया। फ्रांस में स्वास्थ्यर्मी मास्क और प्रोटेक्टिव सूट की कमी की शिकायतें कर रहे हैं। एपी

अमेरिका में कोरोना से मुकाबले के लिए एकजुटता प्रदर्शित करते हुए सबसे ऊंची इमारत वन वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर लाल, सफेद और नीली रोशनी की गई। 94 मंजिला इमारत 546 मीटर ऊंची है। रायटर

अमेरिका में भयावह स्थिति, तीन हजार से ज्यादा लोगों की मौत

कोरोना का प्रकोप ▶ संक्रमितों का आंकड़ा एक लाख 65 हजार के करीब

ट्रंप ने कहा, अमेरिका के लिए अगले 30 दिन बेहद अहम

वाशिंगटन, एजेंसियां : कोरोना से अमेरिका में स्थिति भयावह होती जा रही है। इस महामारी की चपेट में आकर देश में अब तक तीन हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। करीब एक लाख 65 हजार लोग संक्रमित हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका के लिए अगले 30 दिन बेहद अहम होंगे।

अमेरिका कोरोना संक्रमण के मामलों में चीन को पहले ही पीछे छोड़ चुका है। अब वह जल्द ही मौत के मामले में भी चीन से आगे हो जाएगा। चीन में कोरोना से 3,300 से ज्यादा लोगों की जान गई है। ट्रंप ने सोमवार को ह्वाइट हाउस में पत्रकारों से कहा, 'चुनौतीपूर्ण समय आने वाला है। आगामी 30 दिन बेहद महत्वपूर्ण हैं।' ट्रंप ने एक दिन पहले सोशल डिस्टेंसिंग दिशा-निर्देशों को 30 अप्रैल तक बढ़ाने का एलान किया था। उन्होंने आने वाले दो हफ्तों में कोरोना के चलते मृत्युदर भयावह होने की भी आशंका जताई थी। ट्रंप ने बताया कि वेंटीलेटर समेत टेस्टिंग किट और फेस मास्क का उत्पादन बढ़ा दिया गया है। इनकी कमी जल्द दूर हो जाएगी। उन्होंने कहा कि हर किसी को मास्क पहनाने की संभावना पर भी गौर किया जा रहा है।

25 करोड़ अमेरिकी घरों में कैद : महामारी के चलते 33 करोड़ की आबादी वाले अमेरिका में नेशनल इमरजेंसी का एलान किया गया है। इसके अलावा दो दर्जन से ज्यादा राज्यों में लॉकडाउन समेत कई पाबंदियां लगाई गई हैं। इससे करीब 25 करोड़ आबादी घरों में कैद हो गई है।

अब तक दस लाख अमेरिकियों की जांच : अमेरिका में कोरोना वायरस को लेकर अब तक दस लाख से ज्यादा लोगों की जांच की जा चुकी है। दुनिया में इस समय अमेरिका की जांच दर सर्वाधिक है। इस देश में रोजाना की जांच दर बढ़कर एक लाख हो गई है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कोरोना वायरस को लेकर व्हाइट हाउस में नियमित मीडिया ब्रीफिंग के दौरान कोरोना टेस्टिंग किट की जांच की। यह किट पांच मिनट के भीतर जांच का परिणाम बता देगी। इसे मेडिकल डिवाइस कंपनी एबॉट ने तैयार किया है। रायटर

छह सांसद भी कोरोना की चपेट में : अमेरिकी संसद के छह सदस्य भी कोरोना वायरस की चपेट में आ गए हैं। जबकि 30 से ज्यादा अन्य सांसदों ने खुद को क्वारंटाइन कर लिया है। सांसद नादिया वेलाजक्वेज ने सोमवार को बताया कि वह कोरोना से पीड़ित हैं। इससे पहले माइक केली, जो कनिंघम, रैंड पॉल, मारियो डियाज बलार्ट और बेन मैकएडम ने टेस्ट पॉजिटिव आने की घोषणा की थी।

बेहाल न्यूयॉर्क को दस लाख चिकित्सा कर्मियों की जरूरत : अमेरिका में महामारी का केंद्र बने न्यूयॉर्क राज्य ने मदद की गुहार लगाई है। राज्य के गवर्नर एंड्रयू कुओमो ने कहा, 'हमें दस लाख चिकित्सा कर्मियों की जरूरत है। कृपया हमारी मदद करें।' अकेले न्यूयॉर्क प्रांत में ही 67 हजार से ज्यादा लोग संक्रमित पाए गए हैं और 1300 से ज्यादा की मौत हो चुकी है। प्रांत के सभी अस्पताल मरीजों से भर गए हैं। कई पीड़ितों को अब घर में ही रखा जा रहा है। कुओमो ने कहा कि विभिन्न राज्य आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की आपूर्ति को लेकर जूझ रहे हैं।

थाइलैंड में दो हजार हाथियों की जान पर संकट

बैंकॉक, एएफपी : कोरोना के चलते थाइलैंड के पर्यटन क्षेत्र में काम करने वाले करीब दो हजार हाथियों के जीवन पर संकट मंडराने लगा है। यात्रा पाबंदियों के कारण पर्यटकों के नहीं पहुंचने से इनके मालिकों को इन्हें खिलाना-पिलाना मुश्किल होने लगा है। पर्याप्त भोजन की कमी के चलते इन हाथियों की सेहत खराब होती जा रही है। वन्यजीव कार्यकर्ताओं का कहना है कि हाथी भूखे मरने की कगार पर पहुंचने वाले हैं।

मदद के लिए पहुंचा नौसेना का हॉस्पिटल शिप : एक हजार बिस्तर वाला अमेरिकी नौसेना का हॉस्पिटल शिप सोमवार को न्यूयॉर्क पहुंचने पर लोगों ने खुशी जताई। इस पोत के स्वागत के लिए हडसन नदी के तट पर बड़ी संख्या में लोग पहुंचे थे। उम्मीद है कि महामारी से जूझ रहे न्यूयॉर्क को पोत के आने से मदद मिलेगी। इस पोत पर चालक दल के करीब 1200 सदस्य हैं।

इटली ने महामारी में जान गंवाने वालों को दी श्रद्धांजलि

रोम, एएफपी : कोरोना महामारी में जान गंवाने वालों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मंगलवार को पूरे इटली में एक मिनट का मौन रखा गया। इस दौरान राष्ट्रीय झंडा भी आधा झुका रहा। इटली में अभी तक इस बीमारी से 11,591 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि एक लाख से ज्यादा लोग संक्रमित हैं। छह करोड़ की आबादी वाले इस यूरोपीय देश में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एक महीने में किसी आपदा के चलते इतने लोगों की जान गई है।

सिटी हॉल के बाहर आयोजित समारोह में दो मिनट का मौन रखने के बाद रोम के मेयर वर्जीनिया रैगी ने कहा, इस वायरस ने पूरे देश को चोट पहुंचाई है। हम सभी को मिलकर इससे निपटना होगा। इटली के दुख में शरीक होते हुए वेटिकन ने भी अपने झंडे को आधा झुकाया। इटली की सरकार ने महामारी रोकने के लिए तीन सप्ताह पहले अप्रत्याशित लॉकडाउन का एलान किया था। यह अवधि चार अप्रैल को खत्म हो रही थी, लेकिन सोमवार को ही सरकार ने लॉकडाउन को अप्रैल मध्य तक बढ़ाने का एलान कर दिया।

जर्मनी से मांगी मदद : जर्मनी के एक अखबार में विज्ञापन देकर इटली के विभिन्न शहरों के मेयर और क्षेत्रीय गवर्नरों ने जर्मनी से मदद की अपील की है। इसमें 1953 के युद्ध के बाद जर्मनी की मदद करने का हवाला देते हुए कहा गया है, प्यारे जर्मन मित्रों, यादें हमेशा हमें सही निर्णय लेने में मदद करती हैं। इस पर इटली के दक्षिणपंथी और वामपंथी पार्टियों के मेयर के हस्ताक्षर हैं। दरअसल, फ्रांस, स्पेन, इटली सहित यूरोपीय यूनियन (ईयू) के नौ देश ईयू से कोरोना बांड जारी करने की अपील कर चुके हैं, लेकिन जर्मनी, नीदरलैंड्स, फिनलैंड और आस्ट्रिया इसका विरोध कर रहे हैं।

जापान में एक दिन में संक्रमण के सर्वाधिक मामले : जापान की राजधानी टोक्यो में एक दिन में संक्रमण के सर्वाधिक 78 मामले सामने आए हैं। इसके बाद प्रधानमंत्री एबी शिंजो पर पूरे देश में लॉकडाउन लागू करने का दबाव बढ़ गया है। टोक्यो के गवर्नर यूरिको कोइको ने कहा, 'यह अत्यधिक चिंता का विषय है। हम इस बात से सर्वाधिक चिंतित हैं कि कल इनकी संख्या क्या होगी।' वहीं वित्त मंत्री याशूतोशी निशीमुरा ने कहा कि जापान में अभी ऐसी स्थिति नहीं है कि आपातकाल की घोषणा की जाए। देश में संक्रमित मामलों की संख्या दो हजार से ज्यादा हो गई है। जबकि मृतकों की संख्या 59 है।

इटली का झंडा आधा झुका : कोरोना से मरने वालों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इटली का राष्ट्र ध्वज आधा झुका दिया गया। तस्वीर में रोम की मेयर वर्जीनिया रागी (बाएं) मृतकों को श्रद्धांजलि अर्पित कर रही हैं। इटली में कोरोना वायरस के कारण अब तक 10 हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। रायटर

ऑस्ट्रेलिया में कारगर रही सोशल डिस्टेंसिंग : ऑस्ट्रेलिया के स्वास्थ्य मंत्री ग्रेग हंट ने मंगलवार को कहा कि सोशल डिस्टेंसिंग के मानदंडों को लागू करने के बाद कोरोना के संक्रमण में कुछ कमी आई है। उन्होंने कहा कि अभी तक दो लाख तीस हजार लोगों का टेस्ट हुआ है। पहले संक्रमण की दर 25-30 फीसद थी जो अब घटकर नौ फीसद रह गई है। ऑस्ट्रेलिया में अभी तक 4,450 लोगों में संक्रमण की पुष्टि हुई जबकि 19 लोगों की मौत हुई है।

स्पेन में 24 घंटे में 849 की मौत : स्पेन में पिछले चौबीस घंटे में 849 लोगों की मौत हुई है। इस तरह वहां मरने वालों की संख्या 8,149 हो गई है। पिछले चौबीस घंटे में 9,222 नए लोगों में संक्रमण का पता चला है। देश में संक्रमित लोगों की संख्या 94,417 हो गई है।

इजरायल के प्रधानमंत्री का टेस्ट निगेटिव : इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का कोरोना टेस्ट निगेटिव आया है। सलाहकार रिवेका पालूच में संक्रमण की पुष्टि होने के बाद नेतन्याहू आइसोलेशन में चले गए थे। प्रधानमंत्री कार्यालय ने सोमवार को बताया कि नेतन्याहू के परिवार और उनके निकट रहने वाली टीम का भी कोरोना टेस्ट निगेटिव आया है।

12 वर्षीय बच्ची की बेल्जियम में संक्रमण से हुई मौत

705 लोगों की जान जा चुकी है देश में अब तक

418 लोगों की मौत हुई फ्रांस में एक दिन में

दिन-ब-दिन बढ़ रहे मामले

देश	मौत	संक्रमण
इटली	11,591	1,01,739
स्पेन	8,189	94,417
अमेरिका	3,177	1,64,665
चीन	3,305	81,518
ईरान	2,898	44,605
फ्रांस	3,024	44,450
ब्रिटेन	1,408	22,141

सुरक्षा परिषद ने पहली बार वीडियो कांफ्रेंसिंग से पारित किए प्रस्ताव

संयुक्त राष्ट्र, एएफपी : संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) ने सोमवार को पहली बार वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये अहम प्रस्ताव पारित किए। कोरोना महामारी के चलते गत 12 मार्च से सुरक्षा परिषद के सदस्य देश वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये ही बैठक कर रहे हैं।

सोमवार को जो चार प्रस्ताव पारित किए गए, उनमें उत्तर कोरिया पर लगे प्रतिबंध की अवधि अप्रैल, 2021 तक बढ़ाने का प्रस्ताव शामिल है। इसके अलावा सोमालिया और दारफुर में यूएन मिशन की अवधि क्रमशः जून और मई तक के लिए बढ़ाने के प्रस्ताव पारित किए गए। चौथा प्रस्ताव यूएन शांति मिशन में तैनात सैनिकों की सुरक्षा बढ़ाने को लेकर था। यूएन मुख्यालय न्यूयॉर्क में स्थित है। अमेरिका का यह शहर कोरोना का सबसे बड़ा केंद्र बन गया है। इसके चलते अब यूएन की बैठकें साथ बैठकर करने के बजाय वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये की जा रही हैं।

दुनिया की 20 फीसद आबादी घरों में रहने को मजबूर

पेरिस, एएफपी : कोरोना महामारी को रोकने के लिए दुनिया के कई देशों ने लॉकडाउन की अवधि बढ़ाने का फैसला किया है। सोमवार को रूस और लागोस में भी लॉकडाउन लागू कर दिया गया। आलम यह है कि दुनिया की 20 फीसद आबादी अपने घरों में रहने को मजबूर है।

अमेरिका के वर्जीनिया, मेरीलैंड, कंसास ऐसे प्रांत हैं, जिन्होंने सोशल डिस्टेंसिंग के लिए आपातकाल का सहारा लिया है। राजधानी वाशिंगटन के भी लॉकडाउन घोषित किए जाने की उम्मीद है। अमेरिका में दो-तिहाई आबादी लॉकडाउन के आदेश के तहत घरों में रहने को मजबूर है। कोरोना का नया केंद्र बिंदु बनकर उभर रहे लुसियाना प्रांत के गवर्नर जॉन बेल एडवर्ड ने चेतावनी दी है कि आने वाला समय और खराब होगा। इस महामारी से लगे आर्थिक झटके से उबरने के लिए विश्व के नेता जुगलबंदी करते दिख रहे हैं।

विश्वभर के लोग प्रभावित

- फिनलैंड ने देश के दक्षिणी इलाके में लगाए गए आपातकाल की अवधि को एक महीने और बढ़ाने का फैसला किया है। वहां 13 अप्रैल को आपातकाल की अवधि खत्म हो रही थी।
- बांग्लादेश में लॉकडाउन नौ अप्रैल तक बढ़ा दिया गया है। वहां 26 मार्च को 10 दिनों का राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन घोषित किया गया था।
- नाइजीरिया ने दो सप्ताह जबकि जिम्बाब्वे ने तीन सप्ताह के लॉकडाउन का एलान किया है।
- डेनमार्क ने कहा है कि अगर संक्रमण के मामलों में कमी आई तो लगाए गए प्रतिबंधों में कुछ ढील दी जा सकती है। वहां पर 11 मार्च को लॉकडाउन है।

यूरोप से ईरान को मिली पहली चिकित्सा मदद

बर्लिन, एएफपी : जर्मनी के विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि यूरोपीय देशों ने ईरान को पहली बार चिकित्सकीय मदद भेजी है। यह मदद अमेरिकी प्रतिबंधों से बचने के लिए ईरान के साथ किए गए एक समझौते के तहत की गई है। यूरोपीय मदद से इस पश्चिम एशियाई देश को कोरोना वायरस से मुकाबले में मदद मिलेगी। ईरान में कोरोना से 2900 लोगों की मौत हो चुकी है और करीब 45 हजार लोग संक्रमित हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मई, 2018 में ईरान के साथ हुए परमाणु समझौते से अमेरिका के हटने का एलान किया था। साथ ही उस पर प्रतिबंध भी थोप दिए थे। ईरान ने 2015 में अमेरिका, फ्रांस, रूस, चीन, ब्रिटेन और जर्मनी के साथ यह समझौता किया था। इस समझौते को बचाने के लिए एक साल पहले ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी ने ईरान के साथ नया करार किया था। अमेरिकी प्रतिबंधों के चलते ईरान को कोरोना महामारी पर अंकुश लगाने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

कोरोना की रोकथाम के लिए वैक्सीन का दूसरे देशों में भी परीक्षण करेगा चीन

बीजिंग, प्रेट्र: कोरोना की रोकथाम के लिए विकसित की जा रही वैक्सीन का अपने यहां सफल और सुरक्षित परीक्षण करने के बाद चीन उसका दूसरे देशों में भी परीक्षण कर सकता है। यह जानकारी चीन के एक शोधकर्ता ने दी।

चाइनीज एकेडमी आफ इंजीनियरिंग की सदस्य चेन वेई ने बताया कि वुहान में 16 मार्च से इस वैक्सीन के पहले चरण के परीक्षण शुरू हो गए हैं। यह परीक्षण आराम से चल रहे हैं। परीक्षण की रिपोर्ट पहली अप्रैल को प्रकाशित की जाएगी। इस वैक्सीन का चीन में रह रहे विदेशियों पर भी परीक्षण किया जाएगा। उल्लेखनीय है चीन के वुहान शहर से ही कोरोना वायरस की शुरआत हुई थी। करीब 11 लाख की आबाद वाला वुहान शहर हुबेई प्रांत की राजधानी है। दो महीने कोरोना का कहर झेलने के बाद अब इस शहर में हालात सामान्य होने की ओर हैं। चीन के सरकारी समाचार पत्र चाइना डेली से बातचीत में चेन वेई ने कहा कि परीक्षण के शुरुआती परिणाम अगर मनमाफिक रहे तो हम लोग इसका प्रयोग दुनिया के उन देशों में भी करेंगे जहां इसका कहर बरपा हो रहा है। चेन वेई एकेडमी आफ मिलिट्री साइसेंज में भी शोध करती हैं।

उन्होंने बताया कि इस वैक्सीन के प्रति बहुत से देशों ने रुचि दिखाई है। वैक्सीन विकसित करने के लिए हम और हमारी टीम दूसरे देशों के साथ मिलकर काम करना चाहते हैं। दूसरे देशों में परीक्षण करने से पहले हम लोग चीन में रह रहे विदेशी लोगों के परीक्षण में शमिल करेंगे। कोविड-19 का कहर खत्म करने के लिए वैक्सीन ही सबसे कारगर साबित हो सकती है। इस वैक्सीन के प्रयोग को कब मंजूरी मिलेगी यह तो नहीं पता लेकिन परीक्षण सफल और सुरक्षित रहता है तो यह काम जल्दी हो जाएगा। चाइना डेली के अनुसार वुहान में इस वैक्सीन का साठ से 18 से 60 साल उम्र के लोगों पर इसका परीक्षण चल रहा है।

मानव कोशिका में वायरस का प्रवेश रोक सकती नई दवा

बोस्टन, प्रेट्र: वैज्ञानिकों ने एक ऐसी दवा की खोज कर ली है जो संभवतः मानव कोशिकाओं में कोरोना वायरस कोविड-19 को प्रवेश करने से रोक देगी। अगर यह दवा प्रयोग में सफल रहती है तो कोरोना का इलाज विकसित करने में काफी मदद मिल सकती है।

शोधकर्ताओं के अनुसार, खोजी गई दवा प्रोटीन (पेपटाइड) का एक छोटा अंश है जो मानव कोशिका की सतह पर पाये जाने वाले से मिलता जुलता है। यह प्रोटीन कोरोना वायरस के उस प्रोटीन को बांध देता है जिसके जरिये वायरस कोशिका में प्रवेश करता है। बायोआरएक्सआइवी के ऑनलाइन संस्करण में प्रकाशित इन निष्कर्षों के अनुसार, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालाजी (एमआइटी) के एसोसिएट प्रोफेसर ब्रैड पेंटेल्यूट ने कहा कि हम जैसा कंपाउंड तलाश रहे थे वह मिल गया है। यह वायरल प्रोटीन के साथ वैसा ही व्यवहार कर रहा है जैसी कि हम लोगों ने संभावना जताई थी। इससे उम्मीद बंधी है कि मानव कोशिका में वायरस की घुसपैठ रोकी जा सकती है। शोधकर्ताओं ने इस पेपटाइड के नमूने अन्य शोधकर्ताओं को भेजे हैं जो अपने-अपने यहां उसका मानव कोशिकाओं पर उसका असर देखेंगे। चीन के एक रिसर्च ग्रुप द्वारा मानव कोशिका के रिसेप्टर व कोरोना वायरस के स्पाइक प्रोटीन का क्रायो ईएम स्ट्रक्चर प्रकाशित करने के बाद इस टीम ने मार्च की शुरुआत में इस पर शोध शुरू किया था।

चीन में फिर बिकने लगे चमगादड़-पैंगोलिन

वाशिंगटन, एएनआइ : भले ही दुनिया कोरोना महामारी से जूझ रही हो, चीन में चमगादड़ और पैंगोलिन की बिक्री फिर धड़ल्ले से शुरू हो गई है। चीन के इस कदम को वैज्ञानिक खतरनाक मान रहे हैं क्योंकि कोविड-19 महामारी चमगादड़ों से मनुष्यों में आई है। विभिन्न रिपोर्टों से पता चलता है कि चीन के हुबेई प्रांत के एक व्यक्ति में सबसे पहले इस वायरस का संक्रमण देखा गया था।

वाशिंगटन एक्जामिनर ने 'ए मेल ऑन संडे' के संवाददाता के हवाले से लिखा है, 'बाजार ठीक उसी तरह से काम कर रहे हैं जैसे वह महामारी फैलने से पहले कर रहे थे। लेकिन अब सिक्योरिटी गार्ड इन बाजारों पर 24 घंटे नजर रख रहे हैं। उनका सारा ध्यान इस बात पर है कि कोई भी खून से लथपथ फर्श, कुत्तों और खरगोश को कत्ल करने की तस्वीरें नहीं ले सके।' विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भी गत 12 जनवरी को कहा था, 'इस बात के संकेत हैं कि महामारी वुहान के सी-फूड मार्केट से जुड़ी है।'

टाली कॉलेज प्रवेश परीक्षा

बीजिंग, रायटर: विदेश से आने वाले अपने नागरिकों में कोरोना संक्रमण को देखते हुए चीन ने राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली कॉलेज प्रवेश परीक्षा टाल दी है। दो दिन चलने वाली यह परीक्षा अब सात और आठ जुलाई को हागी। हुबेई प्रांत और राजधानी बीजिंग को 'गावकाओ' के नाम से मशहूर इस परीक्षा की तिथियों को निर्धारित करने के लिए और छूट दी जाएगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के तारिक जसारेविक ने कहा कि चीन में अब चुनौती नए संक्रमण को रोकने की है। वहीं डब्ल्यूएचओ के एक अन्य अधिकारी ने कहा है कि एशिया-प्रशांत क्षेत्र में महामारी का दौर समाप्ति के कगार पर है। पिछले सप्ताह ब्रिटिश मेडिकल जर्नल लैंसेट ने सिफारिश की थी कि चीन को स्कूल और कारखानों में लॉकडाउन की अवधि को बढ़ा देना चाहिए क्योंकि अगस्त तक दूसरे दौर के संक्रमण का खतरा है।

संक्रमण के मामलों में लगातार चार दिन तक कमी आने के बाद सोमवार को इनकी संख्या 48 हो गई। रविवार को संक्रमण के 31 मामले सामने आए थे।

ट्रंप प्रशासन से अपील

नौकरी जाने पर विदेशी पेशेवरों को 60 की जगह 180 दिन तक अमेरिका में रहने देने का आग्रह

एच-1बी वीजा नियमों में ढील की उठी मांग

वाशिंगटन, प्रेट्र : कोरोना वायरस महामारी के चलते अमेरिका में बड़े पैमाने पर छंटनी की आंशका के बीच विदेशी आइटी पेशेवरों ने ट्रंप प्रशासन से एच-1बी वीजा नियमों में ढील देने की मांग की है। उन्होंने आग्रह किया है कि नौकरी जाने पर अमेरिका में 180 दिन तक रहने की इजाजत दी जाए। मौजूदा नियमों के तहत नौकरी जाने पर एच-1बी वीजाधारक को 60 दिन के अंदर अपने परिवार के साथ अमेरिका छोड़ना पड़ता है। एच-1बी वीजा भारतीय आइटी पेशेवरों में खासा लोकप्रिय है।

आर्थिक विशेषज्ञों ने आशंका जताई है कि मौजूदा आर्थिक संकट के चलते अमेरिकी अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर छंटनी हो सकती है। गत 21 मार्च तक रिकार्ड 33 लाख अमेरिकियों ने बेरोजगारी का दावा दाखिल किया।

कोरोना महामारी के चलते अमेरिका में करीब चार करोड़ 70 लाख लोगों के बेरोजगार होने का अनुमान है। एच-1बी वीजाधारक ना तो बेरोजगारी लाभ और ना ही सामाजिक सुरक्षा लाभ के दायरे में आते हैं। प्रारंभिक खबरों के अनुसार, बड़ी संख्या में एच-1बी वीजाधारक नौकरी से निकाले जा रहे हैं। जबकि कुछ कंपनियों ने वीजाधारकों को सूचित किया है कि वे नौकरी से निकाले जाने वालों की सूची में शीर्ष पर हैं। इस स्थिति में एच-1बी वीजाधारकों ने राष्ट्रपति भवन ह्वाइट हाउस की वेबसाइट पर एक आवेदन दिया है। 20 हजार से ज्यादा हस्ताक्षर वाले इस आवेदन में कहा गया है, 'हम सरकार से 60 दिन की अवधि को बढ़ाकर 180 दिन करने का आग्रह करते हैं।'

प्रतीकात्मक

भारतीयों को ग्रीन कार्ड के लिए करना पड़ेगा दशकों इंतजार

एक संसदीय रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका में स्थायी तौर पर रहने के लिए रोजगार आधारित बैकलॉग वर्ष 2030 तक दोगुना हो जाएगा। इसके चलते भारतीयों को ग्रीन कार्ड के लिए दशकों तक इंतजार करना पड़ेगा। ग्रीन कार्ड मिलने से गैर अमेरिकी नागरिकों को अमेरिका में स्थायी तौर पर रहने और काम करने की अनुमति मिलती है।

क्या है एच-1बी वीजा : एच-1बी वीजा के आधार पर अमेरिकी कंपनियां विदेशियों को नौकरी पर रखती हैं। सामान्य श्रेणी में सालाना 65 हजार एच-1बी वीजा जारी किए जाते हैं। इसके अलावा 20 हजार वीजा अमेरिकी विश्वविद्यालयों से उच्च शिक्षा हासिल करने वालों के लिए जारी किए जाते हैं। बीते दिनों अमेरिका ने नियमों को सख्त कर दिया था।

मैं माइकल वॉन को सर्वकालिक इंग्लैंड एकादश व एलन बॉर्डर को एशेज एकादश टीम का कप्तान चुनता हूं।
— शेन वॉर्न, पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर

हिमा ने अभ्यास के लिए खेल मंत्री रिजिजू से मांगी अनुमति

नई दिल्ली, जेएनएन : पटियाला स्थित राष्ट्रीय खेल संस्थान (एनआइएस) के शिविर में शामिल धाविका हिमा दास सहित दूसरे कई एथलीटों ने खेल मंत्री किरण रिजिजू से मांग की है कि उन्हें परिसर के अंदर आउटडोर प्रशिक्षण की अनुमति दी जाए। सहायक राष्ट्रीय एथलेटिक्स कोच राधाकृष्णन नायर ने कहा कि हमा के नेतृत्व में खिलाड़ियों को एक-दो दिनों में मंत्रालय से जवाब मिलने की उम्मीद है।

एक नजर में

पाकिस्तानी खिलाड़ी के आदर्श रोहित

लाहौर : पाकिस्तान के युवा बल्लेबाज हैदर अली ने कहा है कि भारतीय सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा उनके आदर्श हैं और वह रोहित के जैसा ही बल्लेबाजी करना चाहते हैं। 19 साल के हैदर ने कहा, 'रोहित की सबसे अच्छी बात यह है कि उनका स्ट्राइक रेट बहुत अच्छा है। मैं भी अपने खेल में यही चाहता हूं और उनके जैसे ही बल्लेबाजी करना चाहता हूं।' (प्रेट्र)

वॉर्नर का कोहली को चैलेंज

नई दिल्ली : ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर ने मंगलवार को अपना सिर शेव करने का फैसला किया। वॉर्नर ने कोरोना वायरस का डटकर लोहा ले रहे मेडिकल स्टाफ के प्रति अपना समर्थन जताने के लि ऐसा किया है। अपना सिर शेव करने के बाद वॉर्नर ने ऑस्ट्रेलिया के अपने साथी खिलाड़ी स्टीव स्मिथ और भारतीय कप्तान विराट कोहली को भी ऐसा करने का चैलेंज दिया। (प्रेट्र)

कॉनवे न्यूजीलैंड से खेलेंगे

दुबई : दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज डेवन कॉनवे भारत-ए या बांग्लादेश के खिलाफ मुकाबले में न्यूजीलैंड की तरफ से पदार्पण कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने उन्हें नए देश न्यूजीलैंड की तरफ से खेलने की अनुमति दे दी है। 28 वर्षीय कॉनवे ने 2017 में न्यूजीलैंड क्रिकेट में करियर बनाने के लिए जोहानिसबर्ग को छोड़ा था। आइसीसी ने कहा कि अभूतपूर्व परिस्थितियों को देखते हुए आइसीसी ने यह अनुमति दी है। दक्षिण अफ्रीका की क्रिकेट में आरक्षण की नीति के कारण वहां के कई खिलाड़ी दूसरे देशों का रुख कर रहे हैं। (रायटर)

फिर होगा क्वालीफिकेशन

जेनेवा : अंतरराष्ट्रीय जिम्नास्टिक्स महासंघ (एफआइजी) ने जोर देकर कहा है कि दुनियाभर में जारी वैश्विक स्वास्थ्य संकट कोरोना वायरस के खत्म होने के बाद ही वह फिर से ओलंपिक क्वालीफिकेशन शुरू करेगा। टोक्यो ओलंपिक और पैरालंपिक की नई तारीखों का ऐलान हो गया है। एफआईजी के अध्यक्ष मोरिनारी वातानाबे ने इतनी जल्दी टोक्यो ओलंपिक की नई तारीखें तय करने के लिए अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति, टोक्यो आयोजन समिति और जापान सरकार की मंगलवार को तारीफ की। (रायटर)

स्मार्टवॉच पहनने पर रोक

नई दिल्ली : इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने क्रिकेटरों को काउंटी क्रिकेट की लाइव स्ट्रीमिंग के मद्देनजर भ्रष्टाचार रोधी नियमों को सख्त करते हुए आगामी सभी मुकाबलों में स्मार्टवॉच पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया। काउंटी खेल में लाइव-स्ट्रीमिंग सेवाओं के चलन के कारण नियमों को कड़ा किया गया। टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले मैचों में मैदान के अंदर खिलाड़ियों के स्मार्टवॉच पहनने पर पूरी तरह से रोक लगा दी गई है। अगर मैच का सीधा प्रसारण नहीं हो रहा तो वे ड्रेसिंग रूम और डगआउट जैसी जगहों पर इसका इस्तेमाल कर सकते है। यह मामला उस समय सामने आया था जब लंकाशायर के स्पिनर मैट पार्किंसन ने बताया था कि उन्हें राष्ट्रीय टीम में चयन की सूचना 2019 चैंपियनशिप के दौरान अपनी टीम के साथी स्टीवन क्रॉफ्ट की स्मार्टवॉच पर आए संदेश के जरिये मिली थी। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कई साल पहले ही स्मार्टवॉच पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। (प्रेट्र)

साक्षात्कार

घर में छोटी शूटिंग रेंज बनाकर कर रही हूं अभ्यास : मनु

देश में लॉकडाउन ने खिलाड़ियों की जीवन शैली को बदल दिया है। मैदान में दौड़ने वाले खिलाड़ी छत पर टहलने को मजबूर हो गए हैं। टोक्यो ओलंपिक का आयोजन अगले वर्ष तक टलने से वह दुखी हैं, तो अगले वर्ष ओलंपिक के मुकाबलों के लिए घर पर ही कड़ी मेहनत भी कर रही हैं। इन तमाम मुद्दों को लेकर देश की स्टार शूटर **मनु भाकर** से **अनिल भारद्वाज** ने बातचीत की। पेश हैं मुख्य अंश-

● ओलंपिक एक वर्ष के लिए टल गया। एक खिलाड़ी होने के नाते कितना फायदा या नुकसान होगा?

-ओलंपिक आयोजन अगले वर्ष तक टलने का थोड़ा दुख है। लंबे समय से ओलंपिक का सपना था और उसी को देखकर कड़ी मेहनत की गई थी। हम पदक के करीब थे। अच्छा होता आयोजन अपने समय पर होता क्योंकि अभी तैयारी अच्छी और पदक जीतने की स्थिति बेहतर थी लेकिन दुनिया पर संकट को देखते हुए ऐसा निर्णय लिया गया है। अब अगले वर्ष तक अपने को पदक जीतने वाले खिलाड़ियों की लाइन में रखने का बड़ा चैलेंज होगा। फिर से शुरुआत करनी होगी। अभी हाल में सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि प्रशिक्षण सेंटर में नहीं जा पा रहे हैं।

● अब प्रशिक्षण व लय बरकरार रखना कितना बड़ा चैलेंज है?

-हर रोज चैलेंज से गुजरना पड़ रहा है। अभी हाल में घर पर छोटी शूटिंग रेंज बनाई हुई है उसमें हर रोज प्रशिक्षण करती हूं। इसी में हर रोज तीन-चार घंटे प्रशिक्षण कर अपनी लय बरकरार रखने की कोशिश में लगी हूं। यह सही है कि प्रशिक्षण सेंटर की कमी महसूस हो रही है। यह हर खिलाड़ी के लिए मुश्किल का दौर है।

● फिटनेस के लिए क्या कर रही हैं?

-मैं फिटनेस व मानसिक शांति के लिए हर रोज सुबह छत पर टहलती हूं और उसके बाद योगा के साथ सूर्य नमस्कार और मेडिटेशन करती हूं। मुझे लगता है ऐसे हालात में इससे बेहतर कोई उपाए नहीं है।

● मुख्यमंत्री राहत कोश में मदद देने का फैसला दिमाग में कैसे आया?

-मेरे माता-पिता ने यही सिखाया है कि दुख में हमें एक होकर समस्या से लड़ना चाहिए। हर किसी को आगे आना चाहिए। अगर आज हम मिलकर कोरोना वायरस से लड़ेंगे, तो लाखों लोगों की जान बचाने के साथ भारत को सुरक्षित कर पाएंगे। लड़ने के लिए सरकार तक सीमित नहीं रहना चाहिए। इसके लिए हर भारतीय को आगे आना होगा।

● आपकी हमेशा एक शिकायत रही है कि घर वालों के साथ रहने का समय नहीं मिलता। क्या लॉकडान ने वह मौका दे दिया?

-हंसते हुए... पढ़ाई, खेल और राष्ट्रीय शिविर। यही कारण है कि परिवार के साथ रहने का समय कम ही मिलता है। अब ऐसा समय आया कि घर में रही रहना होगा। घर वालों के साथ रहकर खुशी मिली है लेकिन चिंतित हूं उन लोगों के लिए जो कोरोना से जूझ रहे हैं।

● क्या मां का हाथ भी बंटा रही हैं?

-मेरे घर का रिवाज है, घर के काम में हर कोई सहयोग करेगा। अब ज्यादा समय मैं मां के साथ रसोई व अन्य काम में सहयोग कर पा रही हूं। वैसे मैंने घर रहकर भी प्रशिक्षण शिविर वाले नियम को लागू किया हुआ है जिसमें आपकी एक्सरसाइज व प्रशिक्षण और भोजन करने के साथ आराम करने का समय तय है।

रोहित ने दिए 80 लाख

कुंबले और नीरज चोपड़ा ने भी बढ़ाए मदद के लिए हाथ

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : भारतीय सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा ने कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में 80 लाख रुपये की राशि मंगलवार को मदद के रूप में दान की। रोहित ने प्रधानमंत्री राहत कोष, मुख्यमंत्री राहत कोष, फीडिंग इंडिया और स्ट्रे डॉग्स की संस्था में दान दिया।

रोहित ने ट्वीट किया, 'मैं अपनी तरफ से छोटा-सा योगदान दे रहा हूं। 45 लाख प्रधानमंत्री राहत कोष, 25 लाख मुख्यमंत्री राहत कोष (महाराष्ट्र), पांच लाख फीडिंग इंडिया और पांच लाख वेलफेयर ऑफ स्ट्रे डॉग्स को दे रहा हूं। हमें अपने नेताओं का का साथ देने की जरूरत है।' वहीं, पूर्व भारतीय कप्तान और कोच अनिल कुंबले ने भी दान दिया। कुंबले ने ट्वीट किया, 'कोविड-19 को भगाने के लिए हम सभी को एकजुट होकर इससे लड़ना होगा। मैंने प्रधानमंत्री राहत कोष और मुख्यमंत्री (कर्नाटक) राहत कोष में योगदान किया।' हालांकि इस महान लेग स्पिनर ने दान की हुई राशि की जानकारी नहीं दी।

नीरज ने दिए तीन लाख : एशियन गेम्स के स्वर्ण पदकधारी भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा ने प्रधानमंत्री और हरियाणा राज्य राहत कोष में कुल तीन लाख रुपये का दान दिया। कॉमनवेल्थ गेम्स के स्वर्ण पदकधारी एथलीट ने ट्वीट किया, 'मैंने प्रधानमंत्री राहत कोष में दो लाख और हरियाणा राहत कोष में एक लाख रुपये का दान दिया। मुझे उम्मीद है कि हम अपनी क्षमता अनुसार इस समय कोविड-19 से देश की लड़ाई में मदद करेंगे।'

रोहित शर्मा ● फाइल फोटो, ट्विटर

इन्होंने भी दिया योगदान

- दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) के लोकपाल दीपक वर्मा प्रधानमंत्री राहत कोष में 51 लाख रुपये देंगे
- राष्ट्रीय खेल महासंघों ने प्रधानमंत्री राहत कोष में 29 .50 लाख रुपये का योगदान दिया
- भारतीय फुटबॉलर प्रीतम कोटल ने बंगाल राहत कोष में 50000 रुपये की मदद की
- युवराज सिंह ने शाहीद अफरीदी की संस्था का समर्थन किया जो पाकिस्तान में जरूरतमंदों की मदद कर रही है
- पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर वकार यूनिस ने पत्नी और अन्य डॉक्टर की तारीफ की, जो पीड़ित लोगों की मदद कर रहे हैं। यूनिस की पत्नी भी पेशे से डॉक्टर हैं

खेल खत्म, पैसा हजम

दुनिया भर के खिलाड़ियों के वेतन में हो रही कटौती, कोहली-धौनी पर पड़ेगा असर

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : कोरोना वायरस ने जुवेंटस के क्रिस्टियानो रोनाल्डो, बार्सिलोना के लियोन मेसी जैसे विश्व के सुपरस्टार फुटबॉलरों के वेतन में कटौती करवाई तो अब क्रिकेटर, टेनिस और रग्बी खिलाड़ी के वेतन पर इसका प्रभाव पड़ेगा। कोरोना के कारण दुनिया भर में खेलों को स्थगित या रद कर दिया गया है। इटैलियन फुटबॉल क्लब जुवेंटस ने अपने स्टार रोनाल्डो, मैनेजर मॉरिजियो सारी और अन्य खिलाड़ियों के वेतन में कटौती करके 90 मिलियन यूरो (करीब 753 करोड़ रुपये) इकठ्ठा किए थे। इसे उसने कोरोना की लड़ाई में इटली की सरकार को दान देने का फैसला किया है। वहीं, मेसी सहित स्पेनिश क्लब बार्सिलोना के खिलाड़ियों के वेतन में 70 प्रतिशत कटौती की गई है।

आइपीएल खिलाड़ियों पर भी प्रभाव : आइपीएल के खिलाड़ियों के साथ भी ऐसा हो सकता है क्योंकि अभी इसे स्थगित कर दिया गया है। बीसीसीआइ इसके लिए वैकल्पिक विंडो खोज रहा है लेकिन अगर ऐसा नहीं होता है तो फिर उनके खिलाड़ियों की तनख्वाह में कटौती होगी। आइपीएल फ्रेंचाइजी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, 'टूर्नामेंट शुरू होने से एक हफ्ते पहले खिलाड़ियों को 15 प्रतिशत, टूर्नामेंट के दौरान 65 प्रतिशत और बची हुई 20 प्रतिशत राशि आइपीएल खत्म होने के बाद निर्धारित समय के अंदर दी जाती है। निश्चित रूप से किसी भी खिलाड़ी को अभी कुछ नहीं दिया गया है।' बीसीसीआइ क्रिकेटर्स संस्था और भारतीय क्रिकेटर्स संघ के अध्यक्ष अशोक मल्होत्रा ने कहा, 'आइपीएल के एक सत्र के नहीं होने का आर्थिक प्रभाव काफी बड़ा होगा। इससे सिर्फ आइपीएल खिलाड़ियों ही नहीं बल्कि घरेलू खिलाड़ियों तक को भी वेतन में कटौती सहनी पड़ेगी। बीसीसीआइ अपनी कमाई क्रिकेट से करता है। अगर क्रिकेट नहीं हो रहा तो पैसा कहां से आएगा। हमें यहां समझदार होना चाहिए इसलिए ऐसा नहीं है कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर ही प्रभावित होंगे बल्कि घरेलू क्रिकेटरों पर भी असर पड़ेगा।' देश में 21 दिन का लॉकडाउन है जो 14 अप्रैल को खत्म होगा जबकि आइपीएल को 15 अप्रैल तक स्थगित किया गया है।

ऑस्ट्रेलिया में भी वेतन कटौती का संकट : ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम के कप्तान टिम पेन ने स्वीकार किया कि इन हालात में वेतन में कटौती छोटी चीज है और खिलाड़ियों को सहयोग के लिए तैयार होना चाहिए। वहीं, इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान जो रूट को उम्मीद है कि उनके देश का क्रिकेट बोर्ड भी खिलाड़ियों के वेतन में कटौती करेगा। वहीं, दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट बोर्ड ने कहा कि वह अपने खिलाड़ियों के वेतन में कटौती नहीं करेगा।

20 प्रतिशत वेतन काटेगा टॉटनहम : इंग्लिश फुटबॉल क्लब टॉटनहम ने आर्थिक संकट के चलते गैर खिलाड़ी स्टाफ का वेतन 20 प्रतिशत काटने का फैसला किया है। जर्मन फुटबॉल क्लब बायर्न म्यूनिख ने भी संकट के इस दौर में वेतन में भारी कटौती की है। प्रीमियर लीग क्लबों की शुक्रवार को बैठक होनी है जिसमें इसे और आगे बढ़ाया जा सकता है।

अन्य भी चिंतित : अमेरिकी रग्बी के दीवालिया होने की उम्मीद है जिससे खिलाड़ियों के वेतन पर भी प्रभाव पड़ेगा। वहीं, महिला टेनिस संघ (डब्ल्यूटीए) ने कहा कि खिलाड़ियों को अच्छा वेतन देने पर काम कर रहे हैं। हाल ही में कुछ टेनिस खिलाड़ियों ने अपने वेतन को लेकर चिंता जाहिर की थी जो केवल मैच से होने वाली कमाई पर ही निर्भर हैं।

वेतन का बीमा नहीं

नई दिल्ली : आइपीएल फ्रेंचाइजी के अधिकारी ने स्पष्ट किया कि हमें बीमा कंपनी से कोई राशि नहीं मिलेगी क्योंकि महामारी बीमा की शर्तों में शामिल नहीं है। प्रत्येक फ्रेंचाइजी की वेतन देने की राशि 75 से 85 करोड़ रुपये है। अगर खेल ही नहीं होता तो हम भुगतान कैसे कर सकते हैं। ऐसा नहीं है कि धौनी और कोहली ही प्रभावित होंगे बल्कि पहली बार खेलने वालों के लिए 20, 40 या 60 लाख रुपये जिंदगी बदलने वाली राशि है। उम्मीद करते हैं बीसीसीआइ के पास कोई योजना हो। वहीं, बीसीसीआइ के कोषाध्यक्ष अरुण धूमल ने कहा कि कटौती को लेकर कोई भी चर्चा नहीं हुई है।

विराट कोहली ● फाइल फोटो, एपी

कप्तानी के लिए स्मिथ अकेले विकल्प नहीं : पेन

सिडनी, प्रेट्र : ऑस्ट्रेलिया की टेस्ट टीम के कप्तान टिम पेन ने कहा है कि वह 35 साल के हैं और अब युवा नहीं होने वाले हैं, लेकिन कप्तान ने साफ कर दिया है कि पूर्व कप्तान स्टीव स्मिथ उनका स्थान लेने के इकलौते विकल्प नहीं हैं। पेन ने कहा हमारे पास कुछ विकल्प हैं। स्टीव स्मिथ हैं, जिन्होंने पहले कप्तनी की है। कुछ ऐसे भी खिलाड़ी हैं जो आगे आ रहे हैं। जैसे कि ट्रेविस हेड, एलेक्स कैरी, मार्नस लाबुशाने और पैट कमिंस। पेन ने कहा हम टीम में गहराई लाना चाहते हैं ताकि जब मेरा समय खत्म हो जाए तो हमारे पास काफी विकल्प हों। स्मिथ पर लगा कप्तानी प्रतिबंध बीते रविवार खत्म हो चुका है।

पेन का पर्स हुआ चोरी : टिम पेन का पर्स हाल ही में चोरी हो गया है। उनका पर्स किसी ने गैराज के बाहर खड़ी गाड़ी का ताला तोड़कर अंदर से चुराया है। इस चोरी के बारे में पेन को पहले पता नहीं था, लेकिन जब बैंक का अलर्ट आया तो उन्हें पर्स के चोरी होने के बारे में पता चला। दरअसल, बैंक की तरफ से अलर्ट आया कि उनके क्रेडिट कार्ड से काफी शॉपिंग हो रही है। इसके बाद पेन बाहर खड़ी कार में अपना पर्स देखने आए, जिसके बाद उन्हें पता चला कि उनका पर्स चोरी हो गया है। पेन ने बताया कि अपने गैराज को जिम में बदलना चाहते थे। इस दौरान उन्होंने अपनी कार को थोड़ी देर के लिए गली में खड़ा किया और गैराज का दरवाजा भी खुला हुआ था। थोड़ी देर के लिए गली में खड़ी कार के अंदर से किसी ने उनका पर्स चुरा लिया गया।

ईपीएल के सत्र पर शुक्रवार को होगी चर्चा

फुटबॉल डायरी

लंदन : इंग्लैंड फुटबॉल के प्रमुख हितधारक शुक्रवार को कोरोनो वायरस से प्रभावित प्रीमियर लीग के इस सत्र के विकल्पों पर चर्चा करेंगे। महामारी के कारण प्रीमियर लीग कम से कम 30 अप्रैल तक के लिए स्थगित कर दी गई और मई में भी इसके वापसी की संभावना कम है। सभी हितधारक इस सत्र को कैसे और किन तरीकों से खत्म कर सकते हैं, इस पर विस्तार से चर्चा करेंगे। लीग के सभी क्लबों के पास सत्र के शेष मैच बंद दरवाजे के अंदर जून व जुलाई में कराने का मौका है।

मई में बुंडिशलीगा : वहीं, कोरोना के कारण स्थगित हुई जर्मनी की फुटबॉल लीग बुंडिशलीगा को मई में शुरू कराने पर विचार किया जा रहा है। यह मई के शुरुआती सप्ताह में शुरू हो सकती है।

जब रोनाल्डो ने साथी खिलाड़ियों के लिए खरीदे थे आइमैक : इटली के क्लब जुवेंटस के गोलकीपर वोज्किक जैक्जेसनी ने अपने क्लब साथी और पुर्तगाल के सुपरस्टार स्ट्राइकर क्रिस्टियानो रोनाल्डो के बारे में कहा कि रोनाल्डो जब क्लब की ओर से पहली बार यूएफा चैंपियंस लीग में खेल रहे थे तो रेड कार्ड मिलने के बाद उन्होंने पूरी टीम के लिए आइमैक खरीदा था। रोनाल्डो ने 2018 में जुवेंटस क्लब का दामन थामा था। इसके बाद सितंबर 2018 में वह चैंपियंस लीग में अपने क्लब की ओर से पहला मैच खेलने उतरे थे। यह मैच वेलेंसिया के खिलाफ खेला गया था। उस मैच के 29वें मिनट में विपक्षी टीम के गोलकीपर से टकराने के कारण रोनाल्डो को रेड कार्ड दिखाया गया था। इसके अलावा उन पर जुर्माना और एक मैच का प्रतिबंध भी लगाया गया था। वोज्किक ने कहा कि जुवेंटस के पूर्व मैनेजर मेसीमिलयानो अलागेरी ने रेड कार्ड को लेकर एक नियम बनाया था। इस नियम के अनुसार, अगर उसके क्लब के किसी भी खिलाड़ी को रेड कार्ड मिलता है तो उस खिलाड़ी को पूरी टीम के लिए आइमैक खरीदना होगा और रोनाल्डो के साथ भी ऐसा ही हुआ। हम सबके पास एक आइमैक है।

तय कार्यक्रम के अनुसार होगा महिला अंडर-17 विश्व कप

नई दिल्ली : अखिल भारतीय फुटबॉल संघ (एआइएफएफ) को उम्मीद है कि कोरोना वायरस के बावजूद भारत में होने वाले फीफा महिला अंडर-17 विश्व कप को तय कार्यक्रम के अनुसार ही आयोजित किया जाएगा। विश्व कप दो से 21 नवंबर तक होगा जिसके मैच नवी मुंबई, कोलकाता, अहमदाबाद, भुवनेश्वर और गुवाहाटी में खेले जाएंगे।

कोच के लिए इंतजाम

भारतीय महिला अंडर-17 विश्व कप फुटबॉल टीम के स्वीडिश कोच थॉमस डेनेरबी बुधवार को स्वदेश रवाना होंगे क्योंकि कोविड-19 महामारी के चलते देश में 21 दिन के लॉकडाउन से खिलाड़ियों की ट्रेनिंग रुक गई है। स्वीडिश सरकार ने भारत में अपने नागरिकों को ले जाने का इंतजाम किया है। डेनेरबी और हमवतन फिटनेस कोच पर कार्लसन इसी फ्लाइट से रवाना होंगे।

यूएस ओपन कोर्ट बनेगा अस्पताल

न्यूयॉर्क, एएफपी : अमेरिकी ओपन ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट की मेजबानी करने वाले स्टेडियम को कोरोना वायरस से से निपटने के लिए 350 बिस्तर वाले अस्थायी अस्पताल में तब्दील किया जाएगा जिससे शहर में अतिरिक्त चिकित्सा सुविधा प्रदान की जा सके। न्यूयॉर्क शहर के आपातकालीन प्रबंधन कार्यालय ने फ्लशिंग मिडोज स्थित बिली जीन किंग नेशनल टेनिस सेंटर में 350 बिस्तर की सुविधा वाले अस्पताल तैयार करने की योजना बनाई है।

यूएस टेनिस संघ ने कहा कि इससे जुड़ा निर्माण जल्दी शुरू हो सकता है क्योंकि इस सुविधा में एक इंडोर प्रशिक्षण केंद्र है, जिसमें कई कोर्ट और खुले स्थान है। इसके अलावा लुइस आर्मस्ट्रांग स्टेडियम स्थित टेनिस केंद्र में रोजाना 25000 लोगों का खाना तैयार किया जाएगा जो चिकित्सकों और इस महामारी से लड़ रहे चिकित्सा पेशेवरों के लिए होगा। अमेरिका में न्यूयॉर्क इस महामारी का केंद्र बनकर उभरा है जहां मरने वालों की संख्या 1000 को पार कर चुकी है। इससे पहले कोरोना के कारण ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट ऑस्ट्रेलियन ओपन को टाल दिया गया था।

कोरोना का असर

- अमेरिका के अगुस्ता नेशनल गोल्फ क्लब ने दो मिलियन डॉलर (15 करोड़) देने का फैसला किया है
- 28-31 मई तक होने वाले आयरिश ओपन गोल्फ टूर्नामेंट को स्थगित कर दिया गया
- मेरिलबोन क्रिकेट क्लब ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (एनएचएस) के स्टाफ को लॉर्ड्स क्रिकेट मैदान पर उपलब्ध जगह पार्किंग और स्टोरेज के लिए देने का फैसला किया है
- इंग्लिश काउंटी क्लब लंकाशायर के चैयरमैन का कोरोना वायरस के कारण 71 वर्षीय डेविड हॉजकिस का निधन हो गया

बीडब्ल्यूएफ ने विश्व रैंकिंग को स्थिर किया

नई दिल्ली, आइएएनएस : विश्व बैडमिंटन महासंघ (बीडब्ल्यूएफ) ने मंगलवार को विश्व रैंकिंग स्थिर कर दी और कहा कि रैंकिंग 17 मार्च तक जो थी वही रहेगी और इन्हीं के आधार पर कोविड-19 के बाद शुरू होने वाले अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में जगह मिलेगी। बीडब्ल्यूएफ ने कहा कि विश्व रैंकिंग और जूनियर विश्व रैंकिंग को अगले आदेश तक स्थिर कर दिया है। स्थिरता 12वें सप्ताह तक जारी रैंकिंग की रहेगी जो इंग्लैंड ओपन-2020 के बाद था। अगले अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में प्रवेश का आधार 17 मार्च तक जारी रैंकिंग रहेंगी। बीडब्ल्यूएफ ने अपने सभी टूर्नामेंट 12 अप्रैल तक टाल दिए हैं।

दाना नहीं मिला तो पांच हजार मुर्गियों को जिंदा दफनाया

नईदुनिया, रायपुर : छत्तीसगढ़ में रायपुर से सटे आरंग ब्लॉक के चोरभट्टी गांव में मुर्गी फार्म संचालक ने करीब पांच हजार मुर्गियों को जिंदा दफना दिया है। संचालक ओमप्रकाश वर्मा ने कहा कि उनके पास मुर्गियों को खिलाने के लिए दाना नहीं था, जिसके कारण यह निर्णय लेना पड़ा।

वर्मा कहते हैं कि कोरोना वायरस के कारण पहले से ही पोल्ट्री उत्पाद का कारोबार बर्बाद हो गया था। लॉकडाउन में मुर्गियों के लिए न तो दाना मिल पाया और न ही दाना खरीदने के लिए बजट का इंतजाम हो पाया। पिछले 12 साल से मुर्गियों का पालन कर रहे हैं, लेकिन इस तरह की स्थिति कभी नहीं देखी। दफनाई गई मुर्गियां काकरेल नस्ल की थीं।

नौकरी से निकालने के आदेश पर झारखंड हाई कोर्ट ने लगाई रोक

राज्य ब्यूरो, रांची

पहली बार ई-मेल से दाखिल याचिका पर सुनवाई, 12 मई तक मांगा जवाब

झारखंड हाई कोर्ट के इतिहास में पहली बार ई-मेल के जरिए दाखिल याचिका पर एक मामले में सुनवाई की गई। मंगलवार को चीफ जस्टिस डॉ. रवि रंजन ने अपने आवास पर वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए सुनवाई करते हुए दैनिक वेतन भोगी को नौकरी से निकालने से संबंधित सरकार के आदेश पर रोक लगा दी। यह मामला लोहरदगा के जेल अधीक्षक द्वारा संविदा पर जेल में काम कर रहे दैनिक कर्मी चंद्रमौली कुमार झा को एक अप्रैल से हटाने से जुड़ा है। अदालत ने इस मामले में राज्य सरकार और जेल अधीक्षक को 12 मई तक जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है।

सुनवाई को दौरान प्रार्थी के अधिवक्ता अमृतांश वत्स ने अदालत को बताया कि चंद्रमौली कुमार झा 2008 से लोहरदगा जेल में वीडियो कांफ्रेंसिंग ऑपरेटर के पद पर कार्य कर रहे थे। 17 मार्च 2020 को जेल अधीक्षक द्वारा उन्हें नौकरी से निकालने का आदेश जारी किया गया। बताया कि सुप्रीम कोर्ट के एक आदेश के अनुसार दस साल से ज्यादा दिनों से काम करने वाले दैनिक कर्मियों को राज्य सरकार को नियमित करना है, लेकिन दैनिक कर्मियों को नियमित करने की बजाय उन्हें नौकरी से निकाला जा रहा है। वह भी ऐसे समय में जब कोरोना वायरस को लेकर केंद्र सरकार ने 20 मार्च को एक अधिसूचना जारी की है, जिसके तहत कोई भी सरकारी या निजी संस्थान किसी कर्मी को न तो निकाल सकता है और न ही उसका वेतन रोक सकता है। इस दौरान सरकार की ओर से कहा गया कि इस मामले में सरकार ने दैनिक कर्मी को निकालने के निर्णय को स्थगित कर दिया है। सभी पक्षों को सुनने के बाद अदालत ने सरकार से जवाब मांगा है।

हरिद्वार के गंगा घाटों में लॉकडाउन अवधि तक अस्थि विसर्जन पर रोक

जासं, हरिद्वार : हरिद्वार में हरकी पैड़ी समेत सभी गंगा घाटों में अस्थि विसर्जन पर रोक लगा दी गई है। हरिद्वार के एसएसपी सेंथिल अबुदई कृष्णराज एस ने बताया कि लॉकडाउन अवधि तक यह रोक जारी रहेगी। उन्होंने बताया कि जिले की सीमाएं सील कर दी गई हैं। श्रीगंगा सभा ने रोक का समर्थन करते हुए अपील की है कि लोग फिलहाल तीर्थयात्रा अथवा कर्मकांड के निमित्त हरिद्वार न आएं। इस फैसले का श्री गंगा सभा ने भी समर्थन किया है।

जनता कर्फ्यू के बाद उत्तराखंड में लॉकडाउन लागू कर दिया गया था। हालांकि इसके बाद गंगा घाटों पर कर्मकांड कराने वालों की संख्या में कमी आई, बावजूद इसके कुछ लोग अब भी घाटों पर पहुंच रहे थे। एसएसपी के मुताबिक इनमें दूसरे राज्यों के ऐसे लोग भी शामिल हैं जिनके पास अनुमति पत्र हैं। उन्होंने कहा कि संक्रमण को देखते हुए फैसला किया गया कि गंगा घाटों पर अस्थि विसर्जन और कर्मकांड पर पूरी तरह रोक लगाई जाए।

सहारनपुर में पाक आतंकियों का भड़काऊ वीडियो वायरल

जासं, सहारनपुर

खुफिया एजेंसियों ने शुरू की जांच, गृह मंत्रालय ने भी दिए जांच के आदेश

उप्र के सहारनपुर में एक युवक की फेसबुक आइडी पर पाकिस्तानी आतंकियों के भाषणों की भड़काऊ वीडियो मिली। युवक तीन साल से श्रीनगर के अनंतनाग में रह रहा है। खुफिया एजेंसियों ने जांच शुरू कर दी है। फेसबुक आइडी पर पाकिस्तानी आतंकी मसूद अजर के भाषणों की भड़काऊ वीडियो अपलोड की गई है। कई पाकिस्तानी मौलानाओं और पाकिस्तान सेना के जनरल और प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों के आतंकियों की वीडियो भी आरोपित की फेसबुक आइडी पर अपलोड की गई है। आरोपित द्वारा जम्मू-कश्मीर की आजादी को लेकर भी विवादित पोस्ट डाली गई है।

पूरा प्रकरण सामने आने के बाद गृह मंत्रालय ने भी जांच के आदेश दिए हैं। एसपी देहात विद्यासागर मिश्र ने बताया कि इस मामले की जांच चल रही है। जांच के बाद ही पूरे मामले पर पुलिस अपनी रिपोर्ट शासन को भेजेगी। पुलिस के मुताबिक आरोपित युवक नागल क्षेत्र के एक गांव का निवासी है।

विवादित पोस्ट डालने के मामले में मुकदमा

सोमवार को मोहल्ला शाह बुखारी निवासी युवक द्वारा प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के खिलाफ डाली गई विवादित पोस्ट के मामले में पुलिस ने आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। प्रभारी निरीक्षक यज्ञदत्त ने बताया कि आरोपित बाबर खान के खिलाफ आइटी एक्ट सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। आरोपित को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

अरुणाचल के विधायक की हत्या मामले में पूरक आरोपपत्र दाखिल

नई दिल्ली, प्रेट्र : राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने अरुणाचल प्रदेश में एक विधायक एवं अन्य 10 की हत्या मामले में पूरक आरोपपत्र दाखिल किया है। पिछले साल मई में एनएससीएन (आइएम) ने घात लगाकर किए गए हमले में विधायक एवं अन्य की हत्या कर दी थी। जांच एजेंसी ने आरोपित एलिए केटोक के खिलाफ अरुणाचल प्रदेश के युपिआ में एनआइए के विशेष कोर्ट में आरोपपत्र दाखिल किया है। केटोक को आइपीसी की आपराधिक साजिश और हत्या के साथ ही गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम के संबंधित प्रावधानों के तहत आरोपित बनाया गया है। खोन्सा क्षेत्र के विधायक तिरोग अबोह के काफिले पर एनएससीएन (आइएम) के उग्रवादियों ने तिराप जिले में पांसुम थोंग गांव के पास 21 मई 2019 को घात लगाकर हमला किया था। उस समय विधायक खोन्सा से डिब्रूगढ़ जा रहे थे। घात लगा कर हुए हमले में विधायक समेत 11 लोगों की मौत हो गई थी।

10 करोड़ डॉलर (करीब 754 करोड़ रुपये) की मदद दुनियाभर में प्रतिकूल परिस्थितियों में काम कर रहे न्यूज मीडिया के लिए देगी फेसबुक। कंपनी की तरफ से जारी बयान में यह जानकारी दी गई है।

कालमेघ बनेगा कोरोना का काल!

रूमा सिन्हा, लखनऊ

उम्मीद

- मॉडर्न मेडिसिन के साथ हर्बल औषधि पर भी दिया जा रहा जोर
- कोविड-19 के डायग्नोसिस के लिए भी किट बनाने का प्रयास

कालमेघ का पौधा। फाइल

तमाम चिकित्सा पद्धतियों के बीच आयुर्वेद का रुतबा क्यों बरकरार है, यह किसी को बताने की जरूरत नहीं। दुनिया के तमाम देश जहां कोरोना से त्राहि-त्राहि कर रहे हैं, वहीं भारतीय वैज्ञानिक कोरोना का काल तलाशने में जोर-शोर से जुटे हैं। उम्मीद की किरण जगी है कि औषधीय पौधा ही कोरोना का काल बनेगा।

सीडीआरआइ के निदेशक डॉ. तापस के. कुंडू बताते हैं कि मॉडर्न मेडिसिन के साथ हमारा फोकस आयुर्वेद की तरफ भी है। कालमेघ औषधीय पौधे का प्रयोग फीवर व वायरल संक्रमण में किया जाता है, जिसमें वायरल रोगों के नियंत्रण की अपारशक्ति है। कालमेघ में एंडो ग्राफीलाइट पैनीकुलेटम पाया जाता है। यह एक टेट्रासाइक्लिक कंपाउंड है, जो वायरस की प्रोटीन के साथ जुड़ता है और उसे खत्म कर देता है।

सीडीआरआइ इसके प्रभावों की पड़ताल कर रहा है। इसके लिए हर्बल टीम तैयार की गई है। इसके जरिये कोविड-19 के हर्बल उपचार में जल्द सफलता मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। संस्थान मॉडर्न मेडिसिन के तहत ऐसे मॉलिक्यूल की परख में जुटा है, जो इलाज में कारगर होते दिखाई दे रहे हैं।

डायग्नोस्टिक किट की तैयारी : सीडीआरआइ डायग्नोस्टिक किट तैयार करने में भी जुटा है। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) की औषधि अनुसंधान करने वाली देश की अकेली प्रतिष्ठित प्रयोगशाला सीडीआरआइ के वैज्ञानिकों का प्रयास है कि वायरस के मुकाबले के लिए देश को हर फ्रंट पर तैयार किया जा सके।

तीन फ्रंट पर काम कर रहा संस्थान : जागरण से विशेष बातचीत में सीडीआरआइ के निदेशक डॉ. तापस के. कुंडू ने बताया कि कोरोना से जंग में संस्थान तीन फ्रंट पर काम कर रहा है। जल्द से जल्द कुछ अलग तरह की ब्रॉड स्पेक्ट्रम डायग्नोस्टिक किट तैयार करने की कोशिश है, जो मौजूदा किट से अलग होगी। डॉ. कुंडू ने बताया कि देश में जहां भी औषधि अनुसंधान किया जा रहा है, वहां हम विकसित दवा को कोरोना वायरस के प्रोटीन के जरिये परखकर यह बता सकते हैं कि वह उपचार में कारगर होगी या नहीं। इसके अलावा संस्थान ने ऐसे 3-4 मॉलिक्यूल की भी पहचान की है, जिन्हें वैश्विक स्तर पर किए जा रहे अनुसंधान में कोविड-19 के इलाज के लिए संभावित मॉलिक्यूल के तौर पर देखा जा रहा है। इनमें से एक मॉलिक्यूल को उपचार में काफी प्रभावी बताया जा रहा है। चूंकि ये मॉलिक्यूल भारतीय फार्मा कंपनी नहीं बनाती हैं, ऐसे में संस्थान की कोशिश है कि इन मॉलिक्यूल को तैयार करने के लिए आसान सिंथेसिस यानी बनाने की विधि विकसित की जाए। इससे यदि आने वाले समय में इस बात की पुष्टि हो जाती है कि वह दवाएं ही कोरोना के इलाज में कारगर हैं, तो भारत विदेशी फार्मा कंपनियों के ऊपर निर्भर न होकर सटीक और बेहद सस्ती दवा तैयार कर सकेगा।

डीएम-एसपी का इन्कार, कोरोना संदिग्धों की सूचना देने पर नहीं हुई हत्या

जागरण संवाददाता, सीतामढ़ी: कोरोना वायरस के संदिग्धों की हेल्पलाइन पर सूचना देने पर हत्या से सीतामढ़ी के जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक ने इन्कार किया है। थाना क्षेत्र के मधौल गांव में रविवार रात 25 साल के युवक बबलू की हत्या के पीछे यही कारण बताया जा रहा था, जबकि जिले के एसपी अनिल कुमार ने कहा कि अभी तक की जांच में यह मामला स्थानीय विवाद से जुड़ा निकला है। इस मामले के नामजद अभियुक्त मुन्ना महतो व सुधीर महतो को गिरफ्तार कर लिया गया है। मामले की जांच जारी है।

बबलू के भाई गुड्डू कुमार ने इसी आरोप में प्राथमिकी दर्ज कराई है। उसका कहना है कि ठगा महतो के दो पुत्र मुन्ना महतो व सुधीर महतो के मुंबई से आने के बारे में बबलू ने हेल्पलाइन को सूचना देकर डॉक्टर को बुलवाया था। वे 24 मार्च को मुंबई से गांव आए थे। हेल्पलाइन को सूचना देने वाली बात उन दोनों को अच्छी नहीं लगी। इसी रंजिश में कुछ लोगों के साथ मिलकर उसकी हत्या कर दी।

दो रोटी जवानों के लिए और दो जरूरतमंदों के लिए

चौराहों पर तैनात जवानों तक भोजन पहुंचाते समाजसेवी। नई दुनिया

युवराज गुप्ता, बुरहानपुर

- घर-घर से कर रहे रोटी एकत्र, बांट रहे जनसेवा में डटे पुलिसकर्मियों, कर्मचारियों और जरूरतमंदों को

मध्यप्रदेश के बुरहानपुर में आमलोगों ने प्रेरक पहल शुरू की है। सभी घरों में अतिरिक्त भोजन बनाया जा रहा है, जिसे जनसेवा में तैनात कर्मचारियों-अधिकारियों और जरूरतमंदों तक स्वयं पहुंचा रहे हैं।

सड़क पर पुलिस जवान तो अस्पताल में डॉक्टर-नर्स अपनी ड्यूटी कर रहे हैं। ऐसी विपरीत परिस्थिति में इन लोगों का इस तरह मदद का हाथ बढ़ाना समस्या को कमतर करने का काम कर रहा है। हां, इसमें सूझबूझ भी बरत रहे हैं, शारीरिक दूरी का पूरा ध्यान रखते हैं।

स्वस्थ समाज

इस पहल में महिलाएं भी अपनी भागीदारी बखूबी निभा रही है। शहर में करीब 100 परिवारों की महिलाओं द्वारा ड्यूटी पर तैनात जवानों और सार्वजनिक स्थलों पर बेसहारा बैठे जरूरतमंदों के लिए भी भोजन बनाया जा रहा है। रोजाना सुबह दो रोटी जवानों की तो दो रोटी जरूरतमंदों की... यही इनका नारा है। फिर कुछ महिलाओं द्वारा घर-घर से रोटी कलेक्शन कर पुरुषों को दिया जा रहा है। वहीं, पुरुषों द्वारा अपने-अपने वाहनों से शहर में घूमकर प्रमुख चौक चौराहों पर तैनात पुलिसकर्मियों और जरूरतमंदों तक ये रोटी और सब्जी पहुंचाई जा रही है।

इस अनूठी सेवा में करीब 100 परिवारों द्वारा सहभागिता की जा रही है। संजय नगर निवासी त्रिलोक जैन और मुकेश पूर्वे के मुताबिक संजय नगर व सुंदर नगर कॉलोनी की महिलाओं द्वारा यह सराहनीय कार्य किया जा रहा है, जिसमें सभी मिलजुलकर अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। पूजा प्रजापति, स्नेहलता पूर्वे, प्रिया बोरसे और सिया प्रजापति ने बताया कि प्रत्येक घर से चार रोटी की सेवा दी जा रही है। साथ ही सब्जी व अन्य चीजें भी। सुबह जल्दी उठकर भोजन बनाने और फिर घरों से जुटाने में जुट जाती हैं।

यातायात थाना प्रभारी हेमंत पाटीदार के मुताबिक लॉक डाउन में मुस्तैदी से तैनात जवानों को जो भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है यह राहत पहुंचाने वाला है। मानव सेवा का एक प्रेरक संदेश इनके द्वारा दिया जा रहा है।

वहीं, जिला कलेक्टर राजेश कौल ने कहा कि यह कार्य सराहनीय और प्रेरक है। संकट की इस घड़ी में और भी लोगों को आगे आना चाहिए और अपने-अपने स्तर पर मदद के हाथ बढ़ाने चाहिए। ऐसी समाजसेवी संस्थाओं और लोगों को भविष्य में पुरस्कृत किया जाएगा।

वहीं, बुरहानपुर, शाहपुर, नेपानगर में आरएसएस की सेवा भारती इकाई द्वारा भी पुलिसकर्मियों और जरूरतमंदों को भोजन प्रदान किया जा रहा है। संस्था के नितिन चौधरी ने बताया कि हर दिन करीब 200 लोगों को भोजन उपलब्ध करा रहे हैं। केंद्रीय कानून मंत्री रवि शंकर प्रसाद ने बुरहानपुर में चल रहे सेवाकार्यों कीसराहना की है।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें www.jagran.com/topics/positive-news

कोरोना से लड़ने को बना रहे नए हथियार

जागरण विशेष ▶ संकट की इस घड़ी में काम आ सकने वाले कारगर उपकरण बनाने में जुटे युवा नवोन्मेषी

कोरोना वायरस से बचाव को कवच, हाईकैपेसिटी सैनिटाइजर जैसे संसाधन कर रहे विकसित, ताकि न करना पड़ें आयात

जेएनएन, नई दिल्ली

अभिनव ठाकुर द्वारा बनाया गया सैनिटाइज गेट। नई दुनिया

एक ओर जहां पूरा तंत्र कोरोना से लड़ने में दिन-रात एक किए हुए है, कुछ युवा नवोन्मेषी भी ऐसे कारगर उपकरण बनाने में जुटे हुए हैं जो संकट की इस घड़ी में काम आ सकें।

ऐसे ही एक कोरोना फाइटर हैं जबलपुर, मप्र निवासी अभिनव ठाकुर। इस युवा इंजीनियर ने लॉक डाउन के बीच घर में रहकर ही कोरोना से बचाव के लिए ऐसे उपकरण बनाए जो बाजार में इन दिनों मुश्किल से मिल रहे हैं। वो भी बेहद मामूली कीमत पर। हालांकि इन उपकरणों को अब सरकार से अनुमति मिलने का इंतजार है। वह कहते हैं कि यदि उनके उपकरणों को मेडिकल से प्रमाणित किया जाता है तो इसे लागत मूल्य पर उपलब्ध कराएंगे।

उनके द्वारा तैयार सैनिटाइजिंग गेट कोरोना की जांच और इलाज में लगे डाक्टरों, पुलिस कर्मियों और जनता के संपर्क में आने वाले वॉलंटियर्स को वायरस से बचाने में कारगर है। इसकी ऊंचाई 7 फीट और चौड़ाई 5 फीट है। यह पूरी तरह फोल्डेबल है और आसानी से इसे कहीं भी इंस्टाल किया जा सकता है। इसमें 6 नोजेल लगे हुए हैं जो हाईप्रेशर पंप से कनेक्ट हैं। मोबाइल के द्वारा दूर से भी इसे कंट्रोल किया जा सकता है। इसमें किसी भी तरह के तरल सैनिटाइजर का इस्तेमाल किया का सकता है। इसकी लागत करीब 5 हजार रुपये के आसपास है।

कोरोना महामारी के बीच इंफ्रारेड सेंसरयुक्त तापमापी की मांग तेजी से बढ़ी है। बाजार में जरूरत के मुताबिक उपलब्धता नहीं है। इस उपकरण की मदद से बिना छुए ही दूर से व्यक्ति का तापमान मापा जा सकता है। इसे थ्रीडी प्रिंटर की मदद से तैयार किया गया है। लागत करीब एक हजार रुपए की आई है।

इसके अलावा उन्होंने फेस शील्ड भी बनाई है। इसे थ्रीडी प्रिंटर के जरिये पाली लैक्टिक एसिड से बनाया गया है और इसकी शील्ड पॉलीएथेलीन की है, जो की आम स्टेशनेरी पर उपलब्ध होती है, जिसे आसानी सैनिटाइज किया जा सकता है, बदला जा सकता है। यह शील्ड उन लोगों के खास काम आएगी जो सीधे तौर पर जांच आदि का काम कर रहे हैं। शील्ड उनके चेहरे खासकर आंख, मुंह, नाक और उनके मास्क को सीधे संपर्क में आने से बचाएगी। शील्ड की कीमत एक से दो रुपये आती है। 2 दिन के भीतर इसे डिजाइन किया गया है।

मोबाइल विषाणुनाशक चैंबर : वहीं, आइआइटी कानपुर के पूर्व छात्र पंकज मित्तल ने मोबाइल विषाणुनाशक चैंबर तैयार किया है। इसका निर्माण भारत में स्वच्छ भारत अभियान के तहत इस्तेमाल होने वाले पोर्टेबल शौचालय के केबिन पर किया गया है। पंकज बताते हैं कि अभी तक मोबाइल विषाणुनाशक चैंबर का प्रयोग चीन के वुहान और हांगकांग सहित कई देशों में हुआ है। एक चैंबर बनाने में अधिक कीमत आती है, हमने पोर्टेबल शौचालय के केबिन का प्रयोग किया है। इसे तैयार करने में दो लाख रुपये की कीमत आई है। विदेश में जो मोबाइल विषाणुनाशक चैंबर लगे हैं उनकी कीमत चार लाख तक है। सोमवार को दिल्ली के रोहिणी स्थित आंबेडकर अस्पताल में इसका मेडिकल प्रशिक्षण भी हो गया है। जिसके सुखद परिणाम रहे।

इस एक मोबाइल चैंबर के माध्यम से एक दिन में एक हजार लोगों को सैनिटाइज किया जा सकता है। इसकी विशेषता है कि सिर्फ 5 एमएल यानी जितना सैनिटाइजर हम हाथों पर लगाते हैं उतना ही सैनिटाइजर पूरी बॉडी के लिए पर्याप्त है। हम जिस तरह से किसी भी कार्यालय में जाने से पहले सुरक्षा जांच के लिए स्कैनर से होकर गुजरते हैं उसी तरह इस मशीन को गेट पर रखकर व्यक्ति को 20 सेकंड के लिए इसमें खड़ा करने से वो पूरी तरह से सुरक्षित हो जाएगा।

(जबलपुर से पंकज तिवारी और नई दिल्ली से मनु त्यागी की रिपोर्ट।)

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें www.jagran.com/topics/jagran-special

कश्मीर में हथियार और नक्शे बरामद, आतंकी फरार

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

- गुलाम कश्मीर में बैठे आतंकी सरगनाओं ने भेजा था जखीरा
- दक्षिण कश्मीर के सांबूरा और काकपोरा में भी तलाशी अभियान

सुरक्षाबलों ने मंगलवार को उत्तरी कश्मीर में एलओसी से सटे केरन सेक्टर में आतंकी ठिकाने से हथियारों का जखीरा बरामद किया है। सुरक्षाबलों ने आतंकियों के छिपे होने की सूचना पर दक्षिण कश्मीर के सांबूरा, काकपोरा और इससे सटे अन्य इलाकों में भी तलाशी अभियान चलाए हैं।

पुलिस को सूचना मिली थी कि आतंकियों के लिए हथियारों की एक खेप गुलाम कश्मीर में बैठे उनके सरगनाओं ने इस तरफ भेजी है। इसे केरन सेक्टर में छिपाया गया है। इसके बाद पुलिस के विशेष अभियान दल यानी एसओजी ने सेना की 6 आरआर के जवानों के साथ तलाशी अभियान चलाया।

मंगलवार की सुबह सात बजे जवानों ने किशनगंगा दरिया के पास बने आतंकी ठिकाने का पता लगाया। इस आतंकी ठिकाने से एक एके-47 राइफल, एक एके-56 राइफल, असाल्ट राइफल की छह मैगजीन, असाल्ट राइफल के 180 कारतूस, एक पिस्तौल और एक मैगजीन, कुछ नक्शे और दो अत्याधुनिक संचार उपकरण मिले हैं।

इसके अलावा पुलिस और सेना ने दक्षिण कश्मीर में पंपोर के निकट सांबूरा में आतंकियों के छिपे होने की सूचना पर इलाके की घेराबंदी करते हुए तलाशी अभियान चलाया। जवानों ने करीब दो दर्जन मकानों की तलाशी ली, लेकिन आतंकियों का कोई सुराग नहीं लगा। एक अन्य सूचना पर सुरक्षाबलों ने काकपोरा के मारवल इलाके मे लश्कर के दो आतंकियों के अपने एक संपर्क सूत्र के पास पहुंचने की सूचना पर तलाशी ली। गांव में कई युवकों से संदेह के आधार पर पूछताछ भी की, लेकिन किसी को हिरासत में नहीं लिया गया। सूत्रों ने बताया कि सुरक्षाबलों को सूचना थी कि सांबूरा और काकपोरा में चार से पांच आतंकी बीते कुछ दिनों से घूम रहे हैं। इसके बाद तलाशी अभियान चलाया गया, लेकिन सेना के आने की भनक लगते ही आतंकी फरार हो गए।

भतीजे के निधन पर सलमान ने लिखा, तुम्हें हमेशा प्यार करता रहूंगा

एंटरटेनमेंट ब्यूरो, मुंबई

बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान ने मंगलवार को अपने भतीजे अब्दुल्ला खान (बाएं) के साथ तस्वीर ट्वीट कर उसे याद किया। ट्विटर

सलमान खान के भतीजे अब्दुल्ला खान का मंगलवार को मुंबई के लीलावती अस्पताल में निधन हो गया। वह मात्र 38 साल के थे। सलमान ने उन्हें याद करते हुए सोशल मीडिया पर उनके साथ अपनी एक तस्वीर साझा की है। सलमान ने लिखा है, 'तुम्हें हमेशा प्यार करता रहूंगा।'

अब्दुल्ला सलमान की बुआ के पौत्र थे। वह फिल्म इंडस्ट्री में भी मशहूर थे। सलीम खान के भतीजे मतीन खान ने बताया कि अब्दुल्ला को डायबिटीज थी और उन्हें हृदय संबंधी समस्या थी। सोमवार को शाम आठ बजे के आसपास उनके निधन की खबर आई। उन्होंने बताया कि अब्दुल्ला अपनी सेहत का ध्यान नहीं रखते थे। उन्हें लगता था कि वह फिट हैं और उन्हें कुछ नहीं होगा। सबसे दुख की बात यह है कि वह अपने माता-पिता की एकलौती संतान थे।

लॉकडाउन की वजह से सलमान का परिवार इंदौर नहीं पहुंच सकता है। मतीन ने बताया कि हमें इस दुख की घड़ी में भी शहर का ध्यान रखना है। उन्होंने बताया कि अब्दुल्ला के शव को सड़क मार्ग से ले जाया जा रहा है। इंदौर में उनका अंतिम संस्कार होगा। उनके जनाजे में परिवार के दो-चार लोग ही शामिल होंगे।

सलमान की दोस्त यूलिया वंतूर ने श्रद्धांजलि देते हुए लिखा, 'जैसा कि तुम कहते थे - हम गिरते हैं, टूटते हैं, असफल होते हैं, लेकिन हम फिर उठते हैं, ठीक होते हैं, जीत जाते हैं। तुम बहुत जल्दी चले गए।' जरीन खान ने भी दुख व्यक्त करते हुए उनकी तस्वीर साझा की है। विंदू दारा सिंह ने लिखा, 'अब्दुल्ला भाई बहुत जल्दी चले गए। तुम्हारा मुस्कुराता हुआ चेहरा हमेशा याद आएगा। भगवान तुम्हारी आत्मा को शांति दे।'

उप्र में राज्यमंत्री के बेटे के रेस्तरां की छत पर वेटर ने की खुदकशी

जागरण संवाददाता, आगरा

- सुसाइड नोट में राज्यमंत्री की पुत्रवधू को बताया जिम्मेदार
- लिखा, लॉकडाउन के बाद मांगने पर नहीं दी मदद, पुलिस कर रही जांच

उप्र के राज्यमंत्री के पुत्र के रेस्तरां की छत पर एक वेटर ने खुदकशी कर ली। शिलांग में रहने वाले रिश्तेदारों को वाट्सएप पर भेजे सुसाइड नोट में उसने राज्यमंत्री की पुत्रवधु पर आरोप लगाए हैं। मेघालय के एडीजी कानून व्यवस्था ने एडीजी अजय आनंद को मैसेज फॉरवर्ड कर मामले की जानकारी दी। इसके बाद मंगलवार सुबह पुलिस ने रेस्तरां की छत से उसका शव बरामद कर लिया। आगरा पुलिस मामले की जांच कर रही है।

उप्र के लघु उद्योग एवं खादी राज्यमंत्री चौ. उदयभान सिंह के पुत्र का आगरा के सिकंदरा क्षेत्र में शांति फूड कोर्ट रेस्तरां है। यहां शिलांग निवासी एल्ड्रिन लिंगदोह वेटर था। मंगलवार को रेस्तरां पहुंची पुलिस को छत पर टिन शेड में फंदे से उसका शव लटका मिला। सुसाइड नोट में उसने रेस्तरां संचालक राज्यमंत्री की पुत्रवधू सीमा चौधरी को जिम्मेदार ठहराया है।

राज्यमंत्री के स्वजन की ओर से पुलिस को बताया गया है कि एल्ड्रिन पूर्व में चोरी में सिकंदरा थाने से जेल गया था। जमानत पर बाहर आया तो उसे टीबी की बीमारी हो गई थी। इस कारण उसे नौकरी से निकाल दिया गया था। लॉकडाउन के बाद वहां यहां नौकरी के लिए आया था। रेस्तरां बंद था, इसलिए उसे काम पर नहीं रखा गया।

> कर्मचारी के मोबाइल की कॉल डिटेल और कर्मचारियों से पूछताछ के बाद एल्ड्रिन के रेस्तरां में काम करने की पुष्टि हो रही है। रेस्तरां के सीसीटीवी फुटेज भी लिए जा रहे हैं। युवक के माता-पिता नहीं हैं। रिश्तेदारों से संपर्क करने की कोशिश की जा रही है। उनके आने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।
>
> -सौरभ दीक्षित, एएसपी (सीओ हरीपर्वत)

> पुलिस मामले की जांच कर रही है। हमारी ओर से पूरा सहयोग मिलेगा।
>
> -चौ. उदयभान सिंह, राज्यमंत्री

चर्चा में गांव

कोरौना गांव ने दिए कई न्यायिक और पुलिस अधिकारी, चौरासी कोसी परिक्रमा का भी पहला पड़ाव है यह गांव

कोरौना गांव ने दिए कई रत्न, अब लोग कर रहे बदनाम

जागरण संवाददाता, सीतापुर

कोरौना की दूरी दर्शाता मील का पत्थर। फाइल

कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण के बीच उप्र के सीतापुर की मिश्रिख तहसील का 'कोरौना' गांव अचानक बड़ी तेजी से चर्चा में आ गया है। वायरस से मिलते-जुलते नाम के कारण जहां गांव के बारे में पता करने को लेकर लोगों में दिलचस्पी बढ़ गई है, वहीं सोशल मीडिया पर लोग गांव का मजाक भी बना रहे हैं। कोरौना गांव के निवासी इससे खासे नाराज हैं।

वे कहते हैं, गांव ने कई बड़े अफसर दिए हैं। यही नहीं, नैमिषारण्य की चौरासी कोसी परिक्रमा का पहला पड़ाव भी इसी गांव में है। इसी वजह से देश-विदेश के हजारों श्रद्धालु हर साल यहां आते हैं। लखनऊ हाई कोर्ट के वकील प्रणव त्रिवेदी का कहना है कि गांव का मजाक उड़ाना कतई सही नहीं है। इस गांव से जुड़ी तमाम पौराणिक गाथाएं हैं। राजीव कुमार सिंह का कहना है कि हमारा गांव कोरौना पूरे जिले में प्रतिष्ठित है। सोशल मीडिया पर मैंने भी लोगों को इसे कोरोना से जोड़कर मजाक उड़ाते देखा है, लेकिन हकीकत में इसके चलते अब तक कहीं कोई दिक्कत नहीं झेलनी पड़ी। फोन पर भी कभी किसी ने कोई ऐसी बात मुझसे नहीं की। उन्होंने कहा कि हमारा गांव जागरूक है। हम सब लॉकडाउन का भी पूरी तरह पालन कर रहे हैं।

पौराणिक नाम है कारंडव वन : पहले यह गांव कारंडव वन के नाम से प्रचलित था। नैमिषारण्य से करीब 15 किलोमीटर दूर स्थित इस गांव की आबादी लगभग चार हजार है। गांव के दक्षिण में द्वारिकाधीश मंदिर है और सामने प्राचीन तीर्थ है। मंदिर के पड़ोस में तालाब है। इसे अहिल्या के नाम से जाना जाता है। मान्यता है कि, इस तालाब की स्थापना देवताओं ने की थी।

ऐसे बन गया कोरौना : गांव के पूर्व प्रधान पद्ममंगल त्रिवेदी बताते हैं कि कारंडव वन नाम का अपभ्रंश हो गया। बाद में धीरे-धीरे बोलचाल में ही यह कारंडव वन से कोरौना बन गया।

> कोरौना पौराणिक गांव है। स्कंद पुराण के विष्णु खंड में भी इसका वर्णन है। गांव के कई लोग बड़े पदों पर पहुंचे हैं। वर्तमान में गांव के बारे में गलत बातें प्रसारित की जा रहीं हैं। किसी के मजाक का मतलब यह नहीं है कि यहां आने से लोग घबराने लगें।
>
> -पद्ममंगल त्रिवेदी, पूर्व प्रधान

ये लोग रहे गांव की शान

स्वर्गीय रामकृष्ण त्रिवेदी पश्चिम बंगाल में पुलिस महानिदेशक विजिलेंस, स्वर्गीय गोविंद कृष्ण त्रिवेदी जिला जज, स्वर्गीय जयशंकर त्रिवेदी हाई कोर्ट इलाहाबाद बेंच के जज, स्वर्गीय डॉ. ज्ञानवती त्रिवेदी काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष और स्वर्गीय शिव शंकर त्रिवेदी उप्र संस्कृत अकादमी में कार्यकारी पार्षद रहे। इसके अलावा हाई कोर्ट लखनऊ बेंच के रिटायर्ड जज डीके त्रिवेदी भी इसी गांव के हैं। वह बिहार में सवर्ण आयोग के चेयरमैन भी रहे। इसी गांव के राजीव कुमार सिंह की बेटी निवेदिता सिंह वर्तमान में रामपुर जिले में जिला अल्प बचत अधिकारी हैं।

आपत्तिजनक पोस्ट शेयर करने पर बीईओ निलंबित

नई दुनिया, श्योपुर : प्रधानमंत्री राहत कोष में मदद को लेकर पीएम नरेंद्र मोदी के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट शेयर करने पर मध्य प्रदेश में श्योपुर के ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (बीईओ) केसी गोयल को निलंबित कर दिया गया है। लोगों से देश की मदद को लेकर आपत्तिजनक कमेंट के साथ ये पोस्ट वायरल हुई थी। बीईओ केसी गोयल ने अपने फेसबुक पेज पर यह पोस्ट शेयर की थी। इसकी शिकायत मिलते ही श्योपुर कलेक्टर प्रतिभा पाल सीईओ ने गोयल को निलंबित कर दिया।

मौसम विशेष

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व राजस्थान में आंशिक बादलों के साथ मौसम शुष्क रहेगा। दिन के तापमान में वृद्धि होगी। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश में एक-दो स्थानों पर गरज के साथ वर्षा होगी। दिन के तापमान में वर्षा में कमी के कारण वृद्धि होगी।

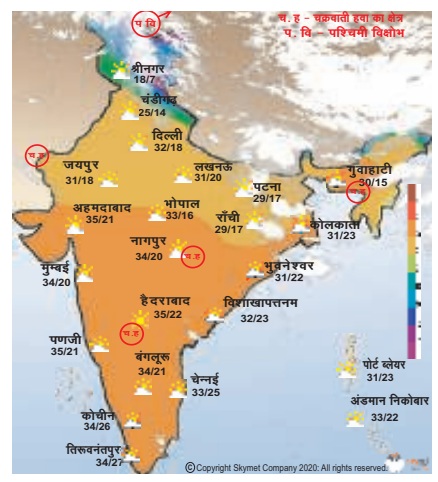

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	35/21/आंबा अहमदाबाद	39/16/व	
कोलकाता	33/21/आंबा बड़ौदा	38/16/सा	
चेन्नई	34/26/व नागपुर	35/20/व	
हैदराबाद	35/23/आंबा इन्दौर	34/17/व	
बंगलूरू	34/22/आंबा रांची	30/16/व	
त्रिवेन्द्रम	34/26/आंबा पटना	32/17/व	
गुवाहाटी	34/21/आंबा जमशेदपुर	32/17/व	
गंगटोक	15/08/आंबा पुणे	35/18/व	

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
बुधवार 1 अप्रैल 2020
आजकल
14
www.jagran.com

भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना हुई

1935 में आज ही देश के केंद्रीय बैंकिंग संस्थान भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना हुई। प्रथम विश्व युद्ध से उपजे आर्थिक संकटों से उबरने के लिए इसकी स्थापना की गई। शुरुआत में इसके शेयर निजी शेयरहोल्डरों के पास थे। आजादी के बाद 1 जनवरी, 1949 को इस बैंक का राष्ट्रीयकरण किया गया।

पहला मौसम उपग्रह तिरोस-1 लांच हुआ

1960 में आज ही अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने दुनिया का पहला मौसम उपग्रह फ्लोरिडा के केप कैनवेरल से लांच किया। 122 किग्रा वजनी यह उपग्रह अपने साथ छह इंच लंबे दो टेलीविजन कैमरे ले गया था। कक्षा में स्थापित होते ही इसने पृथ्वी की पहली तस्वीर भेजी।

दिग्गज आइटी कंपनी एप्पल की स्थापना हुई

तकनीक की दुनिया में क्रांति लाने वाली दिग्गज अमेरिकी कंपनी एप्पल इंकॉर्पोरेशन 1976 में आज ही के दिन अस्तित्व में आई। तीन अमेरिकियों स्टीव जॉब्स, स्टीव वोजनैक और रोनाल्ड वेन ने मिलकर दुनिया की सबसे बड़ी आइटी कंपनी की नींव रखी। कंपनी का पहला उत्पाद एप्पल 1 नामक कंप्यूटर था, जिसे वोजनैक ने बनाया था। यह कंप्यूटर जुलाई, 1976 में बिक्री के लिए बाजार में आया। 2001 में कंपनी ने आइ-पॉड लांच किया। 2007 में पहला आइ-फोन, 2010 में पहला आइ-पैड, 2014 में एप्पल वॉच लांच की। इसके दुनिया के विभिन्न देशों में 500 से ज्यादा रिटेल स्टोर हैं।

इधर-उधर की

प्यार के लिए शख्स ने खोजा अनोखा तरीका

न्यूयॉर्क, एजेंसी : कोरोना वायरस के इस दौर में प्यार करना आसान नहीं है।

हालांकि फिर भी एक शख्स ने डेट का अनोखा तरीका खोज निकाला है। कुछ दिनों पहले ब्रुकलिन के रहने वाले जेरेमी कोहेन ने एक महिला को पास के ही मकान की छत पर डांस करते देखा था। इसके बाद जेरेमी ने ड्रोन के जरिए उसका नंबर लिया और फिर दोनों ने वीडियो चैट के जरिए एक दूसरे को जाना। बस फिर क्या था, दोनों के बीच प्रेम पनप उठा। अब उन्होंने ट्विटर पर वीडियो शेयर कर बताया है कि सिग्नारेला से मिलने के लिए वे एक पारदर्शी गुब्बारे में गए। जिसमें हवा भरी हुई थी। इस वीडियो को कुछ ही दिनों में 25 लाख लोग देख चुके हैं। इस सुरक्षात्मक उपाय के लिए उनकी तारीफ हो रही है। वे अपने साथ फूल लेकर भी गए थे, लेकिन गुब्बारे में होने के कारण उसे दे नहीं सके। उम्मीद है कि संकट के गुजरने के बाद दोनों मिल सकेंगे।

एआइ का कोरोना के इलाज में सहारा

सफलता ▶ किस मरीज की हालत ज्यादा बिगड़ेगी, पता करना हो जाएगा आसान

टूल पर काम जारी, अभी तक के नतीजों में 80 फीसद तक सही निकले

यह अध्ययन कंप्यूटर्स मैटेरियल्स एंड कंटीनुआ जर्नल में प्रकाशित हुआ है। प्रतीकात्मक

न्यूयार्क, प्रेट्र : वैज्ञानिकों ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) का एक ऐसा टूल विकसित किया है जो इस बात का सही-सही पता कर लेता है कि किस कोरोना पीड़ित की हालात बिगड़ेगी और उसको श्वसन तंत्र की गंभीर समस्या पैदा हो जाएगी।

कंप्यूटर्स मैटेरियल्स एंड कंटीनुआ जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन रिपोर्ट में बीमारी बिगड़ने के संकेतों का विवरण भी दिया गया है। न्यूयार्क विश्वविद्यालय में क्लीनिकल असिस्टें प्रोफेसर मेगन कॉफी ने बताया कि हमारे इस माडल की सत्यता स्थापित करने के लिए अभी और काम होना है। यह उन मरीजों का पता लगाने में सक्षम है जिनकी हालत बिगड़ सकती है। यह उन डाक्टरों के लिए अनुकूल है जिन्हें वायरस पीड़ितों के इलाज का अनुभव है।

न्यूयार्क विवि के ही एक अन्य क्लीनिकल असिस्टेंट प्रोफेसर अनासे बारी ने बताया कि हमारा उद्देश्य था कि हम लोग आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस पर आधारित ऐसा टूल बनाएं जिससे कोरोना का मामला भविष्य में बिगड़ने के बारे में पता लगाया जा सके। हमें उम्मीद है कि जब यह टूल पूरी तरह विकसित हो जाएगा तो इसकी मदद से डॉक्टर इस बात का आकलन कर लेंगे किस मरीज को घर भेजा जा सकता है और किसे अस्पताल में भर्ती करने की जरूरत है। इस अध्ययन में चीन के दो अस्पतालों में आए सार्स कोरोना वायरस के 53 मरीजों के इलाज संबंधी सभी तरह के आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है। इन सभी मरीजों में शुरुआती लक्षण बहुत मामूली पाए, लेकिन एक सप्ताह बाद इनमें से कुछ के लक्षण बेतहाशा बिगड़ने लगे। कुछ को न्यूमोनिया तक हो गया।

इस अध्ययन का एक उद्देश्य यह भी पता करना था कि क्या आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस से यह पता लगाया जा सकता है कि किसी कोरोना पीड़ित को श्वसन तंत्र संबंधी गंभीर समस्या हो सकती है जो जानलेवा हो खासकर बुजुर्गों के मामले में। शोधकर्ताओं ने ऐसे कंप्यूटर विकसित किए जो उपलब्ध कराए गए डाटा के आधार पर निर्णय देते हैं। इनमें जितना ज्यादा डाटा फीड किया जाता है ये इतना ही बेहतर परिणाम देते हैं। शोधकर्ता इस बात से हैरान थे कि कोविड-19 के बारे में जो स्थापित मान्यताएं व लक्षण हैं वे किसी मामले के बिगड़ने के बारे में संकेत देने में उपयोगी साबित नहीं हुए। बुखार, फेफड़ों के एक्सरे, बीमारी का पैटर्न, मरीज की उम्र व लिंग आदि से इस बीमारी के बिगड़ने का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। हां, 60 साल से अधिक उम्र के लोगों के लिए यह बीमारी घातक होने की पूर्व स्थापित धारणा इस अध्ययन में भी सही पाई गई।

इस टूल में पाया गया कि किसी मरीज की तीन चीजों- लिवर एंजाइम एलानाइन एमिनोट्रांसफिरेस (एएलटी), मायलजिया की स्थिति और हीमोग्लोबिन के स्तर से यह सही सही पता किया जा सकता है कि किसकी हालत ज्यादा बिगड़ेगी। इस रिसर्च टीम ने अब तक जितने मामलों के बारे में आशंका जताई उसमें 80 फीसद तक सही मिले।

विश्व में कोरोना वायरस के कहर के बीच थाइलैंड की राजधानी बैंकॉक स्थित वाट माटचांतिकारम बौद्ध मंदिर के भिक्षु चेहरे पर शील्ड पहनकर भिक्षाटन कर रहे हैं। थाइलैंड में कोरोना से संक्रमण के कुल 1500 से अधिक मामले सामने आए हैं और नौ मौतें हुई हैं। एएफपी

कोविड -19 की जांच के लिए ईजाद की तकनीक

रवि पांडेय, वाराणसी

- **बीएचयू के प्रोफेसर और शोध छात्राओं ने एक महीने में तैयार की विधि**
- **इंडस्ट्रियल पार्टनर के साथ मिलकर इसे दिया जाएगा किट का स्वरूप**

दुनियाभर में कोरोना की भयावह स्थिति को देखते हुए बीएचयू स्थित डिपार्टमेंट ऑफ मॉलिक्यूलर एंड ह्यूमन जेनेटिक्स की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. गीता राय और उनकी तीन शोध छात्राओं की टीम ने कोविड-19 के जांच की तकनीक ईजाद की है। उनका दावा है कि चार से छह घंटे में इसकी जांच रिपोर्ट भी सामने आ जाएगी। यह जांच तकनीक अन्य के मुकाबले बेहद किफायती भी है। इससे बेहद कम समय में ज्यादा से ज्यादा लोगों का कोरोना परीक्षण किया जा सकेगा। इस तकनीक को पेटेंट कराने का भी प्रयास किया जा रहा है। वहीं, इंडियन मेडिकल काउंसिल रिसर्च (आइसीएमआर) को इससे अवगत करा दिया गया है और अप्रूवल का इंतजार है।

आरटी-पीसीआर पर आधारित है यह तकनीक : शोध छात्रा डॉली दास, खुशबू प्रिया और हीरल ठक्कर के साथ मिलकर उन्होंने एक नए तरह का आरटी-पीसीआर आधारित नैदानिक परीक्षण की तकनीक तैयार की है, जो कि कोरोना की जांच में समस्त मानकों को पूरा करता है। डॉ. गीता ने बताया कि यह जांच तकनीक वायरल स्ट्रेन में एक अनोखे प्रोटीन सीक्वेंस को टारगेट करती है, जो कि सिर्फ कोविड-19 में ही मौजूद होती है। उन्होंने बताया कि भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा किए गए पूर्व निरीक्षण के मुताबिक, आरटी-पीसीआर (रिवर्स ट्रांसक्रिप्टेज पॉलिमरेज चेन रिएक्शन) सिद्धांत पर आधारित कोई किट नहीं है, जो इस तरह के प्रोटीन सीक्वेंस को टारगेट करता हो।

छोटे लैब और सस्ते मशीन के है मुकाबिल : डॉ. गीता के मुताबिक, कोविड-19 के जांच की यह तकनीक छोटे लैब और सस्ती मशीनों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। सैंपल की जांच के लिए 15-20 लाख रुपये के पीसीआर मशीन के बजाय इसे दो से तीन लाख रुपये वाली सस्ती मशीन के मुकाबिल बनाया गया है। इस तरह से यह जांच विधि किफायती के साथ ही हर शहर में सर्वसुलभ भी होगी। डॉ. गीता ने बताया कि इस तकनीक को किट की शक्ल देने के लिए एक इंडस्ट्रियल पार्टनर की जरूरत होगी। उन्होंने इसकी वैधानिकता व समर्थन के लिए सेंट्रल ड्रग स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन ऑफ इंडिया, सीडीएससीओ और आइसीएमआर से संपर्क किया है। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी की विभीषिका के बीच ही इसे जल्द से जल्द लोगों के बीच लाने का प्रयास हो रहा है।

अंटार्कटिका में पहली बार रिकॉर्ड की गई तेज गर्मी

सिडनी, आइएएनएस : विश्व का सबसे ठंडा महाद्वीप अंटार्कटिका भी बढ़ते वैश्विक तापमान से अछूता नहीं रह गया है। वैज्ञानिकों ने 2019-20 की गर्मियों में अंटार्कटिका में पहली बार रिकॉर्ड गर्मी दर्ज की। ऑस्ट्रेलिया अंटार्कटिका कार्यक्रम के शोधकर्ताओं ने मंगलवार को बताया कि महाद्वीप के केसी स्टेशन पर 9.2 डिग्री सेल्सियस का सबसे अधिक तापमान रिकॉर्ड किया गया।

- **केसी स्टेशन पर रिकॉर्ड 9.2 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया**

यूनिवर्सिटी ऑफ वूलोनगोंग के बायोलॉजिस्ट शेरोन राबिंसन के अनुसार, लगातार तीन दिनों तक अधिकतम और न्यूनतम तापमान के आधार पर रिकॉर्ड गर्मी को वर्गीकृत किया गया है। शोधकर्ताओं ने 23 जनवरी से 26 जनवरी तक स्टेशन में न्यूनतम तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से अधिक रिकॉर्ड किया जबकि अधिकतम तापमान 9.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया। केसी स्टेशन के 31 वर्षों के इतिहास में यह तापमान अधिकतम औसत तापमान से 6.9 डिग्री सेल्सियस अधिक है, जबकि न्यूनतम तापमान 0.2 डिग्री सेल्सियस अधिक है। वैज्ञानिक इस बात से चिंतित हैं कि अंटार्कटिका के पर्यावरण पर अत्यधिक गर्मी का सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का असर हो सकता है। गर्मी के चलते ना केवल मरुस्थलीय क्षेत्रों में अतिरिक्त पानी पहुंचेगा बल्कि काई, लाइकेन, माइक्रोब और बिना मेरुदंड वाले जीवों में वृद्धि होगी।

वायु प्रदूषण से बढ़ सकता है डिमेंशिया का खतरा

शोध अनुसंधान

सेहत के मोर्चे पर वायु प्रदूषण कई तरह की दिक्कतें पैदा कर रहा है। अब एक नए अध्ययन में पाया गया है कि लगातार वायु प्रदूषण में रहने से तंत्रिका तंत्र संबंधी डिमेंशिया रोग का खतरा बढ़ सकता है। इस बीमारी का सबसे ज्यादा जोखिम हृदय रोगियों में पाया गया है। स्वीडन के कैरोलिंस्का इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं के अनुसार, प्रदूषित माहौल में रहने वाले हृदय रोगियों को डिमेंशिया से बचाव के लिए खास देखभाल की जरूरत पड़ सकती है। यह निष्कर्ष लंबे समय तक वायु प्रदूषण की चपेट में रहने और डिमेंशिया के बीच संबंधों के आकलन के आधार पर निकाला गया है। इसमें हृदय रोग की भूमिका पर भी गौर किया गया। इस अध्ययन में औसतन 74 साल की उम्र के करीब तीन हजार लोगों को शामिल किया गया था। इन पर करीब 11 साल तक नजर रखी गई थी। इन प्रतिभागियों में से 364 डिमेंशिया से पीड़ित पाए गए। -प्रेट्र

डायबिटीज रोगियों में हृदय के लिए एक्सरसाइज मददगार

शोधकर्ताओं का कहना है कि निम्न ऊर्जा वाले आहार से भले मदद ना मिले, लेकिन एक्सरसाइज के जरिये टाइप-2 डायबिटीज से पीड़ित रोगी अपने हृदय की कार्यक्षमता में उल्लेखनीय सुधार कर सकते हैं। ब्रिटेन की लीसेस्टर यूनिवर्सिटी के क्लीनिकल रिसर्च फेलो डॉ गौरव गुलसिन ने कहा, 'टाइप-2 डायबिटीज रोगियों की हृदय संरचना और कार्यप्रणाली में बदलाव हो जाता है। नतीजन हार्ट फेल होने का खतरा बढ़ जाता है। हमने इन बदलावों की पुष्टि के लिए नई स्कैनिंग तकनीक का उपयोग किया और उन संभावनाओं पर गौर किया कि क्या एक्सरसाइज या वजन घटाने के जरिये इससे उबरा जा सकता है? हमने इस अध्ययन के माध्यम से पाया कि टाइप-2 डायबिटीज से पीड़ित युवाओं में नियमित एक्सरसाइज से हृदय को चंगा किया जा सकता है।' -एएनआइ

मनरंजन

बैटमैन बनकर अली फजल ने की मदद

अभिनेता अली फजल ने जरूरतमंदों की मदद बड़े दिलचस्प अंदाज में की। अली सुपरहीरो बैटमैन का मुखौटा लगाकर घर से बाहर निकले। साथ ही उन्होंने काले रंग का मास्क भी पहन रखा था। अली खुद कार चलाकर मुंबई के विलेपार्ले इलाके में मदद के हाथ बढ़ाने के लिए निकले। कार में उन्होंने एक वीडियो बनाया, जिसमें फिल्म 'विजयपथ' का गाना, 'जिससे डरते थे, वही बात हो गई...' बज रहा है और अली भी साथ-साथ झूम रहे हैं। इस वीडियो के साथ अली ने बाहर निकलने की वजह बताई। उन्होंने लिखा, बाहर जो मुश्किलें हैं, उन्हें देख नहीं पाया। हमने कुछ चीजें जमा की है, जिसे हम विलेपार्ले भेजेंगे। पेट्रोल पंप के पास कुछ लोग हैं, जिन्हें खाने की बहुत जरूरत है। कोई और भी है तो बताएं। अपना काम करते रहें, वह योगदान कितना बड़ा या छोटा है, इससे फर्क नहीं पड़ता है।' इस पर रिचा चड्ढा ने प्रतिक्रिया करते हुए लिखा, 'ओह मेरा दिल।' संजय दत्त की पत्नी मान्यता दत्त ने लिखा 'बहुत अच्छा काम कर रहे हो'। कई यूजर्स ने भी इस पर मजेदार प्रतिक्रियाएं दीं। एक यूजर ने लिखा कि 'चीन मत जाना नहीं तो वहां लोग खा जाएंगे'। ज्यादातर यूजर्स ने अली से उनकी वेबसीरीज 'मिर्जापुर 2' की रिलीज के बारे में भी पूछा।

पोस्टर पर थे कृष्णा, पर फिल्म में नहीं

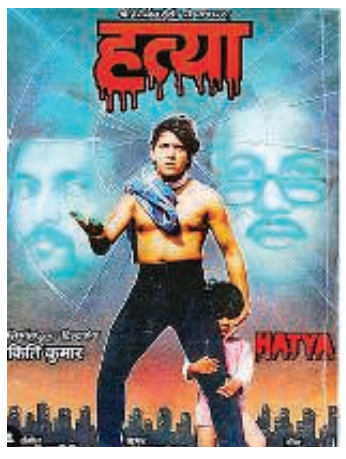

सिनेमा में कई बार कलाकारों के हमशक्लों से भी काम चला लिया जाता है। कुछ ऐसा ही साल 1988 में रिलीज हुई फिल्म 'हत्या' के पोस्टर के फोटोशूट के समय में भी हुआ था। मंगलवार को गोविंदा के भांजे और कॉमेडियन कृष्णा अभिषेक ने सोशल मीडिया पर फिल्म 'हत्या' का एक पोस्टर साझा किया। इस पोस्टर में गोविंदा बीच में खड़े हैं, जबकि दोनों किनारों पर अनुपम खेर और राज किरण की तस्वीरें हैं। पोस्टर में गोविंदा की टांग पकड़े एक बच्चा उनके पीछे खड़ा है। इस तस्वीर को साझा करते हुए कृष्णा ने बताया, 'आज यह तस्वीर मिली। क्या आप लोग जानते हैं कि इस तस्वीर में जिस बच्चे ने टांग पकड़ी है, वह मैं हूं। मैं इस फिल्म का हिस्सा नहीं था। फिल्म में काम करने वाले बाल कलाकार के पास समय नहीं था, इसलिए फिल्म के पोस्टर के लिए मेरा फोटोशूट किया गया। मेरा पहला काम.. हत्या।' कीर्ति कुमार के निर्देशन में बनी फिल्म 'हत्या' में गोविंदा के साथ अनुपम खेर, नीलम कोठारी, जॉनी लीवर और राज किरण मुख्य भूमिका में थे।

बचपन में अर्जुन का बेड भी था कार जैसा

मंगलवार को अर्जुन कपूर ने अपनी बचपन की एक तस्वीर साझा की। इस तस्वीर में वह अपनी बहन अंशुला कपूर के साथ हैं। अंशुला अर्जुन की गोद में बैठी हैं, और पीछे एक अलमारी है, जिस पर कार बनी हुई है। इस तस्वीर के साथ अर्जुन ने लिखा, 'हम 1990 से ही एकांतवास में हैं। हां, मेरे पीछे अलमारी पर एक कार की पेंटिंग बनी हुई है, लेकिन यह मत पूछिए कि क्यों?' अर्जुन के इस 'क्यों' का जवाब उनके चाचा संजय कपूर ने उनकी तस्वीर पर टिप्पणी करते हुए दिया। उन्होंने लिखा, 'ऐसा इसलिए, क्योंकि तुम्हें बचपन में कार पसंद थी। यहां तक कि तुम्हारा बेड भी कार जैसा था। अर्जुन की यह तस्वीर टाइगर श्रॉफ और कास्टिंग डायरेक्टर मुकेश छाबड़ा जैसी कई हस्तियों को पसंद आई। उन्होंने भी इस पर प्रतिक्रियाएं दीं। अर्जुन आखिरी बार फिल्म 'पानीपत' में नजर आए थे। शूटिंग बंद होने से पहले वह रकुलप्रीत सिंह के साथ एक अनाम फिल्म की शूटिंग कर रहे थे।

कुणाल कामरा के मजाक पर चेतन भगत की हाजिरजवाबी

अपनी हाजिरजवाबी के लिए प्रसिद्ध लेखक चेतन भगत ने मंगलवार को स्टैंडअप कॉमेडियन कुणाल कामरा के मजाक का सटीक जवाब दिया। दरअसल, कुछ दिनों पहले चेतन ने सोशल मीडिया पर लोगों से पूछा था कि एक से दस के पैमाने में आप इस समय कितना बोर हुए हैं? इस पर एक यूजर ने टिप्पणी की कि 'मेरी बोरिंग का पैमाना 11 है, इसके बावजूद मैं आपकी किताबें नहीं पढ़ूंगी।' इस मामले में कुणाल कामरा भी कूद गए। चेतन की पोस्ट और यूजर की टिप्पणी की स्क्रीनशॉट साझा करते हुए कुणाल ने चेतन को टैग करते हुए लिखा, 'इतनी ज्यादा और बुरी तरह से तो मेरी भी बेइज्जती नहीं हुई है।' इसके बाद चेतन कहां चुप रहने वाले थे। उन्होंने लिखा कि 'भाई, बेइज्जती कराने के लिए पहले कुछ बनना पड़ता है'। कुणाल ने फिर से चेतन की टिप्पणी का जवाब दिया और लिखा कि 'सही करियर का चुनाव करना ही कुछ बनना होता है। पता नहीं क्यों पर आप इस संदर्भ में सही हैं। कृपया इसे प्रशंसा के तौर पर न लें।' चेतन द्वारा लिखी किताबों पर 'हॉफ गर्लफ्रेंड' और '2 स्टेट्स' फिल्में बनाई जा चुकी हैं।

बॉलीवुड अपडेट

अजय देवगन ने बताया- स्वस्थ हैं काजोल और न्यासा

अजय देवगन ने उन अफवाहों पर विराम लगा दिया, जो पत्नी काजोल और बेटी न्यासा के स्वास्थ्य को लेकर उठ रही थीं। अफवाहें थीं कि सिंगापुर से लौटने के बाद काजोल और न्यासा की तबीयत खराब है। अजय ने ट्वीट करके बताया है कि काजोल और न्यासा की तबीयत ठीक है। उन्होंने लिखा, 'चिंता करने के लिए आप सबका धन्यवाद, काजोल और न्यासा पूरी तरह ठीक हैं, उनकी सेहत को लेकर उड़ रही अफवाहें पूरी तरह से निराधार और गलत हैं।' दरअसल, लॉकडाउन से कुछ दिन पहले ही न्यासा सिंगापुर से लौटी थीं। वह सिंगापुर में पढ़ती हैं। कोरोना वायरस की वजह से वहां के स्कूल-कॉलेज बंद होने पर काजोल खुद न्यासा को लेने सिंगापुर गई थीं। दोनों अपने घर पर क्वारंटाइन में हैं। क्वारंटाइन में रहते हुए काजोल अपनी कई तस्वीरें साझा करते रहती हैं।

मनोज ने रिलीज किया 'मालिक संभाल लेना'

इन दिनों कलाकार विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्म्स के माध्यम से लोगों में सकारात्मकता बनाए रखने का पूरा प्रयास कर रहे हैं। इसी क्रम में गीतकार मनोज मुंतशिर ने मंगलवार को यूट्यूब पर अपना नया गाना 'मालिक संभाल लेना' रिलीज किया। मनोज के अनुसार, यह गाना एक प्रार्थना है, जिसे उन्होंने लोगों में उम्मीद और सकारात्मकता बनाए रखने के लिए लिखा है। रोचक कोहली ने अपनी आवाज में गाने के साथ-साथ इस गाने को संगीतबद्ध भी किया है। खास बात है कि इस गाने से जुड़े सभी कलाकारों ने लॉकडाउन पीरियड में बिना किसी स्टूडियो के घर बैठकर यह गाना तैयार किया है। दो मिनट 55 सेकेंड के इस गाने की रिलीज के बारे में जानकारी सोशल मीडिया पर साझा करते हुए मनोज ने लिखा, 'अब यह प्रार्थना आपके हवाले।' मनोज मुंतशिर 'गलियां', 'तेरे संग यारा' और 'तेरी मिट्टी' जैसे सुपरहिट गानों के गीतकार हैं। इसके अलावा उन्होंने 'कबीर सिंह', 'बादशाहो' और 'रुस्तम' जैसी कई फिल्मों के गाने लिखे हैं।

इस वक्त एक योद्धा की भूमिका में हैं मेरे बेटे-बहू : गजेंद्र चौहान

महाभारत में युधिष्ठिर की भूमिका निभाने वाले अभिनेता गजेंद्र चौहान लॉकडाउन से पहले अपनी फिल्म 'महापुरुष' की शूटिंग कर रहे थे। उनकी यह फिल्म जैन संत विद्या सागर जी महाराज की जीवनी पर आधारित हैं। वह उनके पिता का रोल कर रहे हैं। 18 मार्च को गजेंद्र जयपुर से लौटे थे। होम क्वारंटाइन को लेकर वह कहते हैं, 'यह हमारे देश के प्रधानमंत्री का आदेश है, मैं घर में रहना अपनी जिम्मेदारी मानता हूं।' वह बताते हैं कि उनके बेटे मुंबई के सायन अस्पताल और बहू हिंदूजा अस्पताल में डॉक्टर हैं। मुझे गर्व है कि वे योद्धा की तरह सबसे आगे आकर इस मुश्किल से लड़ रहे हैं। मैंने दोनों के चेहरे पर किसी तरह की शिकन नहीं देखी। दोनों बहादुर बच्चे हैं। पुलिस और डॉक्टर्स की तरह मीडियाकर्मी भी जिस तरह की जागरूकता फैला रहे हैं, उसके लिए मैं उन्हें सलाम करता हूं। गजेंद्र बताते हैं कि वह अस्पताल की परिस्थितियों से वाकिफ हैं, क्योंकि वह शुरुआती दौर के चंद सीटी स्कैन स्पेशलिस्ट में शामिल थे। वह बताते हैं कि मैं खुद पैरामेडिकल हूं। दिल्ली के ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट मेडिकल साइंस से कोर्स किया है। एम्स में कई नामचीन लोगों का सीटी स्कैन कर चुका हूं। अस्पताल के भीतर की ड्यूटी कितनी अहम होती है, इससे वाकिफ हूं। कोरोना वायरस से लड़ाई को लेकर गजेंद्र कहते हैं, 'यह दौर देखकर वर्ष 1971 का युद्ध याद आ जाता है। शाम को खिड़की से रोशनी बाहर न जाए, इसलिए पूरा ब्लैकआउट कर दिया जाता था। हिंदुस्तानियां ने बड़ी लड़ाइयां लड़ी हैं। इसमें भी जीतेंगे।'

'फोर मोर शॉट्स!' के दूसरे सीजन का ट्रेलर रिलीज

जहां एक ओर सिनेमा घर बंद होने की वजह से फिल्में रिलीज नहीं हो पा रही हैं, तो वहीं इस बीच वेब पर लगातार नया कंटेंट आ रहा है। अमेजॉन प्राइम वीडियो पर 'फोर मोर शॉट्स प्लीज!' शो के दूसरे सीजन का ट्रेलर मंगलवार को रिलीज किया गया। 17 अप्रैल से दूसरा सीजन स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध होगा। शो में शायोनी गुप्ता, कीर्ति कुल्हारी, बानी जे, मानवी गगरू मुख्य भमिका में हैं। दूसरे सीजन का निर्देशन नुपुर अस्थाना ने किया है। शो में इस्तांबुल में इन चारों किरदारों का रीयूनियन दिखया जाएगा।

लॉकडाउन में सनी लियोनी व डेनियल ने किया बच्चों के लिए डांस

पिछले कई दिनों से ज्यादातर लोग अपने घरों में हैं। सनी लियोनी भी अपने पति और तीन बच्चों के साथ घर में समय बिता रही हैं। लेकिन वह कुछ देर के लिए परिवार के साथ अपनी बिल्डिंग में नीचे उतरीं। उन्होंने एक वीडियो साझा किया है, जिसमें सनी और उनके पति डेनियल बच्चों को ट्रॉली में लेकर उतरे हैं। अपने बच्चों का मनोरंजन करने के लिए वह डांस भी करने लगते हैं। सनी ने लिखा कि हम बच्चों की ऊर्जा को उच्च स्तर पर बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं। बच्चे कई दिनों से बिल्डिंग में कैद हैं। मैं और डेनियल हर रोज अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश कर रहे हैं। डेनियल का डांस सबसे अच्छा है।